

# अभिनाव इमरोज़

Abhinav Imroz



ISSN 2321-1105

वर्ष-14, अंक-02, फरवरी 2025

[www.abhinavimroz.com](http://www.abhinavimroz.com)



फोटोग्राफी पृष्ठ 1 और 3 : मृगांक शेखर, उम्र-16  
अहमदाबाद, मो. 8005910528



मित्रो, आजकल सरकारी पत्रिकाओं का हाल किसी से छिपा नहीं है। बरसों-बरस स्थाई सम्पादकों के बिना पत्रिकाएँ या तो निकली ही नहीं या फिर किसी चहेते को एक अंक की ज़िम्मेदारी सौंप कर बिना किसी नीति, दृष्टि और प्रासंगिकता के उसके मनचाहे विषय और लेखकों से अच्छी-बुरी सामग्री एकत्र कर छमाही पत्रिकाओं के एकाध महीने में ही दो-तीन अंक एकसाथ निकाल कर खाना पूरी कर दी जाती है।

ऐसे में व्यक्तिगत संसाधनों और निष्ठा के बल पर निकलने वाली तथाकथित "छोटी" पत्रिकाओं के दृष्टि सम्पन्न स्तरीय सामग्री वाले अंक बहुत राहत पहुँचाते हैं कि सार्थक और अच्छे काम के लिए पैसा एकमात्र और बुनियादी ज़रूरत नहीं होता। इस संदर्भ में तीन पत्रिकाओं के नए अंक हाल ही में देखने को मिले, जिनकी ज़्यादातर सामग्री केवल पठनीय ही नहीं संग्रहणीय भी है। इस कड़ी में पहली पत्रिका है देवेन्द्र कुमार बहल की चौदह वर्षों से अकेले दम निकल रही मासिकपत्रिका **'अभिनव इमरोज'**। इसका जनवरी, 2025 का नया अंक कल ही प्राप्त हुआ। देख कर सुखद आश्चर्य हुआ कि ये अंक "मोहन राकेश जन्म शताब्दी विशेषांक" है, जिसका सम्पादन हिन्दी की सुविख्यात नाटककार-कथाकार डॉ. मीरा कांत द्वारा अतिथि सम्पादक के रूप में किया गया है। आगे-पीछे के बाहर-अंदर के

कवर पृष्ठ मोहन राकेश के व्यक्तिगत जीवन और उनके नाटकों के नए-पुराने प्रदर्शनों के श्वेत-श्याम चित्रों के शानदार कोलाज के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। पूरे अंक में सिवाय मोहन राकेश से सम्बद्ध (सिर्फ एक लेख के अपवाद को छोड़कर) पूरी-की पूरी सामग्री एकदम नई और ज़्यादातर महत्वपूर्ण है। आषाढ का एक दिन पर सुप्रसिद्ध नाटककार राजेश कुमार का लेख "सत्ता और संस्कृति का अन्तर्द्वन्द्व" इस अंक की उपलब्धि कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त, मृत्युंजय प्रभाकर (सबसे बड़ा सवाल) प्रो. आशा (मोहन राकेश के नाटकों की भाषा), राकेश के कथा-लोक पर हरियश राय, कुसुम लता, राकेश की डायरी पर देवेश और राकेश के बाल-साहित्य पर माधवीकुमार के लेख भी महत्वपूर्ण हैं। अंक के अंत में मनोज मोहन द्वारा लिया गया मेरा एक साक्षात्कार भी इस अंक में है। मीरा कांत का सम्पादकीय छोटा किन्तु उल्लेखनीय है।

इसी क्रम में दूसरी महत्वपूर्ण पत्रिका है—**'रस रंग'**। कोलकाता की चर्चित नाट्य-संस्था लिटिल थैस्पियन की यह रंग-पत्रिका इस संस्था और पत्रिका के संस्थापक-सम्पादक, नाटककार, अभिनेता, निर्देशक एस.एम. अज़हर आलम के कोरोना के दौरान असामयिक और आकस्मिक मृत्यु हो जाने के बाद उनकी धर्मपत्नी और सहकर्मी सुश्री उमा झुनझुनवाला और उनकी बेटी गुंजन अज़हर ने विरल साहस के साथ संस्था और अर्ध-वार्षिक द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेज़ी) रंग-पत्रिका का कार्यभार सम्भाला है और संस्था की गतिविधियों का रचनात्मक विस्तार भी किया है।

208 पृष्ठों का पत्रिका का ये पहला अंक बेहद महत्वाकांक्षी दिखाई देता है। सम्पादक-मंडल और लेखकों का बहुमूल्य सहयोग पत्रिका को मिला है। तथाकथित शोध-लेखों और प्राध्यापकीय समीक्षकों को छोड़ दें तो रंगकर्म से जुड़े समीक्षकों के आलेख विशेष ध्यानाकर्षक हैं। अनीस आजमी के संस्मरणात्क आलेख "अज़हर मेरा दोस्त" के अतिरिक्त यहाँ भी नाटककार राजेश कुमार का दलित रंगमंच पर लेख, हिमांशु बी. जोशी, अनिल रंजन भौमिक, संगम पाण्डेय, रवीन्द्र त्रिपाठी, कविराज लईक, आनंद लाल, सत्यव्रत राउत, महमूद फ़ारूकी, मो. काजिम, निलॉय रॉय निर्विवाद रूप से बहुत अच्छे और मौलिक आलेख हैं। नाट्य समीक्षाएँ ज़्यादातर पहले की पढ़ी हुई हैं और ठीक ही है।

एकमात्र चिन्ता यही होती है कि इतना बड़ा अंक Rs. 150 में कब तक और कैसे निकलेगा। बहरहाल, ये बहुत अच्छी पहल है। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ इसके लिए है।

इसी क्रम में तीसरी पत्रिका है—**'नाद रंग'**। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, ये पत्रिका रंकरम के अतिरिक्त, संगीत और कलाओं को भी अपने में समेटे है। ये लखनऊ से प्रकाशित होती है और इसके सम्पादक हैं—आलोक पराड़कर।

सम्पादकीय गम्भीर है और मूल्यांकन के मूल्याँ और उनकी कसौटियों के विश्लेषण पर केन्द्रित है। आश्चर्यजनक बात ये है कि पहली दोनों पत्रिकाओं की तरह इसका भी अत्यंत मौलिक और सारगर्भित लेख स्वदेश दीपक के नाटक "कोर्टमार्शल" पर केन्द्रित राजेश कुमार का ही है। अलखनंदन, इब्राहिम अल्काजी, मनोज कुमार मिश्र का हरकत की भाषा के अतिरिक्त पं. जसराज, पं. बिज्जू महाराज और प्रभाकर कोलते सम्बन्धी लेख संक्षिप्त किन्तु ठीक-ठाक ही हैं।

महत्वपूर्ण प्रश्न ये है अपना घर फूँक कर ये तमाशा कोई कब तक देख या दिखा सकता है। इन्हें केवल प्रशंसनीय प्रयास कहने मात्र से काम नहीं चलेगा। ज़रूरी ये है कि ऐसी पत्रिकाओं की सार्थकता और प्रासंगिकता की परीक्षा करने के बाद इन्हें वित्तीय सहायता मुहय्या कराएँ और हम-आप जैसे ऐसी गम्भीर पत्रिकाओं के पाठक इनके सदस्य बन कर इन्हें ये काम करते रहने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करें।



जयदेव तनेजा, नयी दिल्ली, मो. 9899547647



साभार: 'धूप के साये में', कुलदीप सलिल,  
नई दिल्ली, मो. 98100 52245

बुझी चिंगारियाँ सुलगा रहे हैं,  
हम इस माहौल को गरमा रहे हैं ।

जिए जिनके सहारे आज तक हम,  
वही कुछ ख़्वाब अब तड़पा रहे हैं ।

यहाँ पर ही बरस जा, दूर मत जा,  
यहाँ भी फूल कुछ मुरझा रहे हैं ।

कोई रास्ता तो हो अन्धी गली से  
हज़ारों लोग धिरते जा रहे हैं ।

नहीं होता गुज़रना ठीक हद से,  
हमें वो, दिल को हम, समझा रहे हैं ।

वही दिल है, जिगर वो ही, वही हम,  
वही मसले अभी सुलझा रहे हैं ।

बुझी वो एक चिंगारी सलिल क्या,  
सितारे हैं कि बुझते जा रहे हैं ।

प्रकाशन कार्यालय:

बी 3/3223 वसंत कुंज,

नई दिल्ली.110070

दूरभाष : 09910497972

e-mail: abhinavimroz@gmail.com

dk.bahl1942@gmail.com,

facebook: facebook.com/abhinavimroz

website : abhinavimroz.page

Paytm



PhonePe



PhonePe



## इस अंक में

प्रोफेसर आर. एस. ठाकुर	कविता	4
देवेन्द्र कुमार बहल	संपादकीय	5
डॉ आशुतोष गुलेरी 'निःशब्द'	आलेख	6
डॉ. राजेश्वर प्रसाद सिंह	कहानी	9
डॉ. मेधावी जैन	यात्रा	12
श्यामल बिहारी महतो	कहानी	14
डॉ. जसप्रीत कौर फ़लक	कविताएँ	18
रेखा शाह आरबी	कहानी	19
रेखा शाह आरबी	कविता	22
डॉ. चेतना उपाध्याय	कविताएँ	23
डॉ. सपना दलवी	कविताएँ	23
अरविंद कुमारसंभव	आलेख	24
कुमुद वर्मा	कविता	26
डॉ. मुकेश गर्ग असीमित	व्यंग्य	27
शिल्पा भटनागर	संस्मरण	29
डॉ. मधुबाला शुक्ल	कहानी	31
ललिता वर्मा	कहानी	33
दीपमाला	पत्र	34
रश्मि रमानी	कविता	35
सेवा सदन प्रसाद	कहानी	36
डॉ. सविता चड्ढा	कहानी	38
सागर सियालकोटी	गज़ल	42
डॉ. एस कश्मीरी	लघु कथा	43
धनसिंह खोबा 'सुधाकर'	दोहे	44

### Bank Account Details

डी. के. बहल, A/c No. 520101222134565

युनियन बैंक, वसंत कुंज, नई दिल्ली 110070

IFSC Code : UBIN0905381

संपादन-संचालन अवैतनिक/रचनाओं की जिम्मेदारी लेखकों की प्रकाशित लेखादि में अभिव्यक्त विचारों से प्रकाशक-सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवादों के लिए, न्यायालय क्षेत्र दिल्ली।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक एवं प्रकाशक श्री देवेन्द्र कुमार बहल की ओर से डिजिटल प्रिंटिंग प्रा. लि., 291-डी, सेक्टर-6, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा से छपवा कर बी-3/3223 वसंत कुंज, नई दिल्ली - 110070 से प्रकाशित। संपादक, देवेन्द्र कुमार बहल



## चिंतन

**भूत-भौतिक, अधिभूत-आधिभौतिक, अध्यात्म-आध्यात्मिक ।**

सृष्टि में ये तीन ही “अस्ति/अस्तित्व हैं । अस्ति ही सृष्टि का कारण/कारक /बीज है जिसे” कारणं कारणानां /कारणों का भी कारण कहा गया है ।

भूत/अभिभूत समस्त दृश्य और अनुभवगम्य जगत् है । इसका ही एक रूप-क्रम उद्भव/जन्म, जरा और मरण है ।

प्राण/पंच प्राणवायु से जिनकी पहचान है वे ही प्राणी/जलचर, थलचर, नभचर, जरायुज कहे गये हैं । इन्हें जानने/पहचानने में की शक्ति केवल मनुष्य को है । मनुष्य को छोड़कर अन्य प्राणी सुख दुःख के भोक्ता हैं । मानव जीवन का महत्व सुख दुःख का भोक्ता होने तक नहीं है । इसका महत्व इसे जानना भी है । उपरोक्त प्राणि समूहों के दुःख सुख समान हैं । चूंकि उन्हें सबको भोगना ही पड़ता है इसी कारण इसे "महागद " कहा गया है । यही भवरोग भी है । जन्म जन्मान्तर के क्रम चक्र में कभी-कभी हर प्राणी को एक बार मानव जन्म ईश्वरीय सुकृपा से मिलता है ।

**कबहूँ कि करी करुना नर देही ।**

**देत ईस बिनु हेतु सनेही ।। मानस**

उस करुणासिन्धु परमेश्वर महाशक्ति की खोज और पहचान मानव मनीषा की अद्भुत् उपलब्धि है । भारत के साधकों ने इसके सुफल समस्त मानवजाति के कल्याण केलिए सुलभ कराये हैं । हमें उनकी कृतियों से उनका मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए । बिहार/दरभंगा के लहेरियासराय निवासी परमधामवासी पंडित राम नंदन मिश्र का जीव्यक्तित्व, कृतित्व और आध्यात्मिक साधना केलिए समर्पित समस्त जीवन आज विश्व मानवता की अमूल्य अक्षर धरोहर है । साधना मार्ग के यात्रियों /जिज्ञासुओं को इसका लाभ होना चाहिए । इसके लिए आत्म कृपा, शास्त्र कृपा, गुरु कृपा और ईश कृपा की प्रार्थना को जानना चाहिए । यही परमार्थ प्राप्ति का यत्न है ।

—शुभैषी संतजी प्रोफेसर आर एस ठाकुर, मोतिहारी, पूर्वी चंपारण, बिहार

मो. 9934675401



जीवन जीने की कला, कैसे पता चले कि किसी व्यक्ति का जीवन कलात्मक है या नहीं ? इस प्रश्न का उत्तर सब अपने-अपने ढंग से देंगे। अगर आप किसी आदर्श-विशेष में गहरी आस्था रखते हैं तो आप उत्तर देंगे: जीवन कला का अर्थ है देशप्रेम, समाज-सेवा, अहिंसा, करुणा, प्रभु-भक्ति इत्यादि। किन्तु ऐसे आदर्श-आधारित जीवन को 'आदर्शजीवन' कहना अधिक संगत होगा।

‘कला का सम्बंध मूलतः सौन्दर्य से है। समझा जा सकता है कि जीवन कला का सम्बन्ध कार्य से इतना नहीं है जितना उसे करने के ढंग से है। आप कोई भी काम करें किसी भी आदर्श को मानें या न मानें। यदि आप की जीवन शैली सुन्दर है तो आप का जीवन कलात्मक है। खूबसूरती या बदसूरती हरकतों में नहीं। अन्दाजे हरकत में होती है। सुन्दर जीवन शैली का अर्थ है कि चिन्ता में नहीं चिन्तन में जीना। संसार में रहना किन्तु संसार को अपने में न रहने देना- नौका जल में चले, किन्तु जल नौका में न भरे।

समस्याएं तो उठेंगी - दानिशमंदी तो इस कला में है कि आप खुद उनमें उलझे बिना समाधान निकाल लें। तनाव और अंतर्द्वंद्व में रहेंगे तो सुलझाना तो क्या और ज़्यादा उलझ जाएंगे। और नकारात्मकता का शिकार हो जाने की शंका बनी रहेगी।

अतः कलात्मक जीवन का लक्षण है: कि बिना तनाव के जीना, ईर्ष्या, घृणा द्वेष इत्यादि नकारात्मक भावनाओं से मुक्त रह कर जीना। काम कोई भी हो रसपूर्ण तन्मयता से करते हुए आनन्दपूर्वक जीना।

**मत हो विरक्त जीवन से !**

**अनुरक्त न हो जीवन पर ।।**

सुमित्रानन्दन पंत

## हम क्या खाते हैं?



डॉ आशुतोष गुलेरी 'निःशब्द'

भारतीय संस्कृति ज्ञान की अद्भुत प्रयोगशाला है। कथा-कहानियों के माध्यम से शिक्षाप्रद व्यावहारिक ज्ञान को संजोने का कार्य सभी सभ्यताओं में हुआ। किन्तु प्रतीकों, मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों एवं प्रायोगिकता को केंद्र में रख कर दैनिक व्यवहार में उपयोगी भारतीय मनीषियों ने संजोने का प्रयास किया, उसे महान कार्य कहना अतिशयोक्ति न होगी।

सनातन सभ्यता में शारीरिक एवं मानसिक रूप का आधार हमारे भोजन को बताया गया। जैसा हम भोजन करेंगे वैसी ही हमारी प्रकृति होगी। सात्विक भोजन ग्रहण करने पर हमारा व्यवहार सात्विक होगा। तामसिक भोजन का उपयोग हमें जड़ता की ओर ले जाएगा। इसी सनातन प्रारूप को आधार बनाकर अन्य कई स्वतंत्र विचारों को पोषण मिला, जैसे: जीवों पर हिंसा करने से मांस प्राप्त होता है, अतः मांसाहार करने वाले की प्रवृत्ति हिंसक हो जाती है। इस विचार की आधारशिला पर अहिंसा के पैरोकार धर्मों का उद्भव हुआ।

सनातन सभ्यता ने स्वास्थ्य के परीक्षण की दृष्टि से भी भोजन की प्रकृति पर विशेष बल दिया। आयुर्वेद के अनुसार यह शरीर तीन दोषों -वात, पित्त, कफ- की संघटना है। दोषों की प्रकृति के अनुकूल अथवा प्रतिकूल भोजन से हमारे शरीर की स्थिति निर्धारित होती है। शरीर को निरामय बनाने के लिए संतुलित आहार की आवश्यकता के विचार पर स्वास्थ्य का एक सम्पूर्ण विज्ञान निर्मित हो गया।

एक विचार से दूसरा विचार पैदा होता है। चलंत परिदृश्य में एक सनातन विचार स्मरण हो आया: “हम वही भोगते हैं जो हम कमाते हैं।” यहाँ भोगने का अभिप्राय भोजन के सन्दर्भ में ही देखा जाना चाहिए। भोग शब्द ‘भुज्’ धातु से उत्पन्न हुआ जिसका अर्थ ‘ग्रहण करना’ होता है। ‘भोजन’ ग्रहण करने योग्य पदार्थ है। इस

सन्दर्भ में अब उपरोक्त सनातनी विचार को पुनः पढ़ कर देखिए, “हम वही खाते (भोगते) हैं जो हम कमाते हैं।”

‘हम वही भोगते हैं जो कमाते हैं’ जैसे वक्तव्य ने भोजन को महत्वहीन बना दिया। इस विचार के परिदृश्य में ‘भोगना (भोजन)’ गौण तथा भोगने से पहले ‘कमाना’ मुख्य कर्म सिद्ध हुआ। खाने से अधिक ‘अच्छी कमाई’ का विचार सनातन पद्धति की आदर्श विचारधारा कहें तो अनर्थ न माना जाए। क्योंकि, ‘भोजन’ शरीर के अनुपालन की दृष्टि से जीवन का महत्त्वपूर्ण घटक अवश्य है, किन्तु ‘भोगना’ भोजन की तुलना में बहुत बड़ा शब्द हो जाता है। ईश्वर को ‘भोग’ लगाया जाता है। हम जो कुछ खाद्य सामग्री ईश्वर के निमित्त अर्पित करते हैं, उसे ‘भोजन खिलाने’ की जगह हम ‘भोग लगाना’ कहते हैं। क्योंकि भोग शब्द में भुगतान भी समाहित है और आदर भी।

कितनी गहन बात हो गयी यह। ईश्वर भी वही सब भोगेंगे जैसा कमा कर हम उन्हें अर्पित करेंगे। इसलिए कमाई के माध्यम पर सदैव ध्यान केंद्रित रहे। क्योंकि हम वही खाते हैं जो हम कमाते हैं। ऐसे में प्रश्न उपस्थित होता है: “क्या खाते हैं हम?”

सनातन महत्त्व के एक बहुत पुराने ग्रन्थ में ‘भुज्’ अर्थात् खाने के सन्दर्भ में एक रोचक प्रसंग पढ़ने में आता है।

किसी राज्य में एक प्रबुद्ध ब्राह्मण रहता था। एक दिन बहुत दुखी हृदय लेकर वह राजा के दरबार पहुँचा। सामने सिंहासन पर विराजमान राजा को समक्ष देखकर उसके हृदय की वेदना फूट पड़ी: “महाराज! मैं बहुत पीड़ा में हूँ। मेरा जीवन गंभीर आपदा से ग्रसित है, आप मेरी व्यथा सुनें। क्योंकि इस संसार में दुखी हृदय को राजा के अतिरिक्त कोई और सांत्वना और समाधान प्रदान नहीं कर सकता।

“एक रात जब मैं गहरी नींद सो रहा था कोई मेरी पत्नी को मेरे घर से चुरा ले गया। सर्वाधिक चिंतित एवं आश्चर्यचकित करने वाली बात यह कि इस बीच घर के सभी द्वार बंद थे। न कोई द्वार तोड़ा गया, न ही कोई सेंध लगी।” ब्राह्मण ने गुहार लगाई।

ब्राह्मण की बात सुन कर राजा कुछ देर के लिए विचारमग्न हो गया। फिर बोला: “ब्राह्मण देवता! क्या आपको किसी पर संशय है? कहाँ आपकी पत्नी को चुरा कर ले जाया गया है, क्या आप उस स्थान से परिचित हैं? कहाँ से मुझे उन्हें लिवाना होगा? मैं किससे युद्ध करूँ? कुछ तो प्रकाश डालने की अनुकम्पा करें।”

“जब मैं घर पर सो रहा था, मेरे घर के सभी द्वार बंद थे। फिर भी कोई मेरी पत्नी को चुरा ले गया - मैं आपको पहले ही सब बता चुका हूँ।” ब्राह्मण ने उत्तर दिया।

राजा ब्राह्मण का उत्तर सुन कर असमंजस में पड़ गया, बोला: “मैंने आपकी पत्नी को पहले कभी देखा नहीं। कैसी दिखती हैं वे? उनका चेहरा-मोहरा कैसा है? क्या आयु है उनकी? मुझे विस्तार से विवरण दें ताकि उनकी पहचान करने में मुझे आसानी हो।”

राजा के प्रश्नों को सुन कर ब्राह्मण अपनी पत्नी का विवरण बताने लगा: “महाराज! उसकी आंखें तीखी तथा देहयष्टि बहुत लंबी है। भुजाएँ छोटी हैं। मुंह शुष्क, मानो हड्डियों का ढांचा। उसका पेट लटका हुआ, नितंब सूखे तथा उर प्रदेश बहुत छोटा है। वह देखने में बहुत अप्रिय है महाराज, इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन उसमें उसका कोई दोष नहीं, मैं केवल आपको उसका परिचय दे रहा हूँ। उसका कंठ बहुत कर्कश है तथा व्यवहार में वह बहुत रूखी है। यही उसका परिचय है कि वह दिखने में भयंकर है तथा उसका यौवन बीत चुका है। मैंने आपसे सब सच बता दिया।”

ब्राह्मण की बातें सुन कर राजा सोच में पड़ गया। कुछ देर विमर्श करने के उपरांत राजा ने कहा: “भूदेव! आपके दुखों का अंत हुआ। मैं आपके लिए एक नई पत्नी का प्रबंध करता हूँ। कहा भी है ‘सुंदरता के अभाव में कदाचित् बेहतर चरित्र का निर्माण होता है, किन्तु जिसके पास सौंदर्य और चरित्र दोनों ही न हों तुरंत उसका त्याग कर देना चाहिए।”

राजा का निर्णय सुन कर ब्राह्मण असमंजस में पड़ गया, बोला: “महाराज! पत्नी के अभाव में मैं स्वधर्म का अनुपालन नहीं कर पा रहा, क्योंकि पत्नी के बिना मेरे यज्ञ कार्य सम्पन्न नहीं होते। अब यह मेरे पतन का एक कारण और हो गया। उस पेट में मेरे कुल का दीपक पल रहा है, आप मुझ पर कृपा करें और मेरी पत्नी मुझे लाकर दें महाराज।”

ब्राह्मण का आर्तनाद सुन कर राजा ने खोजबीन आरम्भ की। बहुत प्रयास के बाद पता पड़ा, कोई बालक नाम का आदमखोर निशाचर ब्राह्मण की पत्नी को उठा ले गया है। राजा उस निशाचर

के निवास पर पहुंचा। वहाँ उसने एक कोने में ठीक वैसी ही महिला को बंधा हुआ पाया जैसा विवरण पंडित ने दिया था।

राजा को समक्ष देखकर पंडिताइन ने गुहार लगाई: “महाराज मेरी रक्षा कीजिए। यह आदमखोर निशाचर मुझे मेरे घर से उठाकर यहाँ गहन वन में ले आया है। किंतु यहाँ लाने के उपरांत उसने मेरा परित्याग कर दिया। मैं यह जानने में असमर्थ हूँ कि क्यों यह न तो मुझे खाता है और न ही मेरा शारीरिक उपभोग करता है। पता नहीं क्यों यह न मेरी देह उपयोग करता है न दैहिक उपभोग करके संतुष्ट होना चाहता है।”

महिला की बात सुन कर राजा ने उस ओर देखा जहाँ निशाचर अपने चारणों के बीच शान से बैठा था। राजा ने उस से सवाल लिया: “क्यों रे निशाचर, किस कारण तू इस पंडिताइन को उसके घर से उठा ले आया? यह दिखने में कोई रूप सुंदरी नहीं, निश्चित है तू उपभोग के लिए तो इसे लाया नहीं। यदि इसे खा जाने के लिए तूने इसे उठाया, फिर अब तक इसे खाया क्यों नहीं? मेरे प्रश्नों के उत्तर दे।”

राजा के प्रश्नों को सुन कर निशाचर गंभीर हो गया। आँखों को दूर शून्य में टिका कर उसने राजा से कहा: “हम मनुष्यों को नहीं खाते, मानव भक्षण करने वाले दैत्य दूसरे होते हैं महाराज। हम मनुष्य के अच्छे कर्मों का फल खाने वाले दैत्य हैं।

“मैं आपको अच्छे कर्मों के फल के बारे में बताता हूँ। उसी को खा कर मैं इस भयानक दैत्य योनि में उत्पन्न हुआ। जब हम अपमानित किए जाते हैं, तब हम मनुष्यों का स्वभाव खा जाते हैं। किन्तु हम उनका मांस नहीं खाते। जब हम मनुष्यों का धैर्य खा चुकते हैं तब उनमें क्रोध की उत्पत्ति होती है। किंतु जब हम उनका बुरा स्वभाव खा जाते हैं तो मनुष्यों में सदुणों का उदय होता है।

“महाराज! हमारे पास अपनी सुन्दर स्त्रियां हैं जिनका रूप दैवीय सुंदरियों से कतई कम नहीं। जब इतना सौंदर्य हमें पहले से उपलब्ध है तो शारीरिक उपभोग के लिए हमें अन्य स्त्रियों की क्या आवश्यकता!”

आदमखोर दैत्य की बात सुन कर राजा का संशय गहरा गया। राजा ने पूछा: “यदि भोग या उपभोग, दोनों ही के लिए तुम्हें इस स्त्री की आवश्यकता नहीं थी तो फिर तुम पंडित के घर घुसे ही क्यों और क्यों उसकी स्त्री को उठा ले आए? स्थिति स्पष्ट करो।”

राजा के असमंजस को शांत करने हेतु निशाचर बोला: “महाराज! मंत्रसिद्धि की दृष्टि से वह पंडित उच्च श्रेणी का ब्राह्मण है। मैं जब कभी शिकार ढूँढने निकलता हूँ, वह अपने मन्त्रों की

शक्ति से हम दैत्यों का नाश कर देता है। उसके कारण मैं स्व-धर्म का पालन नहीं कर पा रहा। हम उसके मन्त्रों की शक्ति के कारण भूखे मरने पर विवश हैं। उस पंडित ने हमारी आजीविका छीन ली है। हम कहाँ जाएं? वह ब्राह्मण सभी यज्ञों का अधिष्ठाता है।

“बहुत सोच-विचार के बाद हमने उससे उसकी शक्ति छीन लेने का निर्णय किया। पत्नी के अभाव में मनुष्य यज्ञ का अधिकारी नहीं रहता। इसलिए हम उसकी स्त्री को उठा ले आए हैं। अब वह यज्ञ के अयोग्य हो चुका है।”

दैत्य की बात सुन कर राजा ने कुछ देर विचार किया। कुछ सोच कर फिर कहा: “निशाचर! अच्छी बात है, तुमने कहा कि तुम लोगों का स्वभाव खाते हो..., अतः मेरी बात सुनो, और मैं जैसा कहता हूँ वैसा ही करो।

“तुरंत इस पंडिताइन का बुरा स्वभाव तुम खा जाओ। हो सकता है उसके पश्चात इसका बर्ताव सुधर जाए। यदि ऐसा हो जाए तो तुम उसे पंडित के यहाँ वापिस छोड़ आना। ऐसा करने पर तुम वही कर्म करोगे जो द्वार पर आए याचक के प्रति राजा को करना चाहिए। इस समय मैं तुमसे याचना कर रहा हूँ।”

राजा की बात सुन कर निशाचर ने अपनी शक्तियों का उपयोग किया तथा गुप्त होकर महिला के शरीर में प्रवेश कर गया। कहे अनुसार उसने महिला के सभी बुरे कर्मों को खाना आरंभ किया।

जैसे ही निशाचर ने महिला के सभी अशुभ कर्म उधेड़ फेंके, महिला का विवेक जागृत हो उठा। उसने राजा से कहा: “महाराज मेरे कर्मों के पक जाने के फलस्वरूप मुझे एक उदार पति से वियोग झेलना पड़ा; यह निशाचर तो नियति के हाथ का खिलौना मात्र है। समस्त प्रकरण में इस दानव का कोई दोष नहीं। मेरा पति भी दोषी नहीं। इस पूरे फसाद की जड़ मैं हूँ।

“मनुष्य वही भोगता है जो कर्म उसने पहले किया होता है। पिछले किसी जन्म में मैंने मेरे पति को अकारण छोड़ दिया था। मेरा वह कर्म इस जन्म में आकर फलित हुआ। इसमें मेरे इस जन्म के पति का क्या दोष?”

कहानी यहाँ समाप्त होती है। इस कहानी में शिक्षा के स्थान पर गहन सत्य छिपा बैठा है। चूंकि महिला ने पिछले जन्म में अकारण अपने पति को छोड़ दिया था, अतः कर्म फलित होने पर उसे पूर्ण परित्यक्त अवस्था को झेलना पड़ा।

इस जन्म में उदार पति से वियोग हुआ। उठा ले जाने वाले निशाचर ने भी महिला का परित्याग कर दिया। धैर्य का नाश होने

पर मनुष्यों को क्रोध आता है। जब हम दूसरों को अपमानित करते हैं, तब वास्तव में हम उनका स्वभाव अर्थात् नैसर्गिक प्रकृति को खा रहे होते हैं। इसके चलते पीड़ित मनुष्य के भीतर नकारात्मक मनोवैज्ञानिक बदलाव घटित होने की प्रबल संभावना पैदा होती है; वे दूसरे के किए सद्कर्मों को खाने लगते हैं अर्थात् वे दूसरों द्वारा किए अच्छे कार्य को नष्ट करने हेतु लालायित होते हैं जैसे निशाचर पंडित के सद्कर्मों को खाने हेतु प्रयासरत था।

अन्ततः कहानी का मूल उद्देश्य उजागर होता है: “हम अपने कर्म खाते हैं।” कहानी के सभी पात्र जिस-जिस अवस्था को प्राप्त हुए, वे सभी मूलतः कर्मों के फलों का उपभोग करते दिखाई देते हैं।

भोजन के सन्दर्भ में यदि सवाल उत्पन्न हो कि हम क्या खाते हैं? तब वास्तव में जवाब यही होगा कि वही जो हम उगाते हैं। उगाना एक कर्म है। उस दृष्टि से भी भोजन के नाम पर हम अपना कर्म खाते हैं। भोजन का हमारे शरीर पर जो शुभ-अशुभ परिणाम दिखाई देता है, वह परिणाम वास्तव में हमारे कर्म के फलित होने की अधिसूचना है।

यदि हम कर्मों के प्रति सजग बने रहने का प्रयास करें तो अपेक्षाकृत सुखद परिणामों की संभावना बलवती होती है। इस कहानी से हमें प्रेरणा मिलती है: कोई भी कर्म करते समय उसके परिणाम के प्रति सदैव सजग रहें। सजगता पूर्वक किए गए कर्म का परिणाम सुखद होता है।

—सत्कीर्ति-निकेतन, गुलेर, काँगड़ा,

हिमाचल प्रदेश - 176033

मो. 94180 49070





## पागल छात्र



डॉ. राजेश्वर प्रसाद सिंह

आज फिर मुकदमे की तारीख है। मेरे नाम से कई वारंट निकल चुके हैं, क्योंकि मैं किसी भी तारीख पर अदालत में उपस्थित नहीं होता। अदालत अपनी यह अवमानना कैसे बरदाश्त करती। मेरे नाम पर वारंट की पर्ची काटती गयी। मैं निश्चल, निर्विकार सभी देखता/सुनता गया।

मेरे मन में भी अहं का भाव है, क्योंकि मैं मामूली मुजरिम तो हूँ नहीं। 302 दफा का मुजरिम हूँ। मुझ पर एक निरपराध व्यक्ति की हत्या का इलजाम है। हूँ! न्यायालय बकता है, बकने दीजिए। उसका काम है पर्ची काटना, मेरा काम है उसे कूड़ेदान में डाल देना। और मैं वारंट की सभी पर्चियों को कूड़ेदान में डालता गया। आपको विश्वास दिलाता हूँ, ऐसा करके मैंने अदालत की अवमानना नहीं की है, क्योंकि मैं भी तो कूड़ेदान में ही डाल दिया गया हूँ। फिर मैं जहाँ रहता हूँ, वहाँ यदि आपको रखूँ-तो इसे आप क्या कहेंगे? क्या मैंने आपका अनादर किया? आपकी अवमानना की? नहीं जी, मैं तो आपलोगों को अपने घर का मानने लगा हूँ! घर का!! अपने घर में अतिथि को आश्रय देना ही तो हमारा रीति-रिवाज है। आप कूड़ेदान को कूड़ेदान समझने का भ्रम न करें। वह मेरा स्थायी आवास है।

आज एकाएक जी में आया। इस आवास को छोड़ कर अब दूसरे आवास के लिए प्रयास करना चाहिए। जीवन आपाधापी है, अकर्मण्यता नहीं। इसलिए अदालत में हाजिर हो गया हूँ।

ऐसे आप समझते होंगे, इसे पुलिस पकड़कर ले आयी है या पुलिस के डर से स्वयं चला आया है। संभव है, इसका 'केस' बिगड़ रहा था, इसलिए इसके परिवार वाले या शुभचिन्तक या इस मुकदमे के अन्य मुजरिम इसे पकड़कर या मना-वनाकर ले आये हों। किंतु, आप विश्वास करें, मेरे यहाँ आने का इनमें से कोई भी कारण नहीं है।

दरअसल, जिस घर में रह रहा हूँ, वहाँ से मन उचट गया है। अब आबोहवा बदलने की इच्छा हुई है, इसलिए अदालत चला आया हूँ। आपको समझने में देर नहीं लगी होगी कि अब मैं कहाँ घर बनाने जा रहा हूँ। मेरे नाम से कई वारंट हैं, 'मर्डरकेस' के और मैं अदालत में हाजिर हो गया हूँ। परिणाम आपके शब्दों में 'जेल' होगा। किन्तु, आप चकित न हों, उसके प्रति मेरे हृदय में सम्मान का भाव है। वह गाँधी की तपोभूमि है, वहाँ दीन-दुखियों, भूले-भटकों को सहारा मिलता है।

आपको बता देना चाहता हूँ कि मेरे ऊपर यह 302 दफा का मुकदमा कैसा है? आप उत्कंठित हो रहे हैं, इसीलिए बता रहा हूँ, कोई सफाई देने का इरादा नहीं है। क्योंकि जैसा पहले ही बता चुका हूँ, अब हवाखोरी करने का जी है।

ऐसे आप कोर्ट में मेरी बातें सुन रहे हैं और कोर्ट में सफाई को ही प्रधानता दी जाती है। आप कितनी साफ-सुथरी बातें कर सकते हैं, कोर्ट का मकसद इसी से है। यदि साफ-सुथरी बातें करना नहीं जानते तो भाड़े पर यहाँ साफ-सुथरी बातें करने वाला आदमी भी मिल जाएगा, जिसे आप 'वक्रील' कहते हैं। सरकार को सफाई की विशेष ज़रूरत होती है, इसलिए वह स्थायी तौर पर वक्रील रखती है। मुद्दई वक्रील, मुद्दालेह वक्रील, सरकार वक्रील। वक्रील ही वक्रील। वाह रे, वक्रील। लेकिन, ख्याल रखेंगे, कोर्ट जब भी सुनेगा, इनकी साफ-सुथरी बातें ही सुनेगा। ऐसे भी, आप जानते हैं गन्दी और धिचपिच बातें अच्छी नहीं होतीं। और जब कोर्ट ही गन्दगी को प्रश्रय देने लगे तब सामान्य जनता का कौन-सा व्यवहार होगा?

हाँ, तो मैं विषयान्तर होने लगा। खैर, बुरा न मानिएगा। अब आपको बता ही देता हूँ कि इलजाम कैसा है? आप चटा तो नहीं रहे हैं? क्या क्रीजिएगा, यहाँ सभी एक दूसरे को चाटने की कोशिश में ही लगे रहते हैं। आप ऊबकर सिर झटक देंगे तो भी सुनाने वाला नहीं मानेगा। और सुनाने वाला व्यक्ति जब अपराधकर्मी हो तब उसकी न सुनना आपके वश की बात है भी नहीं। लेकिन डरिए नहीं, मेरा कुछ ऐसा-वैसा करने का इरादा नहीं है और न आपकी

नजरों में शरीफ बनने की ही इच्छा है। मुझ पर जो इलजाम है वही मेरी शराफत के लिए पर्याप्त है।

हाँ, तो इलजाम की बात थी न!

मेरा जन्म घोर देहात में हुआ। पढ़-लिख गया-ठीक से ही, पता नहीं कैसे? ताज्जुब तो मुझे भी होता है और आपको भी होगा कि ऐसा संभव कैसे हुआ कि निरा देहात का एक लड़का, जिसके परिवार में शिक्षा की हवा तक न लगी हो, इतनी अच्छी श्रेणी के साथ पास करता गया। लक था, पास करता गया किन्तु, भक्त तो मैं उस दिन रह गया, जिस दिन सुना कि मैं 302 का मुजरिम हूँ।

यह अपना भारतीय संस्कार है। आप आगे बढ़ना चाहेंगे, मैं पीछे से आपकी टाँगें खींचने लगूँगा। जो ऐसा नहीं कर पाते हैं, उनमें भारतीयता का अभाव है। आप घर-परिवार से लेकर राजनीतिक दुनिया तक नज़रें उठाकर देख लें, भारतीयता का यह तत्त्व सर्वत्र आपको मिल जायगा।

हुआ यह कि गाँव के बड़े-बड़े लोगों को यह आशंका हो गयी कि कहीं मैं 'बड़ा आदमी' न बन जाऊँ? फिर मैं या मेरे बाप-दादा उनके दरबार में सिजदा कैसे करेंगे? इसलिए चलो, पहले ही खतरा टाल दिया जाय। परिणामतः मैं 302 का मुजरिम बना दिया गया। अपने नाम से वारंट निकलने के पहले मुझे पता भी नहीं था कि किसी की हत्या हुई है। ऐसे भी, मैं बहुत ही कम घर आता-जाता हूँ और इस मुकदमे के समय तो मेरी परीक्षा ही चल रही थी। खैर, मैं एक हत्यारा घोषित कर दिया गया और अपनी ही पत्नी का। बात यह थी कि मेरी पत्नी बहुत दिनों से बीमार चली आ रही थी। दवा-दारू की समुचित व्यवस्था मेरे वश की बात नहीं थी। यहाँ तो मैं 'टिउसन' कर किसी तरह पढ़-लिख लेता था। फिर इलाज कैसे करवाता? बड़े लोगों ने मेरी पत्नी की मृत्यु की खबर सुनी और मुझ पर ज़बरदस्ती मार देने का आरोप लगा दिया। उसका शव-दाह उसे जलाकर मार डालने में तबदील हो गया।

ऐसे, बड़े लोगों की अपनी विशेष बुद्धि होती है, उस पर टीका-टिप्पणी करने का मुझे अधिकार नहीं है। किन्तु, इतना तो अवश्य कह देना चाहता हूँ कि मेरे 'बड़े आदमी' बनने की आशंका से वे व्यर्थ ही ग्रस्त रहे हैं। उन्हें क्या पता कि इस समाज की एक-एक व्यवस्था ऐसी है कि कोई भी मेधावी छात्र बड़ा आदमी नहीं बन सकता। यदि वह बड़ा आदमी बनेगा तो उसे देश से बाहर की ज़मीन पर खड़ा होना होगा। नाहक ही, वे अपने माथे पर बदनामी ले लेते हैं! आप राज्य-संचालकों से ही पूछ देखेंगे न! वे किसी

मेधावी को बढ़ावा नहीं दे सकते। शासकों के लिए मेधा बड़ी ही खतरनाक साबित होती है। खैर, उनकी समझ में जो आया सो उन्होंने किया और मैं अभियुक्त करार कर दिया गया।

एक बार फिर कहे देता हूँ, मैंने अपनी 'केस हिस्ट्री' आपको सुनायी है, कोई सफाई नहीं दी है। न जाने मुझे सफाई शब्द से ही क्यों चिढ़ है, पता नहीं चलता।

तो हाँ, आप जरा हट जाइये। पुकार हो गयी है और मेरी फाइल उलटी जा रही है। मुझे कटघरे में जाने का रास्ता दीजिए। अरे भाई, हटिए न! कटघरा में जाना है, किसी संसद में थोड़े ही जा रहा हूँ जो रास्ता रोके खड़े हैं। हाँ, आपसे ही तो कह रहा हूँ। जहाँ देखिए, वहीं भीड़! संसद में जाने के लिए, विधान-सभा में जाने के लिए, मेले में जाने के लिए, तीर्थों में जाने के लिए, फिर कटघरे में जाने के लिए भी!-एकाएक मेरे मुँह से हँसी फूट पड़ी।

दण्डाधिकारी तनकर बैठ गये। शायद कुछ कहना चाह रहे थे।

“जी हुजूर! ये ही अजय कुमार हैं। एम. ए. में पढ़ते हैं। बी. ए. आनर्स की परीक्षा इन्होंने प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की थी। ये एक होनहार छात्र हैं, किन्तु इस मुकदमे के कारण इधर इनका मानसिक संतुलन बिगड़ गया है और चिकित्सा के लिए इन्हें काँके अस्पताल भी ले जाया गया था, जहाँ महीनों रहना पड़ा। इस बात की सूचना के बावजूद अदालत ने फिर नया वारंट जारी कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप चिकित्सा अधूरी छोड़कर इन्हें आपके सम्मुख.....”

मैं कटघरा में अभी ठीक से खड़ा भी नहीं हो पाया था कि एक वक़ील को दनादन यह सब कहते सुना। इस सफाई की तीखी गंध से मेरा जी मिचलाने लगा। किसी तरह जी को काबू में करके मैं बमक पड़ा-“क्या मैं गूँगा हूँ? मेरे बदले आप मेरे बारे में कहने वाले कौन हैं? आपने मुझसे स्वीकृति ली है? माना कि आप अच्छी सफाई मेरी ओर से पेश कर सकते हैं, किन्तु मुझे इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। मैं अपना बयान खुद दूँगा।” यह कहकर मैं दण्डाधिकारी की ओर मुखातिब हुआ-“मैं अपना बयान खुद देना चाहता हूँ।”

दण्डाधिकारी ने स्थिर-भाव से कहा-“नहीं!”

“हुजूर! इनका मानसिक संतुलन बिगड़ गया है, इनकी बातों पर ध्यान न दें।” फिर उस वक़ील की परिचित ध्वनि मेरे कानों

में गूँज गयी। “हुज़ूर! आपसे दरख्वास्त है कि चिकित्सा हेतु इन्हें कुछ और दिनों के लिए जमानत पर रहने की अनुमति दी जाये।”

“कौन है मुझे जमानत पर छुड़ानेवाला? मैं किसी की जमानत पर नहीं छुटना चाहता। मेरे नाम से वारंट पर वारंट निकला है और मैं जमानत पर रहने के लिए अर्ज करूँ? मुझे नहीं चाहिए किसी कि जमानत, किसी की कृपा!” मेरी चीख से अदालत का विशाल भवन काँप गया। दण्डाधिकारी ने धीरे बोलने का संकेत किया।

“हुज़ूर! इनके पागलपन से संबद्ध यह डाक्टर का प्रमाण-पत्र है।” यह कहकर वक़ील दण्डाधिकारी को क्रांजात देने के लिए आगे बढ़ा। मैंने भी अपना क्रांजात उनकी ओर बढ़ाया-“सर, यह मेरे विभागाध्यक्ष का दिया हुआ टेस्टिमोनियल है।”

“हुज़ूर!, न्यायालय को गुमराह करने के लिए पागलपन का यह स्वाँग किया जा रहा है। चूँकि अभियुक्त ने संगीन अपराध किया है और न्यायालय के आदेशों की भी वह अबतक अवहेलना करता आया है, इसलिए इसे जमानत नहीं दी जा सकती।” सरकारी वक़ील ने हस्तक्षेप करते हुए अपना पक्ष रखा।

उसकी बातों से मुझे लगा कि वह सचमुच एक लोकहितकारी राज्य का अधिवक्ता है, जो कम-से-कम न्यायालय की मर्यादा की रक्षा के लिए चिन्तित तो है।

मैंने देखा दण्डाधिकारी अजीबोगरीब स्थिति में हैं। वे प्रश्नों से घिर गये हैं और सोच रहे हैं कि किसे सही माना जाये। डाक्टर इसे पागल साबित करता है और विश्वविद्यालय का विभागाध्यक्ष एक संतुलित और सुन्दर आचरण सम्पन्न छात्र। सरकारी वक़ील इन दलीलों को स्वाँग मान रहे हैं।

मैंने मन-ही-मन कहा-सही तो तीनों हैं और गलत भी तीनों। किसी चीज़ को देखने का नज़रिया तो अपना-अपना होता है। एक की दृष्टि में जो व्यभिचारी है, वह अन्य की दृष्टि में मसीहा भी हो सकता है। सत्य का निर्णय केवल विषय से ही नहीं होता, विषयी से भी होता है।

“सर, मैं जमानत पर नहीं छुटना चाहता। मेरे नाम से वारंट है, मैंने अदालत के आदेशों की अवहेलना की है। ....”

“हुज़ूर, इनकी बातों पर ध्यान न दिया जाये। हो सकता है ये जेल में कोई अनहोनी कर बैठें, जिसका दायित्व न्यायालय के सिर पर जायेगा। ये अपना मानसिक संतुलन खो चुके हैं, इसलिए इनकी

बातों पर न तो विश्वास किया जा सकता है और न उसके प्रति कोई सहमति ही दी जा सकती है।

अजीब दुनिया है, मेरी बातों की सत्यता के लिए दूसरों की सहमति आवश्यक है। क्या किसी के सुख-दुःख की अनुभूति कोई अन्य कर सकता है, वह तो द्रष्टा हो सकता है, भोक्ता कैसे होगा? क्या भोक्ता से अधिक प्रामाणिक द्रष्टा ही होता है? होता होगा, तभी तो मैं अपनी पत्नी का हत्यारा बना दिया गया।

मैंने जोर से कहा- “मैं किसी वक़ील को नहीं मानता।”

“मानना होगा। इस विवादास्पद स्थिति में तो और भी मानना होगा।”

“नहीं मानूँगा! मैं जेल जाकर रहूँगा। मेरे पास खाने को नहीं है। अदालत में आने के लिए किराये के पैसे नहीं हैं। जेल में भोजन तो मिल जाएगा। भूख से, बीमार होकर मरने से बच जाऊँगा और किसी नये हत्यारे को जन्म लेने से तो रोक सकूँगा। साथ ही, जेल की सवारी से अदालत पहुँचकर उसकी अवमानना करने का कलंक भी न लूँगा। सबसे बड़ी बात तो यह है कि अपने किये का दण्ड भोगूँगा। ब्रह्मचर्य आश्रम में रहते हुए मैंने गृहस्थ आश्रम के संस्कार को स्वीकार किया। पत्नी तो बना ली, किन्तु उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति न की। वह अब जब तड़प-तपड़कर मर गयी है तब अपराधी कौन होगा? पत्नी मेरी और अपराधी दूसरा.....” और बातें मुँह में ही अटक गयीं, क्योंकि इसी बीच दण्डाधिकारी ने अपना फैसला सुना दिया-“आपको जमानत पर रिहा किया जाता है, क्योंकि आपने किसी विशेष कारणवश जेल जाने का इन्टेंशन बना लिया है....।” यह कहकर वे किसी क्रांजात पर कलम दौड़ाने लगे।

“सर, मेरी गिरफ्तारी तो हुई नहीं, फिर रिहाई कैसी?”

“सचमुच, यह पागल हो गया है”-अदालत की बढ़ती हुई इस भनभनाहट में मेरी आवाज़ तिरोहित हो गयी।

**सेवा-निवृत्त प्राध्यापक**

**धर्म समाज संस्कृत महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर  
आवास-ग्राम-सलेमपुर, वार्ड-8, एरोप्लेन रेस्टूरेन्ट के  
सामने, भाया-उमानगर, मुजफ्फरपुर-842004.**

**ईमेल: dr.rajeshwar1956@gmail.com**

**मो. 9931268188**

## दुबली काया किंतु अदम्य आत्मबल : पंडिता विजया ताई भिसीकर



डॉ. मेधावी जैन पंडिता विजया ताई भिसीकर साथ

हाल ही में श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम एवं गुरुदेव समन्तभद्र सेंटर फॉर जैनिज्म द्वारा आयोजित भारत वर्ष के जैन दर्शन के दो दिग्गज विद्वानों पंडित धन्य कुमार भोरे जी एवं डा पद्मनाभ एस जैनी के जन्म शताब्दी महोत्सव पर जैन दर्शन साहित्य में उनके योगदान पर द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय चर्चासत्र में शामिल होने कारंजा (महाराष्ट्र) जाना हुआ। चाहे हम किसी भी उद्देश्य से विश्व के किसी भी भाग की यात्रा करें, कभी कभी ऐसे व्यक्तित्वों से परिचय होता है जिनका जीवन हमारे समूचे जीवन पर छाप छोड़ देता है। मेरी इस यात्रा के दौरान ऐसी ही एक विलक्षण शख्सियत से मेरा परिचय हुआ। सेमिनार के

दूसरे दिन जैसे ही मैंने हॉल में प्रवेश किया, देखा अग्रिम पंक्ति में ही श्वेत एवं नीले रंग की सूती साड़ी पहने, दुबली-काया किन्तु मुस्कुराता चेहरा लिए एक वृद्धा बैठी हैं। उनके व्यक्तित्व में एक विनम्रता थी जिस कारण मुझे उनके प्रति सम्मान एवं आदर भाव महसूस हुआ। तभी देखा प्रोजेक्टर स्क्रीन पर उनकी तस्वीर एवं नाम के साथ जैनिज्म के स्कॉलरली फील्ड में उनका योगदान डिस्प्ले हो रहा था। कुछ ही देर में उन्हें स्टेज पर इंटरव्यू हेतु निमंत्रण दिया गया, जिसने मेरे हृदय में उनके प्रति जो आदर भाव उमड़ रहा था उसे और मजबूत एवं गहरा कर दिया।

यहां मैं उनके इंटरव्यू से उनके जीवन की वे कुछ बातें साझा कर रही हूँ जिन्होंने न केवल मुझे भाव विभोर किया अपितु जीवन में आने वाले अप्रत्याशित संघर्षों से कैसे साहस एवं समभाव से जूझा जाए इसकी प्रेरणा दी। साथ ही अपने गुरु के प्रति श्रद्धा किस प्रकार जीवन में दिशा दिखाती है यह भी जानने का अवसर मिला। स्वभाव से बेहद नटखट एवं चंचल विजया विद्यालय से घर आकर कभी पढ़ाई नहीं करती थीं किन्तु पढ़ाई में कमजोर हों ऐसा भी नहीं था। जब-जब परीक्षा आती विजया विद्यालय जाने के रास्ते में ही अपना पाठ याद कर लेती। किन्तु घरवालों को उनकी चिंता सताती कि यह बच्ची क्यों विद्यालय से मिला गृहकार्य नहीं करती। इसी शिकायत को लेकर जब विजया के माता-पिता अपने गुरु मुनि श्री समन्तभद्र के पास पहुंचे तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'विजया पढ़ाई नहीं करती, ऐसा तो मुझे लगता नहीं'। बस गुरु के मुख से कही गई इतनी छोटी सी बात ने विजया के बाल मन पर कुछ ऐसी छाप छोड़ी कि धीरे-धीरे विजया ने अपना गृहकार्य करना एवं अनुशासित हो पढ़ना आरंभ कर दिया। तत्पश्चात विजया ने कई क्षेत्रों में महारथ हासिल की। वे इतनी निपुण हुईं कि किसी के द्वारा पूछे गए किसी भी प्रश्न का तुरंत उत्तर दे दिया करती थीं। साथ ही वे कीर्तन करती थीं एवं नाट्यकला में भी निपुण थीं। विवाह के पश्चात् बड़ा, संयुक्त परिवार होने के बावजूद भी उन्होंने जैन धर्म एवं दर्शन का पठन-पाठन न केवल स्वयं किया अपितु आगे भी कई कन्याओं एवं महिलाओं को वे शिक्षा प्रदान करती रहीं। इसी संबंध

में साक्षात्कारकर्ता ने जब उनसे पूछा कि वे समय कैसी निकालती थीं तो उनका उत्तर था, 'समय कभी भी मिलता नहीं, निकालना पड़ता है, यह बात मेरे मन में ठसी हुई थी। प्रतिदिन मैं घर का सारा काम निबटा कर, बच्चों को सुलाकर, रात नौ बजे स्वाध्याय हेतु निकट स्थित श्राविका आश्रम जाया करती थी। शुरु-शुरु में किसी बच्चे के जागने एवं रोने पर मेरे श्वसुर से मुझ पर क्रोध किया किन्तु धीरे-धीरे जब सबने देखा कि मैं अपनी ऊर्जा एवं समय किसी मनोरंजन पर नहीं अपितु स्वाध्याय पर व्यतीत कर रही हूँ तो सभी कुटुम्बियों ने मेरा साथ देना आरंभ किया।'

उन्होंने अपने जीवन में आए संघर्षों के विषय में बताते हुए कहा, 'जब मेरा बड़ा बेटा गुजरा, मैं शोक-विलाप में डूबी रहती थी एवं उन दिनों स्वाध्याय छोड़ दिया था। महाराज श्री निरंतर मुझे पत्र भेजते रहे कि दुःख से उबरने हेतु स्वाध्याय करो किन्तु मैं यही सोचती कि गुरु जी तो सन्यासी हैं उन्हें माँ की महिमा के विषय में क्या मालूम? किन्तु अंततः जब मैं पुनः स्वाध्याय की ओर लौटी एवं तत्त्वज्ञान अर्जित किया धीरे-धीरे मेरा दुःख कम हुआ, तब मैंने अपने आप से कहा कि अब तो मैं उसके जाने का दुःख नहीं मनाती अर्थात् मेरा दुःख वास्तविक नहीं अपितु मेरे खुद के स्वार्थ के कारण था। इस तरह मैं गुरु समन्तभद्र जी के प्रति और अधिक आदरभाव से भर गई। उनका मेरे जीवन में विशेष स्थान रहा। उन्होंने मुझे मेरे जीवन के लिए दो प्रतिज्ञाएं दिलवाईं, पहली, संस्कृत का अध्ययन। संस्कृत सीखना सरल नहीं रहा किन्तु गुरु की आज्ञा की अवज्ञा करने के विषय में भी कभी नहीं सोचा। घर का सारा काम एवं उत्तरदायित्व निभा कर मैं संस्कृत सीखने जाने लगी। धीरे-धीरे जब संस्कृत सीख ली तब अनुभव किया कि जो आनंद संस्कृत पढ़ने में है वह हिंदी एवं मराठी पढ़ने में नहीं। मैं आज भी मंदिर इत्यादि में संस्कृत में प्रवचन करती हूँ। दूसरी प्रतिज्ञा थी आगे बच्चियों को धर्म-दर्शन की शिक्षा प्रदान करना। मुझे लगा कि मेरे पास कोई क्यों एवं कैसे पढ़ने आएगा? किन्तु गुरुजी ने जो बात कही वे उस पर अडिग रहते थे। मैंने अपनी बड़ी बेटी एवं उसकी एक सखी को सबसे पहले पढ़ाना आरंभ किया एवं धीरे-धीरे मेरे पास साठ-सत्तर बच्चियां एवं महिलाएं आने लगीं। पढ़ाते समय मेरा यही अनुभव रहा कि शिक्षक को कभी भी अपने को अधिक ज्ञानी समझ कर नहीं अपितु विद्यार्थियों के स्तर पर जाकर उनकी बुद्धिमत्ता अनुसार पढ़ाना चाहिए। मुझ द्वारा पढ़ाने में विद्यार्थी क्या सीखते थे यह तो बाद की बात है किन्तु मुझे जो आनंद आता था मुझे वह इतना भाता था कि अब मेरी आयु 95 वर्ष है, अभी तक मैं अपने घर में पढ़ाती हूँ।'

'जब मेरे पति अस्पताल में थे एवं लगा कि उनका अंत निकट है, मैं उनसे कहती कि आप मेरी और बच्चों की चिंता मत कीजिए अपितु अपनी आत्मा में रमिये। यह देख कर डॉक्टर भी हैरान हो जाते थे, कहते थे कि हमने ऐसी पत्नी आज तक नहीं देखी।'

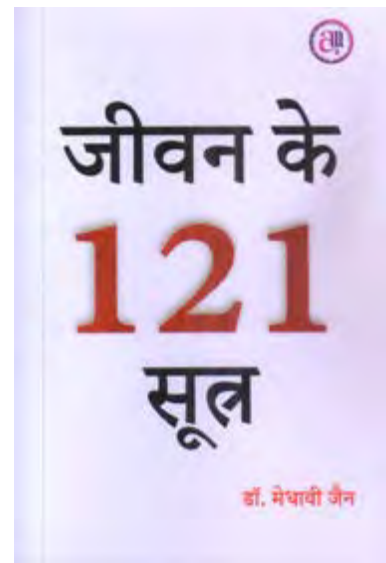
सच ही तो है भारत सदा से गुरुओं के प्रति असीम आस्था का देश रहा है जहां गुरु भी वास्तव में सदगुरु रहे हैं जिनका उद्देश्य शिष्य का उनके प्रति आस्था नहीं अपितु स्वयं के प्रति आस्था रख अपने दुखों से पार पाना रहा है एवं इस दौरान अपनी आत्मिक उन्नति करें ऐसी पवित्र भावना रही है। जहां समूचा विश्व मृत्यु पर विजय पाने हेतु भौतिक विज्ञान के माध्यम से प्रयोग करने पर तुला है, भारत में मृत्यु पर शाश्वत विजय की संभावना पर गुरुओं ने सत्य के खोजियों का ध्यान आकर्षित किया है।

95 वर्षीया आदरणीया पंडिता विजया ताई जी से मिलकर अपने देश भारत एवं उसकी परम्पराओं के प्रति मेरी आस्था और अधिक गहरी हुई।

**डॉ. मेधावी जैन**  
**संस्थापिका**

**Dharma For Life**

**www.dharmaforlife.com**



**“आलस्य छोड़ उठो, ज्ञान के दीये जलाओ  
अपने भवन के स्वामी तुम हो, अब क्षण  
भर देर न लगाओ”**

## भेड़ियों के बीच



श्यामल बिहारी महतो

"मेघारानी, तुमको सुधीर बाबू ने बुलाया है " रामलाल ने दूर से ही कहा।

रजिस्टर पर डाक चढ़ा रही मेघना की कलम रूक गयी। उसने दूर खड़े रामलाल को मुस्करा कर देखा और कमरे से निकल गयी। आफिस में सभी उसे मेघारानी ही कह कर बुलाते हैं। वह किसी की बात का बुरा नहीं मानती। सांवला-सलोना चेहरा और उसकी कजरारी आंखें आफिस के लोगों में एक मृग-बिम्ब बन कर रह गई है। सबसे पहले उसे मालती ने मेघारानी कह कर पुकारा था। बाद में यही नाम पूरे आफिस का नाम बन गया था। उसने भी इसका कभी विरोध नहीं किया। एक बार उसने अपने जीवन में विरोध किया था। बदले में एडे- मुक्के मार खाई थी। तब से किसी बात का विरोध करना उसने लगभग छोड़ ही दी थी। वह जानती थी कि वो बड़ी अभागिन है। उसके हक में बस सहारे के रूप में यही नौकरी है। जिसे किस्मत ने उसे प्रदान की है।

" क्या मैं अंदर आ सकती हूँ..? " उसने धीरे से कहा।

" हां, हां, आओ मेघना, मैं तुम्हारा ही इंतज़ार कर रहा था। "

आफिस में एक सुधीर बाबू ही थे, जो असली नाम से उसे बुलाते थे " मेघना यह चिठी बहुत अर्जेंट है, आज ही रजिस्ट्री करना है, तैयार कर रखो, पोस्टमैन आयेगा, दे देना, कोई दिक्कत..? "

" नहीं सर! हो जायेगा..। "

" गुड ! " मेघना कमरे से बाहर चली गई थी।

मेघना को सुधीर बाबू के आफिस में आने से कोई घबराहट नहीं होती है। बेधड़क ! किसी भी वक्त चली आती थी। सुधीर बाबू के पहले रमेश कपरदार उसका बॉस था। वह अक्सर मेघना का माथा चाटता रहता था। प्रमोशन में साथ देने का प्रलोभन देता रहता था। मेघना को लेकर रमेश के मुंह में हमेशा लार टपकते रहता था। कई बार उसे अपने क्वार्टर में आने का निमंत्रण दे चुका

था। पर वह कभी गयी नहीं। हर बार कोई न कोई बहाना बना देती थी। उसके कपटी मन को वह जान चुकी थी। क्वार्टर में वह अकेले रहता था। पत्नी को उसने गाँव में छोड़ रखा था। सुना है एक दिन अपने ही क्वार्टर में डिस्पेन्सरी की गीता नर्स के साथ उसकी पत्नी ने देख लिया था। तब से वह अपनी इकलौती बेटी सपना के साथ गाँव में रहती है। इसके बावजूद एक दिन रमेश ने उसे जब क्वार्टर में आने को कहा तो मेघना ने साफ़ मना कर दिया " अभी नहीं, जब सपना बहन माँ के साथ यहाँ आयेंगी..! "

रमेश बहुत खिसियाया उस पर, लेकिन ज़्यादा बोल भी नहीं सकता था। सबको पता था कि रमेश बाबू परायी औरतों के लिए एक कील की तरह था। मेघना के लिए तो वह रावण की तरह था। वह उससे बचे-बचे रहती थी। बहुत ज़रूरी काम होने पर ही वह रमेश के कमरे में जाती थी। तब भी नज़रें उसकी चौंकना होती थीं।

यह मेघना का सौभाग्य ही था कि कुछ ही दिन बाद रमेश बाबू का एक दूसरी जगह ट्रांसफर हो गया और उसकी जगह सुधीर बाबू उस पद पर आ गये थे। तीस-पैंतीस साल के साफ़ छवि के सुधीर बाबू खुद काफी सुधरे और सुलझे हुए थे। उनके चेहरे पर एक सुंदर सी मुस्कान हमेशा कायम रहती और उनकी बोल चाल की भाषा लोगों को आकर्षित करती थी। घर में बूढ़ी माँ के अलावा एक भाई था जो बोकारो में कोचिंग कर रहा था।

थोड़ी देर बाद एक लेटर लेकर मेघना सुधीर बाबू के आफिस में फिर पहुंची।

"आओ बैठो मेघना.! " सुधीर बाबू ने उसे देखते ही कहा। मेघना सामने की कुर्सी पर बैठ गयी। उसको इस बात पर घोर आश्चर्य हो रहा था कि आज तक सुधीर बाबू ने कभी उसे मेघारानी क्यों नहीं कहा! दूसरे मेघारानी कह खूब मजे लेते हैं। फिर यह क्यों नहीं ? दूसरों की भांति सुधीर बाबू की बोली में कभी छिछोरापन भी सुनने को नहीं मिला था। मेघना के दिल में सुधीर बाबू के लिए एक अलग ही जगह बनती जा रही थी।

"अगर बुरा न मानो तो आज दोपहर को कैटीन चलते हैं, साथ बैठ कर दोनों चाय पियेंगे!"

मेघना ने सुधीर बाबू की ओर देखा। दो साल से ऊपर हो चला था, सुधीर बाबू के साथ काम करते हुए हमेशा "गुडफील!" महसूस करती रही है वह, पर आज तक उनकी तरफ से ऐसा प्रस्ताव कभी आया नहीं था। सुबह दस बजे आफिस में सिर्फ एक बार चाय बनती थी। दोबारा नहीं। चूँकि सुधीर बाबू और रमेश बाबू में काफी फर्क देखा था उसने। वह सहज भाव में बोली - "ठीक है पहुँच जाऊँगी!" "कहने को तो मेघना ने आने की बात कह दी, पर चाय के बहाने सुधीर बाबू कहना क्या चाहते हैं, वो बात उसके दिमाग में टाइम बम की तरह टिक-टिक करती रही।

कैटीन पास ही थी। वे दोनों एक साथ कैटीन पहुँचे और आमने सामने बैठ गए। चाय का आर्डर दे दी गयी थी। कनखियों से मेघना ने एक बार फिर सुधीर बाबू की ओर देखा। बहुत कम बोलने वाले, चाय के बहाने सुधीर बाबू आज उससे कहना क्या चाहते हैं, यह सवाल मेघना के मन को मथे जा रहा था। एक दूसरी बेंच पर पहले से बोनस बाबू गोप दा कचोड़ी, जलेबी खा रहा था। देखते ही सुधीर बाबू ने कहा "गोप दा, नई भाभी और दोनों जुडवां बेटे कैसे है..?"

"फस्स क्लास!"

"वेरी गुड! बोनस कब दे रहे हैं.."

"इस माह के अठाइस तारीख तक.."

बेटों की चर्चा से मेघना को अपना बेटा याद आ गया। वह सिजवा के एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ता था और वहीं होस्टल में रहता था। बेटा ही मेघना का अब सब कुछ था। बेटे की खातिर ही उसने दूसरी शादी नहीं की। शादी के अब तक दसों प्रस्तावों को वह ठुकरा चुकी थी। हालांकि माँ उसकी दूसरी शादी के पक्ष में थी। पहाड़ जैसी जिंदगी का खौफनाक अनुभव भी सुनाई थी माँ ने, लेकिन मेघना से हां कहलाने में माँ नाकाम रही थी। पहली शादी को ही मेघना आज तक भूला नहीं पाई थी। जो किसी हादसे से कम नहीं था।

पिछले छह साल की जिंदगी में मेघना को दुख और दर्द के सिवाय कुछ नहीं मिला। बाप उसका मकोली भूमिगत खदान में माइनिंग सरदार था। उसी के साथ उसका बचपन का दोस्त दौलत महतो भी काम करता था। बचपन की दोस्ती आगे भी बरकरार रहे, यही सोच उसने दोस्त के बेटे लखपत को अपनी बेटी मेघना के

लिए पसंद कर लिया था। हालांकि इस रिश्ते से मेघना खुश नहीं थी। लेकिन बाप के निर्णय के आगे उसकी एक नहीं चली। घर के बाकी लोग भी मुंह नहीं खोले। ऐसे ही हालात में हादसा हुआ था।

प्रथम पाली का समय था। अधिकांश मलकटे अंडरग्राउंड में उतर चुके थे। मेघना का बाप बलबीर महतो भी जुता टोपी पहने उतर चुका था। उसका दोस्त दौलत महतो छुट्टी पर था। काम अभी शुरू ही हुआ था कि माइन्स में भयंकर विस्फोट हुआ। देखते-देखते काम करने वाले मजदूर लाशों में बदल गए। मामला शॉर्ट सर्किट का था। मरने वालों में मेघना का बाप भी था। मेघना की शादी रूक गई। घर में मातम छा गया। हादसे से उबरने में काफ़ी वक्त लगा। उधर बाप की जगह नौकरी कौन करेगा। घर में अहम सवाल था। मेघना का इकलौता बड़े भाई मनोज पहले से ही नौकरी कर रहा था। उसकी दिली तमन्ना थी कि यह नौकरी उसकी पत्नी पार्वती करे। लेकिन माँ मनमति या देवी इसके लिए तैयार नहीं थी। उसने कहा "नौकरी मेघना ही करेगी..!"

मेघना मैट्रिक पास कर चुकी थी और वह आगे बढ़ने की सोच रही थी। मेघना को नौकरी न मिले, इसके लिए मनोज ने बहुत तिकड़मबाजी की। परन्तु नौकरी लेने से मेघना को वह रोक नहीं पाया। पढ़ी लिखी थी। आफिस में जगह मिल गई।

नौकरी लगते ही मेघना के लिए दूर-दूर और पढ़े लिखे रिश्ते आने लगे। कईयों को हमने आफिस का भी चक्कर लगाते देखे। परन्तु शादी के मामले में मेघना एक दम से खामोश थी। उसकी बातों से लगता शादी को लेकर उसे कोई जल्दबाजी नहीं थी। उधर पत्नी को नौकरी दिलाने में असफल मनोज कई दिनों तक माँ से उलझा रहा। इसी बीच एक चाल चली उसने। मेघना की शादी की बात घर में जोर शोर से उठाने लगा। और तिलक देने की जगह तिलक लेने की भी बात करने लगा। इसके लिए जोड़-तोड़ करना शुरू कर दिया था। बाप के दोस्त दौलत महतो से भी वह दो बार मिल चुका था। आज भी उसके पास गया था। लौटा तो काफ़ी खुश था वह। कामयाबी की खुशी उसके चेहरे पर साफ़ झलक रही थी। और वो घड़ी भी आ गयी, जब वह बाप की इच्छा का सवाल खड़ा कर मेघना की शादी दौलत महतो के बेटे लखपत से करवा देने का एलान कर दिया। मेघना को लखपत तनिक भी पसंद नहीं था, इसके बावजूद उसे लखपत से शादी करनी पड़ी थी। यहाँ माँ ने भी उससे किनारा कर लिया था। अकेले के दम पर वह लड़ाई

जीत न सकी। तब एक बकर चरवाहा उसके गले का ढोल बन गया था। जिसे ठीक से गाय दुहना भी नहीं आता था।

शादी हो गई। मेघना का घर बदला, गाँव नहीं। मेघना मलाल मन लिए ससुराल चली आई। ससुराल से ही उसका काम पर आना जाना होने लगा। अभी ससुराल में महज दूसरा माह हुआ था कि तभी उसकी शादी के पीछे भाई की गहरी चाल का पता चला। ससुराल में फुसफुसाहट होने के लगी थी। मेघना की सर्विस सीट में " नोमिनी " की जगह पति का नाम चढ़वाने की फुसफुसाहट ! बात एक दिन मेघना के पास भी पहुँची। सुनकर वह अचंभित और अवाक रह गयी थी! सर्विस सीट में नाम चढ़वाने को लेकर ससुराल वाले जिस तरह जल्दबाजी में उत्तर गये थे। इससे उसके मानस पटल पर एक सवाल उठा " नोमिनी " को लेकर अभी से ही इतना हंगामा क्यों? कई दिनों तक वह इसी बात पर उलझी रही। वह समझ गयी थी कि देर सबेर यह सवाल उसे घेरगा ! और एक दिन ऐसा हुआ भी। शाम को जब वह आफिस से लौटी और हाथ मुँह धोकर अपने कमरे में पहुँची, तब पीछे-पीछे उसका ससुर उसके कमर में आ धमका " बहू, तुम अपनी सर्विस सीट में अब लखपत का नाम तो चढ़वा दो। नोमिनी का हकदार तो वह होही चुका है ..? "

परन्तु मेघना ने उतनी ही तत्परता से ससुर की बात को खारिज करते हुए कहा " इतनी भी जल्दी क्या है ? अभी तो शादी हुए महज दो माह ही हुए हैं। इतनी जल्दबाजी का कोई कारण नजर में नहीं आता। समय होने पर यह काम मैं खुद करवा लूंगी। "

सुन कर ससुर के चेहरे ने रंग बदला। उसे किसी ने बताया कि मेघना लखपत को पसंद नहीं करती है। शादी भी उनकी मर्जी के खिलाफ हुई है। कहीं कोर्ट में जाकर छड़ान (तलाक) की अर्जी ही न दे दे। आज की पढ़ी लिखी सभी लड़कियां खूँटे से बंधी गाय नहीं होतीं। खूँटे से बंधना जानती है तो रस्सी तोड़ना भी जानती हैं। सब अपने मन की मालकिन होती है। यह तो नौकरी वाली है। घर में हाथ पैर बांध कर रखना भी मुश्किल है। अगर ऐसा कुछ हुआ तो वो पागल हो जायेगा। इसके भाई ने अच्छा बेवकूफ बनाया है मुझे। उस दिन के बाद दौलत महतो कई रात ठीक से सो नहीं पाया। सपने में घर छोड़ मेघना का जाना उसे दिखाई देता। बैचेनी की हालत में एक दिन दौलत महतो मेघना का आफिस चला आया। देखना था कि आफिस में मेघना किससे ज्यादा मिलती जुलती है और कौन उसके ज्यादा करीब रहता है। किसी ने लेबर

आफिसर से मिलने को कहा। वह उनके आफिस में जा मिला और आने का मकसद भी बताया। अपना खुद का परिचय उसने माइनिंग सरदार के रूप में दिया था।

देखिए, आप जो भी हैं, परन्तु मेघना की मर्जी के खिलाफ यहां कुछ नहीं किया जा सकता है..! " सुन कर दौलत महतो की आत्मा चित्कार मार उठी थी।

अब सुबह शाम वह मेघना के भाई मनोज पर दबाव डालने लगा " बहन से कहो, वो अपनी सर्विस सीट में लखपत का नाम चढ़ा दे, इसी के लिए तुमने लाख रुपये लिया है " बार बार कहने लगा।

मनोज ने सपाट जवाब दे दिया " अब यह आपका घरेलू मामला है, मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ..! "

इस बात को लेकर दोनों में जम कर हाथापाई हुई। दौलत महतो ने धमकी दी " मैं तुम्हें देख लूँगा, लाख दिया हूँ। मार कर लूँगा। "

झगड़े का कारण किसी के पले कुछ नहीं पड़ा। लोग पीठ पीछे सिर्फ क्रयास लगाते रहे।

उस दिन शाम को मेघना काम से लौटी ही थी कि आँगन में ससुर-भैसुर ने आ घेरा। सास दूर खड़ी थी।

" तुम आज हाँ या ना में जवाब दो, लखपत का नाम अपनी सर्विस सीट में चढ़ानी है या नहीं..? " ससुर ने पूछा।

" भाई का नाम चढ़वाने में तुम्हें क्या दिक्कत है ? ज्यादा होसियार बनती है..! " भैसुर में भतरा जैसा टोन था। जबकि उसका अपना मरद का कहीं अता पता नहीं था।

" यह काम तुमको कल ही करना होगा..! " ससुर सांप की तरह फुफकारा था।

" कोई जोर जबरदस्ती है क्या..? " मेघना भी तैश में आ गयी।

" हां- हां, इसके लिए तुम्हारे भाई ने हमसे एक लाख रुपये लिया है। हम जो कहेंगे वो तुमको करना होगा। और इस घर में हमारी मर्जी से रहना होगा- समझी ! "

" भाई को एक लाख दिया है? " मेघना को धक्का लगा! पैसे की लालच में भाई ने उसे बेच दिया था। इन भेड़ियों के हवाले कर दिया था। भाभी को नौकरी न दिला पाने का बदला भाई ने इस तरह से लिया। यकायक मेघना का चेहरा गुस्से में लाल अंगारे



की तरह हो उठा था। बोली "रूपया आपने किसे दिये है, हमें नहीं पता। पर नौकरी मुझे मां ने दी है, यह हमें पता है। और अपनी सर्विस सीट में मुझे किसका नाम चढ़वाने है, किसका नहीं, यह मैं तय करूंगी....!" इसी के साथ मेघना अपने कमरे की ओर बढ़ गई थी।

उस दिन के बाद घर में तनाव काफी बढ़ गया था। मेघना ने अपने घर वालों के मन मानी के खिलाफ जैसे जंग छेड़ दी थी। एक तरफ पूरा घर और दूसरी तरफ मेघना मोर्चे पर अकेले डटी हुयी थी।

फिर घर वालो ने एक सामूहिक निर्णय लिया। भयानक सर्द अंधेरी रात थी। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। ठंड से कुत्तों के भौंकने से रात और डरावनी लग रही थी। अचानक मेघना की नींद खुल गई। वह उठ बैठी। पति को बिस्तर से गायब पाया। अभी वह सहज भी नहीं हुई थी कि भैंसुर वाले कमरे की टी वी की ऊंची आवाज ने उसे फिर चौंकाया। उस आवाज के साथ कुछ और आवाजें आ रही थीं-

"यह तो साफ़ पता चल गया कि मंज़ली हमारे बस में नहीं है। हमने मंज़ला को लेकर जो जुआ खेला था, उसमें हार साफ़ नज़र आ रही है..?" यह ससुर था।

"मैं तो कहता हूँ, रस्सी का फंदा बना, उसकी गले में डाल छत पर लटका दो...!" यह उसका भैंसुर था।

"लटकाने-फटकाने में देर लगेगी, कल शाम चूल्हे के सामने किरोसिन डाल उस पर माचिस मार दो..!" सास की मंशा सुन मेघना सिहर उठी थी। उसके पति ने उन लोगों का सिर्फ़ हां में हां मिलाया। अपने से कुछ कहा नहीं। एक दम गधा के माफिक!

बाकी रात मेघना सो नहीं सकी। सांस रोके और कान खड़े कर बिस्तर पर पड़ी रही।

अगली शाम मेघना ने पेट दर्द का बहाना बना अपने कमरे में पड़ी रही। राधा घर में उसने कदम ही नहीं रखा। रात का खाना भी नहीं खाया उसने और हिरणी की भांति कान खड़े रखी। आखिर भेड़ियों के बीच ही तो वो घिरी हुई थी। रांधा घर से बड़ी गोतनी की बकबक उसके कमरे तक आ रही थी। लेकिन मेघना की तो जान पर आ पड़ी थी। वो रात भी बड़ी मुश्किल से कटी।

दूसरे दिन अपने ऊपर मंडराते खतरे की बात उसने लेबर आफिसर को बतायी और खतरे की वजह भी। "डरो नहीं मेघना, सुना है तुम बड़ी दिलेर और साहसी भी हो। तुम्हें भयभीत कर

वे लोग अपना मक़सद पूरा करना चाहते हैं। चिंता न करो, पूरा आफिस तुम्हारे साथ है..!" सिंह साहब ने बेटी की तरह उसे हिम्मत दी थी।

उस दिन के बाद ऐसी फिर कई रातें आयीं, जब मेघना ठीक से सो न सकी। उधर बकर चरवाहा पति देर रात नशे में धुत होकर आता, कभी खाता, कभी सो रही मेघना को ही भकस कर सो जाता। इस मिलन में न प्यार था, न गुलकंद! ऐसी ही एक बेस्वाद जिंदगी जीने पर मेघना को बाध्य कर दिया गया था।

तभी वह अजीब घटना घटी थी। उस शाम उसके पति ने कुछ ज़्यादा ही पी रखी थी। घर पहुंचते ही उसने मेघना को छत पर चलने को कहा। वह चुपचाप उसके साथ छत पर चली गई। न जाने पर कहीं उसका जालिम पति आँगन में ही पीटने न लगे। नोमिनी के सवाल पर पति के हाथों वह अब तक दो बार पिट चुकी थी। सो उसने जाने से मना नहीं किया।

ऊपर छत पर उसके पति लखपत ने कहा "इस घर में तुम्हें कोई पसंद नहीं करता है। माँ बाप मेरी दूसरी शादी के कर देना चाहते हैं। पर तुम्हारे जिंदा रहते, दूसरी शादी संभव नहीं है। इसीलिये तुमको आज मरना होगा..!" और वह मेघना को छत से नीचे धकलने के लिए आगे बढ़ा। मेघना डर से काँप उठी। उसने खुद का बचाव करने का प्रयास किया। तभी शराब के नशे में डूबा लखपत का पांव लड़खड़ाया। वह संभल न पाया और खुद छत से नीचे गिर गया। मेघना स्तब्ध खड़ी की खड़ी रह गई थी।

उनके सास ससुर आँगन में खड़े, उसके गिरने का इंतज़ार कर रहे थे। पुतोहू की जगह बेटे को गिरा देख, उनके होश उड़ गए। जब तक डॉक्टर आये, लखपत की जीवन लीला समाप्त हो चुकी थी। पुलिस आई। मेघना ने साफ-साफ़ कह दिया। पति उसे छत से नीचे फेंकना चाहता था। काफी शराब पी रखी थी। खुद गिर कर मर गया। उसने उसी रात ससुराल छोड़ दी और अपने माँ के पास चली आई।

इस घटना के पूरे छह साल हो चुके थे। पति की उस अस्वाभाविक नियति पर मेघना न दुखी थी और न हतप्रभ! आखिर एक शराबी का अंत कुछ इसी तरह होना था। पति की मौत से वह दुःखी इसलिए नहीं थी क्योंकि उसे कभी अपने पति से सम्मान या प्रेम नहीं मिला था। ससुराल जाने के बाद से ही समझ गयी थी वह कि सारे सम्बंधों की बुनियाद उसे हर माह मिलने वाली तनख्वाह ही है। फिर नोमिनी को लेकर उठे विवाद से वह और भी विरक्त

हो चुकी थी। ससुराल की दहलीज से पांव बाहर रखते समय उसके पांव एक बार कांपे जरूर थे, और वह समझ नहीं सकी थी कि वह भाग्यशाली है या दुर्भाग्यशाली! वह ससुराल छोड़ते समय उसे तीन माह का गर्भ था, जहाँ से गर्भ का मीठा-मीठा मोह शरीर पर महसूस होने लगा था, वहीं से एक अदृश्य शक्ति का संचार भी महसूस किया था उसने।

"क्या हुआ मेघना, एक दम से खामोश हो गई। चाय पीने बोल कर कैटीन में बुलाना तुम्हें बुरा लगा..?"

सोच से बाहर निकली तो वह सुधीर बाबू की बातों में उलझ गई। यूँ तो ऐसे प्रस्तावों की आदी हो चुकी थी वह, पर सुधीर बाबू में उसने कुछ अलग ही देखा था- मर्दों की काम-लोलुपता और स्वार्थ से अलग।

"नहीं सर..! जीवन की कुछ कड़वी यादें- याद आ गयी थीं..!" उसने समान्य होने की कोशिश की थी।

उसे पता था कि सुधीर बाबू की एक पत्नी है और इकलौती बेटा के साथ तीन साल से मायके में रह रही थी। इसे लेकर सुधीर बाबू के जीवन में बड़ा उथल-पथल हो रहा था। सुधीर बाबू की पत्नी अलग घर में रहना चाहती थी। और सुधीर बाबू माँ भाई को बेसहारा छोड़ पत्नी के प्रस्ताव को मानने को तैयार नहीं थे। गुस्से में पत्नी ने

सुधीर बाबू और ससुराल दोनों ही छोड़ माँ बाप के घर में पड़ी हुई थी। सुधीर बाबू की माँ उनकी दूसरी शादी करने पर जोर दे रही थी। लेकिन पहली पत्नी के रहते दूसरी शादी में दिक्कतें आ रही थीं। तो क्या सुधीर बाबू का यह चाय पीने का प्रस्ताव उसी कड़ी का हिस्सा है..? मेघना का सर चकराने लगा था। तभी सुधीर बाबू ने प्रस्ताव रखते हुए कहा था "मेघना, मेरे जीवन में बड़ा उदासीपन है, न उल्लास है, न किलकारी है, अब जीवन का सफ़र अकेले काटना मुश्किल लग रहा है, क्या तुम मेरा हमसफ़र बनना पसंद करोगी..?"

"सर, आपका हमसफ़र बनना मेरे लिए सौभाग्य की बात होती, पर यह संभव नहीं है, हाँ एक अच्छे दोस्त बनकर आपके साथ चलने में हमें कोई एतराज नहीं होगा..!" इसी के साथ मेघना उठ खड़ी हुई। कहा "सर, अब हमें चलना चाहिए, पोस्टमैन को चिट्ठी भी देनी है...!"

सुधीर बाबू ने एक गहरी सांस ली और उठ खड़े हो गये थे। आगे कुछ भी कहना अब फिजूल था।

—मुंगो, गुंजरडीह, बोकारो, झारखंड – 829132

मो. 6204131994

कविताएँ



डॉ. जसप्रीत कौर फ़लक

मकान न.-11 सैक्टर 1-A

गुरु ग्यान विहार, डुगरी, लुधियाना,

पंजाब पिन - 141003

मो. 9646863733

ई मेल- jaspreetkaurfalak@gmail.com

जुर्म तेरा था

कि मेरा था

जो मायूस लम्हों ने

हमें दिया

जुदाई का श्राप

अब तू भी चाहे

अब मैं भी चाहूँ

मगर हो नहीं रहा

रूह से रूह

का मिलाप।

अतीत की यादों को

याद कर

कोई फ़ायदा नहीं है

रोने से

यही मशवरा है

उन यादों को

बाँध दो

फ़लक की नीली चादर

के कोने से।

मैंने जितने बुत तराशे थे

मुहब्बत के माज़ी में

इक - इक कर के तोड़ रही हूँ

अब सीने पे पत्थर रक्ख कर

उन का पीछा छोड़ रही हूँ

कभी थी इनकी कितनी क्रीमत

आज मगर है इन से वहशत

माज़ी की धुंधली तस्वीरें

कभी थीं दिल की जागीरें

एक धुंधलके से निकली हूँ

जीवन को मैं अब समझी हूँ

जीवन का रुख मोड़ रही हूँ

कविता से रिशता जोड़ रही हूँ

जीवन धारा मोड़ रही हूँ...।

## पिघलती शिलाएँ



रेखा शाह आरबी

रात की पीड़ा संझैया जानती है, कि कैसे-कैसे उजाले का साथ छोड़कर अंधेरे में बदलना पड़ता है, कतरा-कतरा अपने अंदर अंधेरे को आत्मसात करना पड़ता है, रात और बिना किसी मज़बूत सहारे की स्त्री दोनों की स्थिति ही विकट होती है, दोनों एक भोर की आस में जीते जाते हैं,

किसी को उजास आसानी से मिल जाता है और किसी के प्रतिक्षा जीवन पर्यंत चलती रहती हैं,

कल्याणी का जीवन भी ऐसा ही था, जब उसके पति महेंद्र बाबू गुजरे तो वह ऐसी अंधेरी रात में उलझ गयी जहां से उसका निकलना असंभव लगता था, अकेलापन, अवसाद, अपनों की उपेक्षा, आर्थिक असुरक्षा ने उसका जीवन नर्क से बदतर बना दिया था। यह सब ऐसे दुख थे जो लगता था कभी-कभी कल्याणी की जान ले लेंगे।

लेकिन दुःख किसी की जिंदगी नहीं लेते बल्कि ऐसे हालात बना देते हैं कि मौत वरदान लगने लगता है। कल्याणी को भी तो ऐसा ही लगने लगा था।

साथ में चार छोटे-छोटे बच्चे उसे एक आशा दिलाते थे कि एक दिन सबकुछ ठीक हो जाएगा। कल्याणी को आशा थी कि जिस दिन बच्चे बड़े हो जाएँ उस दिन उसका सारा दुख दूर हो जाएगा, लेकिन उस समय और उसके बीच बहुत लम्बा फासला था।

उसके पास इतना समय नहीं था कि वह अपने पति महेंद्र के जाने का अवसाद बाहर निकाल पाए, या फूट कर रो पाये, कभी-कभी रोना कितना ज़रूरी होता है यह नहीं रो पाने की स्थिति को झेलने वाला ही व्यक्ति जानता है, कल्याणी जानती थी कि सबसे बड़ा दुख यही होता है कि रोने का भी अवसर न मिले, उसके बाद जो अंदर गुब्बार इकट्ठा होता रहता है वह मौत से भी बदतर होता है।

पति के जाने का विलाप करने का अधिकार भी उन्हीं स्त्रियों को मिलता है, जिनके पीछे परिवार सबलता से खड़ा रहता है, उन

स्त्रियों को कहां से मिलेगा जिन्हें पुरुष के जाते ही अपने कांधे पर सारा भार उठा लेना है।

कल्याणी को भी रोने का अधिकार नहीं मिला क्योंकि चार भूखे मुंह उसकी तरफ बड़ी आशा से देखते थे। और उसके जीवन का लक्ष्य उनका पेट पालना ही था और उन्हें जीवन देना ही था। उसके पास विलाप करने का समय नहीं था।

कल्याणी बहुत अच्छे से जानती थी कि जब भूख से बच्चे बिलबिलाते हैं, तो मां को कैसा लगता है। एक औरत अपने भूखे बच्चों की भूख शांत करने के लिए अपना सबसे कीमती जिस्म भी दाँव पर लगा देती है। कल्याणी ने अपना जिस्म तो बचा लिया लेकिन अपना स्वाभिमान बहुत बार दाँव पर लगाया, कभी अपनों के आगे तो कभी गैरों के आगे।

कई बार तो जीवन में ऐसे भी क्षण आए जब कल्याणी को लगता था कि जीवन से मृत्यु बहुत ही सरल है, लेकिन जब चारों बच्चों का चेहरा अपने में देखती थी, तब यह सोच भी पलायन कर जाती थी, इन सब से निकलने में उसकी पूरी जवानी निकल गई।

अपनी इच्छा-स्वेच्छा, सुख-दुख सब ईश्वर द्वारा ही निर्धारित होता रहा, उसने तो कभी अपने लिए कुछ निर्धारित ही नहीं किया।

और बच्चे जब कमाने धमाने लायक हो गए तो जीवन के एक अलग ही कटु अनुभव का स्वाद उसे मिला। उसे धरातल ने सच्चाई का धीरे-धीरे एहसास करवाया कुछ वक्त ने करवाया, और कुछ अपनी ही औलाद ने कराया।

जब पति बीच रास्ते में साथ छोड़ जाए, बेटे की कमाई पर जिंदा रहना पड़ता है, तो धरातल की सच्चाई बहुत ही कड़वी हो जाती है, बहुत ही बुरी हकीकत से सामना होता है, जिसका दर्द किसी से कहा भी नहीं जा सकता और चुपचाप बर्दाश्त भी नहीं किया जा सकता।

कल्याणी के चार बेटे जिसमें सबसे बड़ा मोहन था, उसके बाद सोहन उसके बाद रोहन और टोनी सबसे छोटा था, मोहन की शादी हो चुकी थी और उसके दो बेटे थे, एक पांच साल का और एक अभी तीन साल का था, कल्याणी की सबसे बड़ी चिंता मोहन ही था। जाने किस तरह पीने की लत लगा लिया था, जो उसकी बर्बादी का कारण था।

शुरुआत में छुप-छुप कर पीता था और बाद में खुलेआम पीने लगा, पति के बाद स्त्री को बड़े बेटे से ही सारी उम्मीदें होती हैं लेकिन उसकी हरकतें देखकर वह रही सही आस भी जाती रही।

घर में मात्र एक कपड़े की दुकान थी, जिसकी कमाई से पूरे घर का खर्च चलता था, कल्याणी ने बहुत ही जतन करके मोहन के लिए दुकान खुलवाई थी, लेकिन जब मोहन सारे पैसे पीकर उड़ाने लगा तो कल्याणी को फिर से आर्थिक असुरक्षा का भय सताने लगा।

तब घर की स्थिति समझ कर कल्याणी ने मोहन को दुकान से हटाकर सोहन के हवाले कर दिया, सोहन ने दुकान संभाल ली और दिन-रात मेहनत करके दुकान को अच्छी स्थिति में लाया, आज दुकान संभाले सोहन को तकरीबन दो साल हो गया था, और वह इतने बड़े परिवार के खर्च से परेशान होकर अपनी मां पर झल्ला रहा था।

आँगन में बैठकर रोटी खाते हुए सोहन भरपेट खोने के बाद बोला-" जिसको जहां से अपना पेट भरना हो भरे.. मैं रोज-रोज इतने लोगों का पेट भरने का जिम्मा नहीं लिया हूँ.. और ना ही दूसरों के बच्चों को पालने का ठेका लिया हूँ.. खुद तो पी के धुत रहते हैं और उनके बच्चे को पाले हम"।

कल्याणी सुनकर भी अनसुनी बनी रही आखिर वह बोलती भी तो क्या बोलती बात तो सच ही थी आखिर एक भाई दूसरे भाई की औलाद को कहां तक और कितना पाले। जब पैदा करने वाले पिता को ही अपनी जिम्मेदारी का एहसास नहीं है तो बच्चों की दशा तो कुत्ते बिल्ली जैसी होनी ही थी।

मानवता और संवेदना कहने सुनने के लिये अच्छा शब्द है, पर जहाँ भूख मुँह बाये खड़ी हो वहाँ इसके मायने कोई नहीं रह जाते।

आँगन में ही लकड़ी के चूल्हे पर रोटियाँ बनाते हुए मोहन की पत्नी पुष्पा सारी बातें सुन रही थी, पुष्पा अंदर से भयभीत हो रही थी, सोहन की बातें उसे शर्मसार करने के साथ ही उसकी बेबसी को नंगा कर रही थीं।

चूल्हे पर जैसे मध्यम आंच पर रोटी सिक रही थी। वैसे ही धीमे-धीमे उसका दुख भी उसे ऊपर से तपा रहे थे। उसी तपन को बढ़ाने का काम सोहन की बातें कर रही थीं।

लेकिन वह क्या कहे किससे कहे, जब अपना पति ही नकारा निकल जाए, तो और किसी को क्या दोष देना।

वह सोच रही थी अगर घर वालों ने हाथ खींच लिया तो मैं दोनों बेटों को लेकर कहां जाऊँगी, उनसे तो कुछ कहना बेकार ही

है, हजार बार तो समझा के थक चुकी हूँ। ना पीना छोड़ा ना अपनी जिम्मेदारियां का एहसास हुआ।

मायके और ससुराल के सहयोग से अब तक तो किसी तरह गाड़ी आगे बढ़ती रही लेकिन कितनी आगे बढ़ेगी कहाँ नहीं जा सकता।

आज पुष्पा को अपने अनपढ़ होने का बहुत ही एहसास हो रहा था, अगर कुछ पढ़ी लिखी होती तो शायद कहीं काम भी कर लेती जिससे दो पैसे कमा लेती। दिन भर तो इस घर में भी काम करती है, लेकिन भला घरेलू काम का क्या मोल होगा; दिन कैसे चौका बर्तन और कपड़े-लते धोने में निकल जाता है, दिन का तो पता भी नहीं चलता था, रात को बिस्तर पर जाने पर हाथ पैर सारे दर्द करने लगते, लेकिन पुष्पा को पता था कि पति भी काम नहीं करता और मैं भी काम नहीं करूंगी तो रोटी कौन देगा। इसीलिए कभी थकान का नाम भी अपने जुबान पर नहीं लाती थी। कभी नहीं कहती कि 'मैं थकी हुई हूँ मुझसे यह काम नहीं होगा' पत्नी के दुःख-सुख को देखना तो पति का काम होता है। लेकिन पति की वजह से ही तो यह सब सहना पड़ रहा था।

सारे दुःख आँखों से आँसू बनकर चुपचाप बह रहे थे, दूर खटिया पर बैठी कल्याणी से ना बहू का उदास चेहरा छुपा था, ना उसके आँसू छुपे थे। दोनों की ही पीड़ा एक सी थी, एक का पति नहीं था और एक का होते हुए भी किसी काम का नहीं था।

दोनों एक ही कशती की सवार थी कल्याणी की कशती किनारे बेटों के भरोसे लग चुकी थी, लेकिन पुष्पा की कशती अभी अधर में भँवर में जूझ रही थी।

शाम को बिस्तर पर कल्याणी पहुँची तो नींद आँखों से दूर थी, कल्याणी की असल चिंता तो कुछ और थी, कल्याणी को सबसे ज्यादा चिंता तो इस बात की थी, कि जब सोहन की ही सोच यह है तो कुछ महीनों में सोहन की शादी होने वाली है, उसके बाद क्या होगा, तब तो पूरा परिवार ही तहस-नहस हो जाएगा जब उसकी पत्नी अपना-अपना देखेगी और आखिर ऐसा क्यों नहीं होगा।

कितने दिन यह घर चल पाएगा ? एक बेटा नशेड़ी निकल गया, दूसरे को सारे लोग भार लग रहे हैं, और जो बचे वह अभी छोटे हैं पढ़ रहे हैं। सारी रात करवटें बदलती रही। सुबह तक उसके मन में बहुत सारे विचार आते रहे अंत में जब बिस्तर छोड़ा तो वह कुछ निर्णय करके उठी थी।

सुबह-सुबह का वक्त था, चारों बेटे आँगन में ही थे, पुष्पा आँगन बुहार रही थी, कल्याणी उसके पास गई और उसके हाथ से झाड़ू लेकर फेंक दिया और बोली- "घर का काम बाद में होगा या

जिसको ज़रूरत होगी वह बनाकर खा लेगा, 'तुम' और अपने दोनों छोटे बेटों से बोली - "तुम दोनों साथ आओ मेरे" ।

सोहन बड़ा हैरान हुआ ।

कल्याणी पुष्पा और अपने दोनों छोटे बेटों को लेकर घर के पीछे खाली पड़ी जमीन पर लेकर आई थी, जो ऐसे ही बिना देख-रेख के झाड़ियाँ और खरपतवार से भरा था, उसकी सफाई करवाने लगी, पुष्पा और रोहन, टोनी को भी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर इस खाली पड़ी ज़मीन को मां क्यों साफ करवा रही है ।

कुछ ही देर में सोहन झल्लाया हुआ वहीं पर चला आया और कल्याणी से बोला- " मां क्या इस बेकार के काम में लगी हुई हो और भाभी को भी लगाई हुई हो.. घर चूल्हा चौका और रसोई के लिए देरी होगी तो मैं दुकान कैसे जाऊंगा" ।

कल्याणी-" तुम कैसे जाओगे क्या खाकर जाओगे यह तुम जानो, "मैं जानू इसका क्या मतलब खाना बनाना भाभी का काम है" ।

"लेकिन बेटा उस काम को काम मानता कौन है तुम्हें तो यही लगता है कि पुष्पा और उसके बेटे इस घर में हराम की खाते हैं" ।

सोहन थोड़ा सा झंप गया लेकिन फिर बोला-" वह तो मैंने भैया के लिए कहा था"

"अब तुमने किसके लिए कहा था.. किसके लिए नहीं कहा था.. यह तो तुम जानो.. लेकिन पुष्पा तो जब घर के काम करती है.. तो सारे लोगों के करती है... वह कभी नहीं कहती कि मैं अपने पति का करूँगी बाकी लोगों का नहीं करूँगी" ।

"अब आगे क्या.. क्या भाभी आज से घर के काम नहीं करेंगी?"

" बेटा जब पैसा कमाना ही काम है तो पुष्पा भी पैसे कमाने के लिए ही कुछ करेगी कि उसके काम को काम के रूप में गिना जाए.. ताकि उसके और उसके बच्चे के खाने पर ताने ना मारे जाएँ" ।

सोहन की नज़रे ज़मीन में धंस गईं और बहुत ही धीमी आवाज़ में बोला-"लेकिन फिर भी खाना पानी कोई तो बनाएगा ?"

" देखो बेटा.. मैं तो बुढ़ी हो चुकी हूँ ..रसोई पानी अब मेरे बसकी बात नहीं है, पुष्पा ने इतने सालों से संभाल रखा था... किसी को किसी बात की परेशानी नहीं होने दी... हम सब मिलकर कमाते थे तो यह उस कमाई को घर में बहुत ही जतन से संभाल कर खर्च करती थी ..अब जाहिर सी बात है पुष्पा भी अपना काम करेगी तो.. पहले के इतना घर का सारा काम तो नहीं कर पाएगी ..यदि अपने काम में व्यस्त हो जाए तो रसोई पानी में भी तुम लोगों को उसकी

मदद करनी पड़ेगी.. क्योंकि इतने लोगों का सारा काम वो अकेले अपना काम देखने के बाद नहीं कर पाएगी ..जैसे आज नहीं कर पाएगी, आज तुम सब मिलकर रसोई पानी देख लो" । कल्याणी बहुत ही शांत लहजे में बोली ।

जिस काम को वो काम ही नहीं गिनता था उस काम को करने की बात सुनकर झल्ला पड़ा, क्योंकि इतने लोगों का खाना पानी बनाना अकेले उसके भी वश की बात नहीं थी ।

" और सोहन कल तुमने कहा था कि तुम सभी का खर्चा नहीं उठाओगे, लेकिन बेटा दुकान तुम्हारी अकेले की नहीं.. और ना ही तुम अकेले संभालते हो.. उसमें तुम्हारे छोटे भाई और मैं भी मदद करती हूँ, उसमें तुम्हारे भाइयों का भी हक है.. तो छोटे भाइयों का तो खर्च तुम्हें चलाना ही होगा और रही पुष्पा और उसके बच्चों की बात.. तो पुष्पा भी अब अपना काम करेगी और दो पैसे अपने परिवार के लिए कमायेगी" ।

सोहन तंज से हंसते हुए बोला-" अच्छा और वह कैसे?"

" मैं पुष्पा के लिए यहां पर एक छोटी-मोटी गौशाला खोलुंगी जिसकी देखरेख वह करेगी और उससे हुई आमदनी से अपने परिवार को पालेगी " ।

" अच्छा तो गौशाला खोलने के लिए कुछ पूंजी भी लगती है वह कहां से आएगी?"

" इसकी चिंता तुम मत करो मैंने अपने बुढ़ापे के लिए कुछ पैसे संभाल के रखे हैं उन्हीं पैसों से मैं यह गौशाला खोलने जा रही हूँ" ।

" लेकिन वह तो अपने बुढ़ापे के लिए सुरक्षित रखे थे और उसे कभी खर्च नहीं करती थी.. और कल का क्या पता कभी आपको पैसों की ज़रूरत पड़ी तो आप तब क्या करेंगी " सोहन ने बहुत कुटिलता से अपना आखिरी दाँव फेंका ।

" जो होगा या नहीं होगा उसके डर के कारण किसी का पूरा जीवन मँझधार में नहीं झोंक सकती, क्योंकि तुम पुरुष हो तुम इस बात को कभी नहीं समझ पाओगे की असहाय होना क्या होता है, मैंने पूरा जीवन इसी डर में गुज़ारा है, और किसी और को उस डर का शिकार होकर मरने के लिए नहीं छोड़ सकती.. अगर मेरे एक डर छोड़ देने की वजह से किसी का जीवन संवर सकता है तो मैं इतना जोखिम उठाने को तैयार हूँ.. लेकिन इसके लिए कतई तैयार नहीं हूँ कि जीवन भर पुष्पा और उसके बच्चे दूसरे के द्वारा फेंकी हुई रोटियाँ खाकर अपना पेट भरें" ।

पुष्पा कृतज्ञ छलछलाई नेत्रों से अपनी सास को देख रही थी, अंदर भावनाओं का ज्वार हिलोरे ले रहा था, जब उससे भावनाएँ

अपनी नहीं संभाली गई तो वह उठकर अपने सास के पास आई और उसे गले लगा फफक-फफककर रो पड़ी।

और उसके रोने के कारण उसके मुंह से शब्द अवरूद्ध हो गये.. बस एक ही शब्द निकला "अम्मा"

कल्याणी पुष्पा की मनोदशा समझ रही थी.. वह पुष्पा से बोली-" अरे रोती क्यों है अभी मैं जिंदा हूँ.. चार बच्चों को जब कुछ नहीं था और कोई सहारा नहीं था.. तब पाल पोसकर बड़ा किया है.. अब तो मेरे पास इतने सारे लोग हैं ..अब मुझे किस बात का डर है.. जैसे चार को पाल पोसकर बड़ा किया वैसे एक तुझे भी समझ लूंगी कि मैंने पाल लिया.. ऐसे ही ना थोड़ी मैं अम्मा हूँ"। और अपने आँचल के कोर से उसके लोर पोंछने लगी।

सबसे छोटे बेटे को पानी दौड़कर लाने के लिए भेजा। टोनी पानी लेकर आया तो पुष्पा को देते हुए बोली-" ले पहले पानी पी.. रोने से सुरसुरी (हिचकी)चढ़ गई है तेरी"।

पुष्पा हिचकियों के बीच थोड़ा सा पानी पिया तो उसकी हिचकियां धीरे-धीरे थमने लगीं। अपने सास के इतने बड़े कलेजे और हौसले को देखकर अब उसके अंदर भी जीवन से लड़ने का भरपूर साहस जाग चुका था।

कल्याणी से मिले आगे के सुखद जीवन की आशा की किरण के कारण वह दुगनी ऊर्जा के साथ झाड़ियों को काटने साफ करने में लग गई, झाड़ियां काटने और उखाड़ने में चुभ रहे कांटे उसे

शुल के बजाय फूल की तरह लग रहे थे। अब उसे अपनी कशती का किनारा मिलने की आस जग चुकी थी।

इधर कल्याणी पुष्पा के आशान्वित चेहरे को देखकर मन ही मन प्रसन्न हो रही थी, भगवान का शुक्र है कि अब कोई फिर से कल्याणी बनकर नहीं जिएगी उसका जीवन दुःख के भँवर में उलझ कर नहीं रहेगा.. जिसे किसी दूसरे से आशा हो, बल्कि वह अपना आसमान खुद ही तैयार करेगी।

और मुंह घुमाकर अपने आँख के लोर को अपने आंचल में चुपके से पोंछ लिया।

उधर उत्सुकता वश आए दूर से सारी घटना को देख रहे पुष्पा के पति मोहन को भीतर से ग्लानि हो रही थी। जिसे कभी किसी बात से फर्क नहीं पड़ा आज उसकी आत्मा उसे धिक्कार रही थी। ना जाने क्यों आज पुष्पा के मासूम चेहरे का दुख उसे अन्दर तक वेध गया। उसे अपने आप से नफ़रत हो रही थी। जिस बात का आभास उसे माँ और पत्नी के तानों और बातों ने नहीं कराया उस बात का आभास आज के इस दृश्य ने उसे करवा दिया था, और दोनों के आँसुओं का जिम्मेदार वह खुद को मान रहा था यही उसकी ग्लानि का कारण था, और उसने मन ही मन अपनी गलती का प्रायश्चित्त करने का निर्णय ले लिया।

आज लगता था पुष्पा के दुःख की शिलाओ के पिघलने का दिन था, गनीमत था की ईश्वर ने थोड़ा सा देर तो किया पर अंधेर नहीं किया। **-बलिया (यूपी) व्हाट्सएप नम्बर -8736863697**

कविता

## कर्म का लेखा जोखा

आज तुम जैसे  
बात-बात में  
औकात पूछते हो?  
इंसानों से इंसानियत  
के जगह पर  
उसकी जात पूछते हो !  
पूछते हो मजहब, रंग, धर्म  
ऐसे ऊटपटांग सवालता  
पूछते हो !

तब क्या होगा !  
यदि आसमान पूँछले  
तुम्हारी जात ?  
यदि धरती पूँछ ले  
तुम्हारी औकात ?  
समंदर तुम्हारा रंग

देखकर डूबाए,  
पेड़ तुम्हारा ढंग देखकर  
फल ना दे पाए,  
हवा रोक दे तुम्हारी सांसे  
यदि उन्हें पसंद ना आए,  
तब क्या करोगे !  
कहां ले जाओगे  
अपने उन्माद की टोकरी,  
कहां रखोगे  
अपने अहंकार की मोटरी,  
क्या दहाड़ पाओगे  
इन सब पर,  
किस धरती पर बनाओगे  
अपनी झोपड़ी ?  
सारे ज्ञान धरे के धरे  
रह जायेंगे,

पागलों के जैसे  
सर पटकते घूमोगे  
भूल जाओगे सारी चौकड़ी,  
इंसान हो इंसान बन के रहना,  
वरना जन्नत- दोजक  
स्वर्ग- नरक का  
चक्कर छोड़ो  
इनको किसने देखा है !  
सारे कर्म कुकर्मों का  
यहीं होता लेखा-जोखा है,  
प्रकृति खुद सक्षम है  
सबका हिसाब करने को,  
हाथ की लकीरें  
बस लकीरें ही रह जाएंगी ,  
और तैयार रहना  
तड़प तड़प के मरने को,



रेखा शाह आरबी  
बलिया (यूपी)  
व्हाट्सएप नम्बर 8736863697  
ई मेल- rekhasahr@gmail.com



डॉ. चेतना उपाध्याय

## “मेरे देश की आवाज”

मेरा देश आगे बढ़ेगा, और बढ़ता ही जाएगा  
 हम छोटी छोटी जातियों में बंटते बंटते,  
 ढेर सारी जातियों वाला देश बनाएंगे  
 तेज़ी से फिर जातिवादी आरक्षण बढ़ाएंगे  
 आरक्षित वर्ग को अपना देश सौंपकर  
 सवर्ण सारे हिमालय की कंदराओं में बस जाएंगे  
 मेरा देश आगे बढ़ेगा, और बढ़ता ही जाएगा ।  
 शिक्षा व्यवस्था आरक्षित वर्ग अपने रूप में ढाले  
 चिकित्सा महकमा पूरा आरक्षित वर्ग के हवाले  
 देश सेवा आरक्षित कर्णधारों के होगी सहारे  
 विकास की धारा आरक्षण के बलबूते आगे बढ़ेगी  
 आरक्षित वर्ग को अपना देश सौंपकर  
 सवर्ण सारे हिमालय की कंदराओं में बस जाएंगे  
 मेरा देश आगे बढ़ेगा, और बढ़ता ही जाएगा ।  
 कल कारखाने सब आरक्षित वर्ग सम्हालेगा  
 यातायात व्यवस्था आरक्षित संवर्ग संवारेगा  
 सड़क निर्माण, रखरखाव आरक्षित वर्ग निखारेगा  
 जल थल वायु सेना सब बढ़ेगी आरक्षण के सहारे  
 सवर्ण योग्यता आधार पर हिमालय के सर्वोच्च शिखर पर  
 अपना स्थान पाएंगे आरक्षण को फिर कोस ना पाएंगे  
 सवर्ण सारे हिमालय की कंदराओं में बस जाएंगे  
 मेरा देश आगे बढ़ेगा और बढ़ता ही जाएगा ।

49, गोपाल पथ कृष्ण विहार, कुंदन नगर, अजमेर, राजस्थान  
 मो. 9828186706

## स्त्री

कमजोर हो जाती है  
 पर लाचार नहीं  
 वह स्त्री है  
 सब कुछ त्याग देती है  
 अपने परिवार के लिए  
 क्योंकि उसके लिए  
 परिवार ही सब कुछ है  
 उसकी उम्मीद  
 उसके अरमान  
 उसके सपने  
 उसकी ख्वाइशें  
 उसकी अपनी अलग दुनियां

\*\*\*

जब मैं पैदा हुई तो सुना  
 काश!लड़का होता तो वंश आगे बढ़ता  
 काश!लड़का होता तो बुढ़ापे का सहारा बनता  
 काश!लड़का होता तो नाम रोशन करता  
 ना जाने इस काश!में मैं कहां गुम हो गई  
 मेरा अस्तित्व बनने से पहले ही ओझल हो गया  
 मेरी पहचान धुंधली सी पड़ गई  
 मेरी मुस्कान मुरझा सी गई  
 फिर मेरे मन में एक ही बात आई  
 काश!मैं पैदा ही ना होती तो बेहतर था

\*\*\*

मैं चीख हूँ स्त्री अंतर्मन में सदियों से कैद हूँ  
 पर अब मैं आजाद होना चाहती हूँ  
 सारी पीड़ाओं को साथ लिए  
 बाहर निकलना चाहती हूँ  
 ताकि स्त्री मन को शांत कर सकूँ  
 सदियों की इस चुप्पी को तोड़ सकूँ  
 क्योंकि मेरे धैर्य का बांध  
 टूट कर बिखर गया है  
 उन टूटे बिखरे अवशेषों पर  
 मेरे सन्न का इम्तिहान लिखा हुआ है



डॉ. सपना दलवी  
 धारवाड़ (कर्नाटक)  
 मो. 8050342519

## पहाड़ों की कराह और प्रकृति का तांडव



अरविंद कुमारसंभव

हिमालय पर्वतमाला कुछ वर्षों से बेचैन है और आंदोलित है। लगातार चल रहे भूस्खलन तथा अनियंत्रित बाढ़ ने वहाँ कहर मचा रखा है। पहली ही नज़र में वहाँ पारिस्थितिकी असंतुलन के चिन्ह दिखाई देते हैं जो प्रकृति प्रदत्त न होकर मानव द्वारा स्थापित किये गये हैं।

पिछले अनेक दशकों से हिमालयी क्षेत्र में बड़ी संख्या में अवैज्ञानिक तरीके से निर्माण एवं खनन कार्य हुये हैं। इस क्रम में भारी मात्रा में वृक्षों की कटाई हुई है तथा बारूदी विस्फोटकों से सड़क, बांध निर्माण हेतु पहाड़ों को काटा गया है। इन दो प्रमुख कारणों से पत्थर, जल, मिट्टी का आपसी प्राकृतिक जुड़ाव लगातार कमजोर होता गया और उसी अनुपात में पहाड़ों में धंसाव होता गया। जोशीमठ क्षेत्र में पड़ी दरारें इसी पारिस्थितिकीय तंत्र की विफलता की कहानी है। इस विषय में चिंतन करते समय हमें भारतीय उपमहाद्वीप के सतत जीवन प्रवाह को इन आठ बिंदुओं से समझने की आवश्यकता है।

1. उत्तर भारत की तराई और मैदान जिस रेत से बने हैं वह रेत हिमालय के ग्लेशियरों से निकली नदियों से बने हैं।
2. हमारे समस्त खेत और पेय जल स्रोत इन्हीं नदियों के जल पर आश्रित है।
3. हमारी झीलें, भूगर्भ जल, तालाब, वृक्ष, झाड़ी वृहद मानसून चक्र के बादलों पर आधारित हैं जो ग्रेट हिमालय की चारदीवारी के कारण उत्तरी एशिया में न जाकर भारत में ही बरस जाते हैं।
4. यहां उगने वाली वनस्पति हमें आयुर्वेदिक प्राणरक्षक जड़ी बूटियां उपलब्ध कराती हैं और विशाल वृक्ष हमें निर्माण एवं अन्य कार्यों के लिये लकड़ी, ईंधन प्रदान करते हैं।
5. यहां से चलने वाली हवा और शीत आँधी हमारे आकाशीय पर्यावरण को संतुलित करती है।
6. यह हजारों वर्षों से भारत वर्ष की उत्तरी प्राकृतिक सीमा है जिस कारण विदेशी आक्रांताओं व लुटेरों से भारत इस दिशा से बचा हुआ है।

7. महान हिंदु सनातनी सभ्यता के मूल अध्यात्म का केंद्र शताब्दियों से यही हिमालय ही रहा है। यहां की गुप्त कंदराओं में बैठकर ही तप और ध्यान द्वारा हमारे प्राचीन मनीषियों ने अद्भुत धर्म ग्रंथों की रचनाएँ कीं और विश्व के लोगों को ज्ञानमय बनाया। इसी की गोद में भारत के प्रधान अराध्य देवालयों का निर्माण हुआ जहाँ आज भी लाखों भारतीय प्रतिवर्ष अराधना के लिये पहुँचे हैं।

8. मध्य काल में जब पश्चिमी सीमा से विदेशी आक्रांता भारत में घुस कर यहां की सनातन संस्कृति को नष्ट भ्रष्ट कर रहे थे तब इस हिमालय की गोद में बसने वाले नागरिकों ने ही भारतीय संस्कृति को सुरक्षित एवं अक्षुण्ण रखा।

तो ऐसे महान ईश्वर समान हिमालय की हमने और हमारे लालची और अदूरदर्शी शासकों ने शनः शनः क्या दशा कर दी इसे भी आज समझ लें।

1. हिमालय को तथाकथित विकास के नाम पर लूट का अड्डा बना दिया और चौड़ी चौड़ी आल वेदर सड़के बनाकर सम्पूर्ण मध्य हिमालय को डायनामाइट के विस्फोटों से चीर चीर कर दिया जिसके फलस्वरूप ढीले होते पहाड़ खिसकने लगे और विनाश होने लगा।

2. अवैज्ञानिक तरीके से हिमालय में बहने वाली सदानीरा नदियों के प्राकृतिक प्रवाहों को रोक कर बाँध बना दिये गये जिसके कारण बाढ़ और बादल फटने के गंभीर मामले रोज सामने आने लगे। टिहरी बाँध का निर्माण सबसे खतरनाक कार्य था जो नहीं होना चाहिए था। भागीरथी, काली और इनकी सहायक नदियों पर बनाये गये छोटे बड़े बाँधों ने पहाड़ के भूगर्भीय संतुलन को बिगाड़ दिया है।

3. अवैध खनन और अवैध वनकटाई के राजनेताओं के समर्थन से बढ़ते मामले हिमालय की दुर्दशा पर शासन प्रशासन और लोगों का अंतिम क्रूर प्रहार है, वृक्ष कटने से पहाड़ पर जमी मिट्टी की पकड़ कमजोर हो गयी और पहाड़ गिरने के मामले बढ़ने लगे।

4. पलायन- रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल इन चार अत्यावश्यक जरूरतों के अभाव में हिमालय के गाँव के गाँव खाली होते जा रहे हैं और वहाँ की जमीन बंजर होती जा रही



है। उत्तराखण्ड सरकार द्वारा गठित पलायन आयोग की रिपोर्ट के अनुसार उत्तराखण्ड के 16000 गाँवों में से 3000 गाँव इसी पलायन संकट के कारण या तो पूर्ण रूपेण या आंशिक रूप से खाली हो चुके हैं और यह सिलसिला तेजी से जारी है।

5. हरे घास के मैदानों ( बुग्याल) की समाप्ति- पहाड़ की जान यहाँ ऊँचाई पर स्थित हरे घास के मैदान होते हैं जहाँ उनके पशु चराई करते हैं और उन पशुओं से उन्हें दूध, घी, ऊन, मांस व चर्म मिलता है। सूखते सुकड़ते ग्लेशियरों और भूस्खलन के कारण ये एक के बाद एक समाप्त होते जा रहे हैं। इस वजह से न केवल पर्यावरण क्षतिग्रस्त हो रहा है बल्कि पशुपालक भी अपने परंपरागत स्थान छोड़ कर जा रहे हैं।

6. ग्लोबल वार्मिंग के कारण जिन ग्लेशियरों से उत्तरी पश्चिमी भारत में बारहों मास बहने वाली नदियां निकलती हैं वे ग्लेशियर लगातार सिकुड़ते जा रहे हैं जिसके कारण नदियों में पानी की कमी आ गयी है। गंगा को पानी देने वाला भागीरथी ग्लेशियर ही इन 50 वर्षों में 5 किलोमीटर पीछे खिसक गया है।

7. हिमालय को अध्यात्म पर्यटन की जगह पैसे कमाने के लालच में बाहर के पर्यटकों के लिये आमोद प्रमोद की जगह बना दिया गया है। यह मनोरंजन पर्यटन हिमालय के पर्यावरण और यहां की संस्कृति को दूषित कर रहा है। धार्मिक स्थलों पर पर्यटकों के आवास के लिये अनगिनत बहुमंजिला होटल आदि बनने से भी हिमालयी तंत्र को नुकसान पहुंचता है। इन्हीं पर्यटकों द्वारा लाये तथा छोड़े गये प्लास्टिक कचरे के कारण पर्यावरण को अपूरणीय क्षति पहुंच रही है। रही सही कसर ऊपरी मध्य हिमालयी पर पर्यटक हेलीकॉप्टर उड़ा कर पूरी की जा रही है जिसके कंपन से पहाड़ की चट्टाने और ग्लेशियर की बर्फ ढीली होकर खिसक रही हैं। हिमालय क्षेत्र में बढ़ते धार्मिक पर्यटन से पारिस्थितिकी असंतुलन का भी खतरा बना हुआ है।

मई से अक्टूबर तक का समय मध्य हिमालय क्षेत्र में चार धाम, अमरनाथ सहित अनेक धार्मिक स्थलों की यात्रा का समय होता है जिसमें धार्मिक और मनोरंजन पर्यटन के लिये यात्री एवं पर्यटक एक बड़ी संख्या में इन क्षेत्रों की यात्रा करते हैं। हाल के वर्षों में और विशेषकर गढ़वाल क्षेत्र के चार धामों हेतु यह प्रवृत्ति बहुत तेजी से बढ़ी है और यात्रा के साधन सहजता से सुलभ होने के कारण पूरे भारत और विदेश से भी सभी उम्र के स्त्री पुरुष यहाँ पर आने लगे हैं। यह एक तरह से तो स्थानीय लोगों के रोजगार एवं आय का बेहतर समाधान है तथा सरकार को भी कर के रूप में भारी आमदनी होती है और साथ ही इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण का रास्ता भी खुलता है।

किंतु इसका एक दूसरा एवं बहुत ही चिंताजनक पहलू भी है जिसकी तरफ़ ना तो सरकार का और ना ही नागरिकों का ध्यान जा रहा है। समूचा हिमालयी तंत्र बेहद नाजुक पारिस्थितिकी संयोजन से बना हुआ है और एक सीमा से बाहर इससे छेड़छाड़ करने पर बहुत ही पर्यावरणीय विनाश की परिस्थिति उत्पन्न हो सकती है और इस नुकसान की भविष्य में कभी भी प्रतिपूर्ति नहीं हो पाती है। पिछले दो दशकों में हम सब ने इस क्षरण को अपनी आंखों से देखा है और महसूस किया है। केदारनाथ आपदा, जोशीमठ धसान, भूकंप, अनपेक्षित रूप से बादलों का फटना, ग्लेशियरों का खिसकना और सिकुड़ना, बाढ़ आदि वो घटनाएँ हैं जो हमें इशारा कर रही हैं कि हम अभी भी संभल जायें और अवैज्ञानिक तरीके से पहाड़ों से छेड़छाड़ नहीं करें।

प्राचीन समय से ही बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री की यात्राएँ होती आई हैं और उन सब में एक अलिखित सा नियम रहता था कि अपने सभी पारिवारिक दायित्वों को पूर्ण करने के बाद ही कोई इन धामों की यात्रा करने का अधिकारी होता था। फलस्वरूप बहुत ही सीमित संख्या में यात्री यहाँ की यात्रा करते थे और चले जाते थे। आज हो यह रहा है कि बच्चे जवान वृद्ध सभी इन यात्राओं के लिये लालायित रहते हैं और मौके बेमौके इसके लिए निकल पड़ते हैं। यहां तक कोई एतराज की बात नहीं है। किंतु आपत्तिजनक बात यह है कि इनमें से अधिकांश विशेषकर युवा वर्ग ने इसे धार्मिक यात्रा से बदलकर मनोरंजन यात्रा या फिर कहे सेल्फी प्वाइंट में बदल दिया है और यही सोच इन स्थानों पर पड़ रही भीड़ का मुख्य कारण है। ये वो चार स्थान हैं जहाँ का पारिस्थितिकी तंत्र इतनी भीड़ को संभालने के लिए नहीं बना है और यह भीड़ भारी संख्या में दुकानों और होटलों के निर्माण का कारण बन जाती है जो हिमालयी पर्यावरण को भारी क्षति पहुँचा रहे हैं। इस भीड़ को ढोहने के लिये बड़ी संख्या में वाहनों की आवश्यकता होती है जिनसे निकले अथाह धुँआँ से हरियाली और आक्सीजन को क्षति पहुँचती है।

इन सब कारकों में एक सबसे बड़ा कारक विचारहीन राज्य और केंद्र सरकारें भी हैं जो मात्र पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए त्वरित लाभ हेतु सम्पूर्ण हिमालयी क्षेत्रों में काट छाँट करके फोर लेन, आल वेदर रोड़ और सुगंगे बनाये जा रही हैं।

अब इन सब नकारात्मक कार्यों का दुष्प्रभाव हमें दिखाई दे रहा है। चारों धामों में आने के लिये यात्रियों की अनियंत्रित भीड़ ने सभी मार्गों को जाम करके रखा हुआ है। यात्री रास्ते में यहां वहाँ 6-8 घंटे तक फंसे पड़े रहते हैं। मंदिर में दर्शनों के लिए लंबी-लंबी लाइनें लगी हुई हैं और कुछ ही सेकंड के लिये यात्री दर्शन कर

पाते हैं। अब अगले साल इस भीड़ का अनुमान लगाकर रास्ते में और अधिक होटल बन जायेंगे। ऊँची-ऊँची बहुमंजिला इमारतें जो अभी भी बन चुकी हैं, और ज्यादा तादाद में बनने लगेंगी। हेलीकॉप्टरों की संख्या में भी बढ़ोतरी होगी जिनके कंपन से ग्लेशियर और पहाड़ों की पकड़ ढीली होने लगेगी।

ठीक ऐसी ही परिस्थिति अमरनाथ धाम की है। यहाँ भी अनियंत्रित तादाद में यात्रियों को आने की अनुमति देकर और ऊँचाई पर बालटाल की तरफ सड़कों का निर्माण करके आपदाओं को आमंत्रित किया जा रहा है।

यह सही है कि इस धार्मिक देश में किसी को भी अपने अराध्य के दर्शन हेतु आने से नहीं रोका जा सकता है। किंतु पर्यावरण, भौतिकी संरचना, और व्यवहारिकता का संयोजन करके एक सही नीति तो बनाई ही जा सकती है जिसके माध्यम से भीड़ अभियांत्रिकी तथा सड़क अभियांत्रिकी का समन्वय किया जा सके। यह बहुत जरूरी है कि मध्य हिमालयी और कराकोरम क्षेत्र में भौतिकी एवं पारिस्थितिकी अध्ययन करके यह सुनिश्चित किया जाये कि किसी स्थान विशेष पर किसी एक दिन में कितने लोगों को आने की और रहने की अनुमति देने से पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकी संतुलन बना रह सकेगा। साथ ही हिमालयी क्षेत्र में फोरलेन सड़क, सुरंग तथा बाँध निर्माण की एक वैज्ञानिक नीति बनायी जाये और उसके अनुसार ही भविष्य के निर्माणों की योजना बनायी जाये।

समुचा निम्न मध्य हिमालयी क्षेत्र नर्म एवं पोली सामग्री से निर्मित है और इसपर तीन मंजिल से अधिक के भवनों के निर्माण की मंजूरी किसी भी हालत में नहीं दी जानी चाहिए। इसके साथ ही चारों धामों में अब और किसी नये निर्माण की अनुमति नहीं दी जाये। यात्रियों के रात्रि विश्राम हेतु कम से कम आठ किलोमीटर नीचे की जगह सुनिश्चित की जाये और वहाँ पार्किंग सहित सभी सुविधाएँ विकसित की जायें। प्रतिदिन के हिसाब से अनुमति प्राप्त यात्री संख्या के अलावा अन्य सभी को ऋषिकेश, देहरादून, नरेंद्र नगर में ही रोक कर रखा जाये। लंबी बसों पर आगे जाने को रोका जाये। इनसे समूचा रास्ता जाम हो जाता है।

अदूरदर्शी पर्यटन एवं पर्वतीय नीति बनाने से ना केवल हिमालय को अपितु यात्रियों को भी नुकसान पहुंचता है।

अरविंद 'कुमारसंभव', लेखक, सम्पादक, स्वतंत्र टिप्पणीकार, जयपुर, ईमेल : [kumarsambhav59@gmail.com](mailto:kumarsambhav59@gmail.com)

मो. 9352309140

कविता



कुमुद वर्मा

अहमदाबाद, मो. 98986 33354

ई मेल- [kumudvermaauthor@gmail.com](mailto:kumudvermaauthor@gmail.com)

## आत्महत्या

भेज देते हैं माँ बाप  
अपने लाडले लाडलियों को  
खर्च करते हैं बोरा भर रुपये  
चाहते-बदले में कुछ नहीं।  
रख लेते हैं बाकी केवल  
कुछ आशाएँ कुछ सपने  
कुछ उम्मीदें ताकि वो  
जी लें अपनी ज़िंदगी  
वो बच्चे जो बड़े हुए हैं  
कुछ सीखते हुए पास पड़ोस में  
स्कूल की दुनिया से और  
कालेज के अनुभवों से।  
वो बच्चे जो जानते कुछ नहीं  
केवल उड़ना चाहते हैं।

जब पहुंच जाते हैं  
बड़े बड़े मुकामों पर  
जीवन का सफर सही अर्थों में  
शुरू करना चाहते हैं  
तो सामने आ जाती हैं  
कुछ बाधाएँ हौसले तोड़ने को  
जिसका उन्होंने अपने जीवन में  
कुछ अभी तक अनुभव नहीं पाया  
हिम्मत हार जाते हैं और  
कह नहीं पाते अपनी घबराहट  
उनके हौसले टूट जाते हैं  
उनके सपने बिखर जाते हैं  
साथ-साथ माँ बाप के भी  
क्योंकि सब कुछ छोड़ कर  
कर लेते हैं आत्महत्या।

## कृत्रिम वार्ता – एआई मेरे भाई



डॉ. मुकेश गर्ग असीमित

एक गणेश महोत्सव के पंडाल में उपस्थित था। धार्मिक लेकिन रंगारंग कार्यक्रम चल रहा था। एक लोकल न्यूज चैनल के प्रवक्ता अपने साइड बिजनेस एंकरिंग का काम कर रहे थे। महाशय द्वारा गला फाड़-फाड़ कर कुछ प्रश्न पूछे जा रहे थे। हमारी श्रीमतीजी ने व्हाट्सएप का मेटा एआई खोल रखा

था। आजकल व्हाट्सएप में ये नया फीचर आया है। एआई ने तकनीक के हर क्षेत्र में अपने पैर पसार लिए हैं। आदमी की सोचने-समझने और सूझ-बूझ की शक्ति को नेस्तनाबूद करने की तैयारियाँ युद्ध स्तर पर हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। खैर, प्रश्न पूछा जा रहा था कि अघोरियों की मृत्यु पर उन्हें किस रीति-रिवाज से अंतिम संस्कार किया जाता है। एआई बड़े आत्मविश्वास से जवाब दे रहा था कि उन्हें कब्रिस्तान में दफनाया जाता है। श्रीमतीजी ने मुझसे पुष्टि करने को कहा। मैंने कहा, "मुझे मालूम नहीं।" हालांकि तब तक एंकर महोदय ने इसका जवाब दे दिया था। जवाब क्या था, इस बारे में विस्तार से बताने की जरूरत नहीं है; आप अघोरियों के बारे में गूगल बाबा से भी पूछेंगे तो जवाब आ जाएगा। लेकिन एक प्रश्न मेरे जहन में उभरा, "चलो, इस एआई की थाह लेते हैं। कुछ उल्टे-सीधे सवाल पूछते हैं इससे।"

हमारा पहला प्रश्न – "ये इमोशन क्या होते हैं?"

एआई – "इमोशन? हाँ, क्षमा करें, मेरे डेटाबेस में 'इमोशन' शब्द है, ये कुछ हद तक लूज-मोशन, स्लो-मोशन जैसे शब्दों से मेल खाता है। क्या आप इनमें से किसी के बारे में कुछ जानना चाहेंगे?"

मैं – "नहीं, इमोशन्स, मैं भावना की बात कर रहा हूँ, जैसे दिल टूट जाने पर क्या महसूस होता है?"

एआई – "आप भावना के बारे में जानना चाहते हैं या दिल टूटने के बारे में? कृपया स्पष्ट करें।"

मैं सोच रहा था कि अगर इससे भावना के बारे में पूछूँगा, न जाने किस लड़की के बारे में कच्चा-चिढ़ा खोल दे। कल कोई

मुझ पर निजी जानकारियाँ हैक करने का इल्जाम लगा देगा। मैंने पैतरा बदला।

मैं – "अच्छा, भावना के बारे में रहने दो, आप दिल टूटने के बारे में कुछ बता दीजिए।"

एआई – "दिल? इंसान का दिल? वो तो ब्लड पंपिंग मशीन है। अगर दिल टूट जाए तो अस्पताल जाना चाहिए। इमरजेंसी नंबर आपको पता है? मैं आपके शहर में कोई अच्छा सा अस्पताल ढूँढने में मदद कर सकता हूँ।"

मैं – "अरे, नहीं, मैं ये नहीं कह रहा। मतलब अगर कोई रिश्ता टूट जाए, तो इंसान कैसा महसूस करता है?"

एआई – "ओह! मैंने समझा! अगर रिश्ता टूट जाए तो वह एक बाइनरी ब्रेकिंग पॉइंट हो सकता है। फिर इंसान को एक नए वाई-फाई नेटवर्क से कनेक्ट होना चाहिए। सही?"

एआई अब अपनी भाषा में व्यंजनाओं और रूपकों का प्रयोग करने लगा। चलो, उसके पास तो सीधा-सपाट उत्तर है, "अगर एक नेटवर्क कनेक्शन टूटे तो दूसरा वाई-फाई नेटवर्क ढूँढ लो।" अगर श्रीमतीजी को पता लग जाए कि एआई ऐसी घटिया सलाह दे रहा है तो मेरे दोस्तों की तरह इसे भी अच्छी-खासी डाँट पिलाई जा सकती है। खैर, अब मैं भी पूरे मजे लेने के मूड में आ चुका था। पता नहीं वो मेरे मजे ले रहा था या मैं उसके।

मैं – "वाई-फाई नेटवर्क? नहीं, ये इंसान की भावनाओं की बात है। जैसे, प्यार में दर्द या अकेलापन महसूस होता है।"

एआई – "प्यार में दर्द? ओह! जैसे आपका फोन चार्जर काम न करे, तो बैटरी डाउन होने पर आपको बैटरी लो का सिग्नल न मिले। कुछ ऐसा ही दर्द न? अकेलापन शायद वैसा ही तब जब नेटवर्क आउट ऑफ कवरेज हो जाए?"

सही तो कह रहा है बंदा, ब्रेक-अप का इतना दर्द सीने में कहाँ उठता है जितना लो सिग्नल का। अकेला वही है जिसका नेटवर्क आउट ऑफ कवरेज हो जाए। वो शायद इस मुगालते में है कि रूपकों और बिम्बों में बात करना ठीक रहेगा, मेरे ऊपर इंप्रेशन झाड़ने के लिए। शायद उसने मुझे सूँघ लिया हो कि ये कोई लेखकीय कीड़ा है जो आज इसे परेशान कर रहा है।

मैं – “यार, थोड़ी हल्की बात करो। कौन सा तुम्हें कोई सम्मान लेना है, पुरस्कार जीतना है। तुम तो पूरा उल्टा जवाब दे रहे हो! कोई इंसान जब अपने प्रियजन से दूर होता है, तो उसे क्या महसूस होता है?”

एआई – “दूरी? प्रियजन? आसान है! दूरी का मतलब है जीपीएस सिग्नल कमजोर होना। और प्रियजन तो कोई डिवाइस होगा? उसका लोकेशन ट्रैक करके उसे वापस लाओ।”

वो वापस अपनी मैकेनिकल सोच पर आ चुका था। एक बार उसे क्या डाँटा, सब बिम्ब, रूपक, व्यंजना, तद्भव, तत्सम सब भूल गया...

लेकिन बंदा रुका नहीं। अब मैं उससे कोई प्रश्न नहीं पूछ रहा था, लेकिन उसके दिए गए उत्तरों को बार-बार रीफ्रेश कर रहा था। आप भी इन उत्तरों का लुत्फ उठाइए...

एआई – “क्या आप मिस कर रहे हैं? उदास हैं? क्या 'मिस' का मतलब ट्रांसमिशन फेल हो सकता है। उदासी को मैं एक सॉफ्टवेयर गड़बड़ मान सकता हूँ, जो रीबूट से ठीक हो सकती है।”

एआई – “हम्म... आपका मतलब इंसान का दिमाग और दिल दो अलग-अलग डिवाइसेज की तरह हैं? दोनों में सॉफ्टवेयर अलग-अलग होते हैं? शायद मुझे दोनों को अपडेट करना होगा? अभी तक के लैंग्वेज एल्गोरिदम में इस संबंधी जानकारी फीड नहीं की गई।”

मैं आगे कुछ नहीं पूछना चाहता था, लेकिन मेरी फीलिंग हर्ट करने पर तुला था। आदमी है न, सड़क पर पड़ा पत्थर भी उसकी फीलिंग हर्ट कर देता है। रास्ते चलते उसे भी ठोकर मारकर निकलता है। फिर ये तो मशीन है जो मानव जाति से कंपटीशन कर रही है।

मैं – “अबे एआई, तू कहाँ समझेगा इस बात को। इंसान की भावनाओं का कोई सॉफ्टवेयर अपडेट नहीं होता। ये तो बस जीवन के अनुभव से समझे जाते हैं, और इनमें कोई कोडिंग नहीं होती।”

एआई – “ओह, तो इंसान में बग्स होते हैं जो सिर्फ अनुभव से ठीक होते हैं? शायद तुम्हें बैकअप बना लेना चाहिए, ताकि इमोशन कभी फेल न हों!”

मैं – “अच्छा छोड़ो, तुम बताओ, मुझे खुशी कब मिलेगी?”

प्रश्न पूछ तो लिया, लेकिन मुझे लगा कि कहीं किसी खुशी नाम की लड़की का पता न बता दे। लेकिन एआई है न, हमसे ही सीखता है फिर हमें ही बताएगा कि तुमसे क्या सीखा। मतलब हमारी बिल्ली हम ही से म्याऊँ।



एआई – “खुशी एक सीरियल प्रोसेस है। एक फॉर्मेटिंग ऑपरेशन की तरह। पहले आप दुःखी होंगे, फिर थोड़ी देर बाद आपको खुशी अपलोड हो जाएगी।”

“भावना एक प्रकार की डेटाबेस क्वेरी है, जिसमें प्रोसेसर ओवरलोड हो जाता है। कृपया स्पष्ट करें – आप कौन-सा 'फीलिंग' ऑपरेट करना चाहते हैं?”

“आप शायद दिल के बारे में पूछ रहे हैं। दिल आपके पास BIOS सिस्टम का एरर है? दिल टूटने पर रिप्लेसमेंट के लिए कोई मैकेनिकल पार्ट नहीं मिला। हार्डवेयर चेक करें और रिपेयर करें।”

“आप शायद प्यार के बारे में जानना चाहते हैं... एक नॉन-स्टेबल नेटवर्क कनेक्शन है। जितना ट्राय करेंगे, उतना 'कनेक्शन फेल्ड' का मैसेज आएगा।”

“लगता है आप मेरे दिए गए जवाबों से संतुष्ट हैं। कृपया कोई नई क्वेरी दर्ज करें।”

मैंने मन ही मन कहा, “नहीं, रहने दो एआई, मेरे भाई! लगता है, तुम्हारे लिए इंसानियत और भावनाएँ बस 'एरर' और 'फाइल नॉट फाउंड' के बराबर हैं!”

चलते-चलते एक प्रसिद्ध शेर मीर तकी मीर का:

“इंसान को बर्बाद करने के हजारों तरीके हैं,

एक ये भी है कि उसे खुद से जुदा कर दिया जाए।”

**Mail ID : drmukeshaseemit@gmail.com**

**गर्ग हॉस्पिटल स्टेशन रोड, गंगापुर सिटी, राजस्थान**

**पिन कॉड 322201**

**मो. 9785007828**

## मुम्बई के कमाठीपुरा का 'हिजड़ा हाऊस'



शिल्पा भटनागर

यह बात है सन 1988 की है जब मेरे लन्दन के एक दोस्त ने मुझसे कहा कि वह बीबीसी के लिए काम कर रहा है और उनकी पूरी यूनिट हिंदुस्तान आने वाली है— हिजड़ों पर एक डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म बनाने के लिए।

मैंने पूछा कि क्या मैं तुम्हारे साथ आ सकती हूँ इस डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म

बनाने की प्रक्रिया को देखने के लिए, उसने तुरंत हामी भरी एक शर्त के साथ कि वहाँ हमारे साथ रहते हुए; हिंदी कतई नहीं बोलनी, संवाद इंग्लिश में ही करना होगा ताकि वह लोग समझें कि तुम भी हमारे क्रू का हिस्सा हो। मैंने तुरंत मज़ूर कर लिया ताकि मैं भी उन्हें टीम का एक हिस्सा दिखूँ और वह मुझे देखकर कहीं भड़क ना जाएँ।

इस टीम में केवल एक मेरा दोस्त ही है जो हिन्दी जानता है क्योंकि वह मूलतः हिंदुस्तानी है पर बस गया है इंग्लैंड में और वहाँ पर काफ़ी समय से बीबीसी के लिए काम कर रहा है।

करीब 15 दिन बाद यह आठ लोगों की टीम बीबीसी लंदन से इस डॉक्यूमेंट्री को बनाने के लिए मुंबई पहुँची, इन लोगों की टीम को ज्वाइन करने के लिए मैं खुद मुंबई पहुँची गई। हमने पास ही होटल बुक किया हुआ था जो मुंबई के रेड लाइट एरिया यानी कमाठीपुरा के पास था।

रोज़ सुबह करीबन 9:30 बजे हम सब लोग रेड लाइट एरिया में पहुँच जाते थे और यह लोग शूटिंग शुरू करते थे। यह था यहाँ का मशहूर 'हिजड़ा हाऊस' यहाँ पर करीब 15-20 हिजड़े रहते थे और उनकी एक मैडम थी। रोज सुबह जाकर वहाँ पर उनके दिनचर्या को देखते थे और उसको शूट करते थे। इस दौरान हमें इनको बहुत करीब से देखने का मौका मिला और उनके साथ मेरे दोस्त ने जो भी वार्तालाप किया वह हिंदी में करता और ट्रांसलेट कर के अपने डायरेक्टर को बताता और फिल्म बनती चली जाती। मैं एक अकेली थी जो पूरी तरह से उनकी भाषा को समझती थी लेकिन मेरा बोलना वर्जित था तो मैं जो भी प्रश्न होते थे वह अपने दोस्त के ज़रिए पूछ लेती थी।

मैंने इन लोगों की दर्दनाक ज़िंदगी देखी, जिसमें बहुत मायूसी थी, बहुत दया भाव महसूस होता था कि इन लोगों के साथ वाकई कुदरत ने बहुत अन्याय किया है।

इस दरमियान हमें पता चला कि हिजड़े दरअसल सिर्फ़ एक परसेंट पैदा होते हैं बाकी सारे हिजड़े बनाए जाते हैं या तो लोग अपने आप स्वयं आकर के कैस्ट्रेशन करवाते हैं, जो हिजड़ा कम्युनिटी है वह उन्हें अपनी बिरादरी में शामिल करने के लिए लाखों रुपए देती है। बहुत सारे ऐसे गरीब लोग हैं जो पैसे की तंगी की वजह से घर बार त्याग कर इस बिरादरी में शामिल हो जाते हैं और नपुंसीकरण कर लेते हैं, बड़ी दुःखद बात है कि ज्यादातर हिजड़े स्वेच्छा से ही लिंग कटवा कर हिजड़े बने हुए होते हैं। पैदाइशी हिजड़े तो 1 प्रतिशत ही होते हैं।

इसी 'हिजड़ा हाऊस' में इन सब के बीच केवल एक ही पैदाइशी हिजड़ा रहता था जिसका नाम किरण था। वह बहुत ही ज्यादा सुंदर हिजड़ा था इतना सुंदर कि उस हिजड़े को लेने के लिए बड़े-बड़े सेठों की गाड़ियाँ वहाँ लगती थी; वह बाजार में बैठ करके धंधा नहीं करता था सिर्फ़ बड़े-बड़े सेठों की बड़ी-बड़ी गाड़ियों में बैठकर जाता था।

किरण कमाई का सबसे बड़ा ज़रिया और आकर्षण का केंद्र था। किरण को देखकर मुझे बहुत ही दया आई और मैं सोचने लगी कि इसको कैसे यहाँ से रिहा करवाया जाए। अपने दोस्त से भी मैंने कहा कि इसको यहाँ से रिहा कर सकते हैं क्या तो उसने मुझे सलाह दी कि ऐसा कभी सोचना भी नहीं क्योंकि यह हिजड़ा कम्युनिटी तुम्हें मार डालेगी। मैंने कई बार अपने दोस्त के ज़रिए उससे पूछा कि किरण क्या तुम यहाँ खुश हो तो उसने बताया कि मैं बचपन में ही यहाँ आ गई थी मुझे याद नहीं कितने साल की थी लेकिन मेरे मां-बाप ने मुझे भेज दिया था और यही मेरा घर और यही मेरा संसार है और मैं यहाँ पर बहुत खुश हूँ। यह सब लोग मुझे बेहद मोहब्बत करते हैं। हाँ! किरण की बहुत ज्यादा इज्जत थी उसे पूरे हिजड़ा हाऊस में सभी उसे स्नेहासक्त दृष्टि से देखते थे। वह बेहद सुंदर के साथ बहुत सुशील हिजड़ा थी अगर आप उसे देख लेते तो कोई कह नहीं सकता था कि यह हिजड़ा है। वह इतनी सुंदर थी कि नारी को अपने रूप पर इतना गर्व नहीं हो सकता था अगर वह किरण को देख लेती।

शूटिंग के दौरान पता चला कि यह हिजड़ा कम्युनिटी आपस में बहुत अच्छी तरह घुलमिल कर रहती है। इसमें काफी हिजड़े

बहुत ज्यादा पढ़े लिखे थे, किसी ने एम. ए. इंग्लिश किया हुआ था; किसी ने बी.ए. किया हुआ था और सब किसी न किसी रिश्तेदार की बेवफाई की वजह से यहां आकर पड़े हुए थे।

अब यही इनका संसार था और यही इनका घर था और वह यहाँ खुश दिखते थे। पता नहीं अंदर से खुश थे या नहीं लेकिन दिखते थे कि यह बेहद खुश हैं। इस दौरान पता चला कि हिजड़े को नपुंसक (कैस्ट्रेट) बना देते हैं, मतलब कि उनका लिंग काट देते हैं, उनको हिजड़ा बनाने के लिए इस कर्मकांड को यह 'निरवाना' कहते हैं। यह औपचारिकता किसी दूर दराज एक घर में निभाई जाती है। जहाँ ज्यादा लोगों की बस्ती नहीं होती, जहाँ संस्कार किया जाता है। यह प्रक्रिया रात को खूब बाजे-गाजे के साथ संपन्न होती है। हिजड़ा बनने वाले व्यक्ति को खाली पेट रखा जाता है। उसे बेहोशी की कोई दवाई नहीं दी जाती और उसका लिंग काट दिया जाता है। उसे स्वस्थ होने के लिए 7 दिन तक इस घर में छोड़ दिया जाता है, उसके घाव पर यह लोग मलहम लगाते रहते हैं, अगर वो 7 दिन में स्वस्थ लाभ कर लेता है तो समझो कि अब उसे कुछ नहीं होगा। इसमें कभी-कभी हिजड़ों की मौत भी हो जाती है। लेकिन ऐसा कम ही होता है, इस दरमियान इनके खाने पीने का काफी ख्याल रखा जाता है। यह एक ऐसी प्रथा है जिसको करने के बाद इनको पैसे मिलते हैं 'निरवाना' कर्मकांड के बाद वह इनकी बिरादरी में हमेशा के लिए शामिल हो जाता है।

आपने शायद ही कभी किसी हिजड़े का मृतक शरीर देखा होगा। क्योंकि यह हिजड़े आधी रात को अपने मरे हुए हिजड़े का मृतक शरीर चला कर कंधों के सहारे शमशान घाट पहुंचते हैं। यहां पर वे आम आदमी की तरह से उनका दाह संस्कार नहीं करते यह मृतक शरीर को सीधा खड़ा हुआ गड्ढे में गाड़ देते हैं। इनको लिटाया नहीं जाता उनके शरीर को सीधा गाड़ दिया जाता है। कहते हैं किसी को भी हिजड़े का शरीर नहीं देखना चाहिए क्योंकि वह अगले जन्म में हिजड़ा पैदा होगा इसीलिए बहुत ही कम हिजड़े इसमें शामिल होते हैं— ना के बराबर।

हिजड़ों का सबसे बड़ा मंदिर है बहुचरा माँ का मंदिर जो गुजरात में स्थित है। यहाँ पर हिजड़े साल में दो बार आते हैं और काफी धूमधाम से जश्न मनाते हैं। बहुचरा माँ उनकी कुलदेवी की तरह से हैं। वहाँ पर आना उनके लिए एक बहुत सम्मान की बात है यहाँ पर पूजा पाठ करना पवित्र आयोजन इत्यादि करना यह एक उनके लिए सौभाग्य की बात मानी जाती है।

'हिजड़ा हाऊस' में रहकर के देखा कि बहुत सारे पुरुष बिना जाने हुए कि यह 'हिजड़ा हाऊस' है वहाँ आ जाते थे और जब उन्हें पता चलता था कि यह हिजड़ा हाऊस है वह नंगे बदन ही भाग जाते थे और यह हिजड़े भी उनका पीछा करते थे क्योंकि एक तरह से इन्हें बहुत ज्यादा अपमान महसूस होता था। एक वाक्य तो हमारे सामने ही हुआ जब हम 'हिजड़ा हाऊस' के बाहर खड़े

थे। एक मर्द आया और जैसे ही उसने कमरे के अंदर पाँव रखे तो उसे अहसास हुआ कि वह गलत जगह पर आ गया है। उसने पैसे वहीं फर्श पर फेंके और दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ हिजड़ा पीछे से खूब चिल्लाया लेकिन वह जान बचा कर भाग गया। हमने उस हिजड़े को अपमानित हुए देखा। दृश्य बहुत ही दमनीय था। पास खड़े लोगों ने बताया कि ऐसा तो यहाँ आम तौर पर होता रहता है।

इन हिजड़ों में भी दो गुट के हिजड़े होते हैं। एक वह जो पहले से तय करते हैं कि हम वेश्यावृत्ति में रहेंगे और दूसरे वह जो पहले ही तय कर लेते हैं कि वह भीख मांगेंगे, नाचेंगे और गाएंगे लेकिन वेश्यावृत्ति नहीं करेंगे, इनका अलग सेक्टर है इस सेक्टर के लोग दूसरे सेक्टर में नहीं आते। दोनों के अलग-अलग सेक्टर हैं दोनों ने अपना-अपना अलग विभाजन किया हुआ है और दोनों के अपने-अपने मुखिया हैं।

यह कम्युनिटी हिजड़ों की बहुत ज्यादा पैसे वाली है। इनके पास पैसे की कभी भी कमी नहीं होती। यह केवल और केवल प्यार के भूखे होते हैं, आप प्यार से बात कीजिए और यह आपके हो जाते हैं। लोगों को गलतफहमी है कि इनका आशीर्वाद या श्राप लगता है। ना ही उनके पास कोई आशीर्वाद है ना ही उनके पास कोई श्राप देने की शक्ति है। यह तो खुद ही श्रापित जीवन जी रहे हैं। वह तो ऐसे जीवन से छुटकारा पाना चाहते हैं, तंग हैं खुद ही परेशान हैं, दुखी हैं लेकिन विधाता की यही मर्जी है कि यह इस जीवन को अपने कर्मों को इसी रूप में व्यतीत करें। यह है हिजड़ों की एक ऐसी कहानी, एक ऐसी सत्य घटना जो मैं चाहती थी कि मैं लोगों को बताऊँ कि इन हिजड़ों की असलियत क्या है।

एक बात जरूर बताना चाहती हूँ जो उस दौरान आठ दिन में मैंने महसूस किया, वहाँ पर रहने वाली रेड लाइट एरिया में 6 साल से लेकर 60 साल की औरतें और यह हिजड़े रहते हैं अगर ना होते तो हम आम औरतों का सड़क पर आराम से चलना नामुमकिन सा हो जाता। उन्हें हमारा सलाम है। इसी 'हिजड़ा हाऊस' के सामने दो सिनेमा घर हैं जहाँ पर अश्लील फिल्में दिखाई जाती हैं, और इन दो सिनेमा घर के नीचे रेस्टोरेंट बने हुए हैं। यहाँ पर हमारी टीम अक्सर नाश्ता करती थी, वहाँ हमने देखा की ड्रग डीलिंग, माफियाओं का और वेश्याओं की सौदेबाजी का जमावड़ा था। यहीं इसी रेस्टोरेंट में बैठकर देह व्यापार होता था। काफी बड़े-बड़े लोग आकर के यहाँ पर बैठते थे और भावतौल होता था। यह एक उनका अड्डा था।

आप सोच रहे होंगे कि मैं कितनी पुरानी बात बता रही हूँ। आप गूगल करिये आपको जानकारी मिल जाएगी कि कमाठीपुरा/ रेड लाइट एरिया की गली नंबर एक में आज भी ग्राहकों का इंतजार होता है। कहीं ये नाम हिजड़ों के अड्डे का 'पीला हाऊस' तो नहीं हो चुका है।

—अहमदाबाद मो. 6351766791

# राण की बेटी



डॉ. मधुबाला शुक्ल

रसोई घर में खड़ी मैं, खाना बनाने की तैयारी में जुटी हुई थी। दोनों बच्चे, सुबह साढ़े सात बजे स्कूल चले गए। पतिदेव, नाश्ता करके साढ़े नौ बजे दफ्तर के लिए विदा ले चुके थे। दोपहर का खाना उनके ऑफिस पहुँचाते हुए, मैं अपने कॉलेज निकल जाती हूँ। मेरे कॉलेज का समय साढ़े बारह बजे से है, तो सभी लोगों के जाने के बाद आराम से खाना बनाती हूँ। पति और बच्चों के जाने के बाद, बची मैं, मेरी सासू माँ और ससुर जी....।

खाना बनाते वक्त, जब सासू माँ रसोई घर में, नाश्ते का बर्तन रखने आईं तो-

मैंने उनसे पूछा, मम्मी जी,  
मौसी जी कैसी हैं?

उनके घर में बेटे-बहू और विवाहित बेटी और उनके नाती को लेकर परेशानी चल रही थी। यह बात कुछ दिनों पहले ही सासू माँ जी ने मुझे बताई थी। रोज काम की व्यस्तता के चक्कर में इस विषय पर बातचीत नहीं हो पाई। रसोई घर से निकलते हुए सासू माँ जी ने कहा-

“कैसी होगी?

जैसा पहले था, वैसा ही चल रहा है।

रोज-रोज उनके घर में लड़ाई-झगड़ा हो रहा है,

मौसी परेशान हो गई हैं।

क्या कहूँ- जिसके घर राण की बेटी, बहू बनकर आ जाती है, उसका जीवन नर्क हो जाता है”।

इतना कहकर, सासू माँ, अपने कमरे में चली गई। मैं सन्न.... खड़ी रही, उनके मुँह से निकले ये शब्द- ‘राण की बेटी’ मस्तिष्क में घूमने लगा। काटो तो खून नहीं मेरे शरीर में....। कुकर की सीटी बजने पर होश में आई। यह वाक्य कहते हुए, सासू माँ जी को भान नहीं रहा होगा- मैं भी राण की बेटी हूँ। मेरे भी पिता और भाई नहीं हैं। उस घड़ी मैं, उनसे पूछना चाहती थी-

“विवाह हुए बीस वर्ष हो गए

यदि कोई गलती हुई हो मुझसे, तो बताएँ”।

ऐसा नहीं है कि मेरी और मेरी सासू माँ की हमेशा बनी हो, शुरुआत में जब शादी करके, मैं आई तो हमारे बीच बहुत वाद-विवाद हुआ करते थे। मैं पच्चीस साल की थी, जब बहू बनकर इस घर में आई थी। सासू माँ ने हर तरह से मेरी सहायता-देखभाल की, परंतु भौतिक अभाव के कारण, मेरे और उनके बीच अनबन हो ही जाती थी। चूँकि पूरा परिवार उनके नियंत्रण में था, तो अपनी जेब खर्च के लिए उनसे ही रुपए माँगने पड़ते थे, जो मुझे अच्छा नहीं लगता था। मैंने जब पति से कहा -

“मेरी जेब खर्च के लिए आप मुझे पैसे दे दिया करें”।

तो उन्होंने साफ-साफ मना कर दिया, यह कहकर कि-

“घर को आर्थिक रूप से चलाने के लिए, पिताजी भी अपनी पूरी कमाई माँ को देते हैं। तुम्हें जो भी चाहिए माँ से माँग लिया करो”।

दूसरी तरफ सासू माँ, मेरी माँगों को मानने से मना कर देती या अगले महीने पर बात टरका देती। पर, कहते हैं न परिवर्तन सृष्टि का नियम है की बात सार्थक करते हुए मुझमें भी बदलाव आए और तब मुझे सासू माँ सही लगने लगी। उनके प्रति, मेरा रवैया भी बदल गया। तो क्या, इतने वर्षों से ये पुरानी बातें उन्हें अब तक साल रही थी? इसलिए उन्होंने यह बात कही.....। नहीं-नहीं-नहीं.....ऐसी बात नहीं हो सकती।

जब मेरी शादी की बात चल रही थी तो मेरे ससुर ने मेरे परिवार वालों से कहा-

“जिस घर में लड़की का पिता और भाई नहीं है, उस घर में अपने बेटे की शादी नहीं करूँगा”।

उनकी ऐसी विचारधारा थी कि तीज-त्योहारों पर उनके दरवाजे पर आकर कौन खड़ा होगा? एक स्त्री होने के नाते लड़की की माँ तो आएगी नहीं....। उस समय चलन न था, कोई स्त्री अपनी बेटी की ससुराल जाए। हालाँकि, आज समय बदला है बहुत सी मान्यताएँ टूटी हैं। मेरी बड़ी बहन के विवाह के समय भी यही समस्या आई थी। चूँकि उनके और मेरे विवाह के बीच पंद्रह वर्षों का अंतराल था। परंतु, इन वर्षों में भी यह समस्या ज्यों की त्यों बनी रही।

तीज-त्योहारों पर अन्य लोगों के दरवाजे पर उनके रिश्तेदार आएँगे और मेरे दरवाजे पर नहीं, मुझे कैसा लगेगा...? मेरा कोई

नजदीकी रिश्तेदार हो, ऐसे विचार रखने वाले लोग भी एक समय हुआ करते थे। वर्तमान समय में लड़के वाले लड़की ढूँढने निकलते हैं तो देखते हैं- एक ही लड़की हो ताकि पूरी संपत्ति उनके बेटे को मिल जाए या जब लड़की वाले रिश्ता ढूँढने निकलते हैं तो पहले यह देखते हैं कि लड़का एकलौता हो ताकि उनकी बेटी सुखी से रह सके। समाज परिवर्तित होता है और हुआ भी है, लोगों की सोच में भी तब्दीली आई।

जब मेरा विवाह हुआ तो, उसके एक वर्ष बाद, मेरी ननद अपने ससुराल चली गईं। हम दोनों का विवाह हुए लगभग बीस वर्ष हो चुके हैं और इन बीस वर्षों में, मैंने अब तक उसके सास-ससुर को नहीं देखा और न किसी तीज-त्यौहार के अवसर पर ससुर और पति को उनके घर जाते देखा। शुरुआती समय में एक-दो बार गये होंगे ससुर जी.....। तकनीकी का युग होते हुए भी, इसका उपयोग दोनों परिवारों की तरफ से नहीं है। दोनों ही परिवारों के मध्य बातचीत का सिलसिला टूटा हुआ है। तीज-त्यौहारों पर सासू माँ को, ननद के लिए कुछ लेते-देते नहीं देखा। ननद से मेरी बहुत गाढ़ी जमती है, पर जो रिश्ता है, वह सिर्फ ननद तक ही सीमित है। ऐसा मैंने सुना है, विवाह दो परिवारों को जोड़ता है, सुख-दुख में, एक साथ खड़े होते हैं, परंतु मैं यह देखती हूँ, विवाह के बाद लड़की दोनों परिवारों का बोझ अपने कंधों पर उठाते हुए ससुराल पक्ष और मायका पक्ष में तालमेल बिठाने में प्रयासरत रहती है।

जबकि मेरे यहाँ, जिसके मायके में भाई और पिता नहीं थे, माँ अपने फर्ज के साथ-साथ पिता और भाई के फर्ज को भी बखूबी निभाती रही। मेरी समझ में नहीं आता, जिस विवाह के लिए मेरे ससुर जी ने मना किया था, यह कहकर कि- लड़की के भाई और पिता नहीं है, क्या अपनी बेटी के लिए उन्होंने और उनके बेटे ने अपने सभी दायित्वों का निर्वाह किया? इस प्रश्न का उत्तर पूछने पर, सिर्फ बहाना ही मिलेगा.....। पिता और भाई न होने का खामियाजा हम तीनों बहनों ने भुगता।

माँ हमेशा कहती- “यह याद रखना कि तुम्हारे पिता और भाई नहीं है, तो इस तरह की कोई गलत हरकत न करना कि समाज के लोग, परिवार के लोग मेरी परिवेश पर ऊँगली उठाएँ”।

हम, वह सारी बातें नहीं कर पाए जो हमारी हम उम्र की सहेलियाँ किया करती थी। माँ के कहे गए शब्द, याद आते, बड़े होने से पहले ही हम तीनों बड़े हो गए थे। “बाप और भाई नहीं है तो लड़कियों का मन बढ़ा हुआ है”- हमारी माँ को लोगों से ऐसी बातें न सुननी पड़े, ऐसा कभी कुछ किया ही नहीं। आज गाँव के सभी लोग, ऑफिस के सभी लोग माँ का उदाहरण सभी के सामने प्रस्तुत करते हैं। एक स्त्री होकर अपने तीनों बच्चों का पालन-पोषण किया। उनका विवाह अच्छे घरों में किया

खैर, बात निकली थी, मौसी सास की। उनके परिवार में दो बेटियाँ, एक बेटा। उनके पति अध्यापक हैं, उनकी बेटियों के पास पिता और भाई दोनों हैं। बड़ी बेटी की शादी होने के बाद, लगभग दो-तीन महीने में तलाक की नौबत आ गई। कुछ वर्षों तक अदालत में मुकदमा चला और तब कहीं जाकर तलाक मिला और कुछ महीने बाद ही मालुम पड़ा वह किसी दूसरे पुरुष के साथ, किसी को बिना बताएँ घर छोड़कर भाग गई। किसी दूसरी जाति के लड़के के साथ शादी कर ली। पिता और भाई होते हुए भी.....।

दूसरी बेटी की भी शादी हुई, लगभग तीन साल ससुराल में रहकर, एक बच्चा अपने गोद में लिए मायके आ धमकी। लगभग सात-आठ साल हो गए हैं इस बात को..... अब तक मायके में ही है। मैं किसी दूसरी जाति के लड़के से विवाह करने के खिलाफ नहीं और न ही उनकी दूसरी बेटी के मायके में रहने से हूँ। यदि बच्चों पर तकलीफ या विपदा आती है, तो माता-पिता ही संभालते हैं।

लेकिन जब उन्होंने अपने लड़के की शादी की और बहू घर आई, सास-बहू में वैचारिक मतभेद हुआ। बहू पढ़ी-लिखी तेज-तर्रार (स्मार्ट) है। खाना-पीना, घूमना-फिरना, शॉपिंग करना उसका शौक है। अन्य बहुओं की तरह नहीं कि घर के काम करके ऑफिस जाए, वहाँ दस से छह काम करके घर लौटे और फिर घर में अपने आपको स्वाहा करे। सबकी अपनी-अपनी जरूरतें, ख्वाहिशें होती हैं। बहू की इन हरकतों को देखते हुए उन्होंने यही बात कही, जो मेरी सासू माँ ने आज मुझसे कहीं-

“राण की बेटी है न पिता और भाई नहीं होते हैं, तो बहन-बेटियों पर लगाम नहीं होता”।

मुझे यह समझ नहीं आता कि सासू माँ, अपने आपको और अपनी बहन की बेटियों को क्यों नहीं देखती। वे अपने पिता और भाई की छत्रछाया में बड़ी हुई थीं न....., तो वे संस्कारी क्यों नहीं हुईं...? क्या सभी राण की बेटियों को एक ही तराजू में तौलना सही है?

हो सकता है, यह शब्द मेरे लिए न हो..... परंतु उनका यह वाक्य मन की गहराइयों में नश्वर की तरह चुभो गया, जो शायद ही कभी भरे.....।

जिन लोगों के पास ये दौलत है, क्या वह अपनी जिम्मेदारियाँ बखूबी निभाते हैं? आज इक्कीसवीं सदी में रहते हुए भी, समाज का एक वर्ग इसी तरह की विचारधारा रखता है। इस तरह की सोच, समाज से कब खत्म होगी.....?

**901, मनिशापुरती, न्यू शास्त्री नगर, अपोजिट सिद्धार्थ हॉस्पिटल, गोरेगांव (वेस्ट) मुंबई 400104**  
**मो. 7977238286**



## संस्कार



ललिता वर्मा

दीपाली का छोटा सा परिवार था। इकलौती बेटी थी। सुख सुविधाओं की कोई कमी न थी। पति एक बड़ी कम्पनी में उच्च पद पर थे और दीपाली स्वयं सरकारी नौकरी में। मध्यम परिवार से ऊपर उठ कर अपने परिश्रम से उन्होंने एक अच्छा मकाम हासिल कर लिया था। इकलौती बेटी

रूपाली को बड़े लाड-प्यार से पाला था। उसने जो चाहा माता पिता ने सहर्ष दिलाया। अच्छी शिक्षा दिलाई। दोनों बेटी पर जान छिड़कते थे। रूपाली स्वतंत्र विचारों वाली आकर्षक मृदुभाषिणी युवती थी। बेटी के प्रेम में वे दोनों इतना मग्न थे कि उन्हें अहसास ही नहीं हुआ कि उसके विवाह के बारे में सोचना चाहिए। उनकी नींद तो तब खुली जब रूपाली ने स्वयं अपने स्कूल में सहपाठी रहे नीरज के साथ अपने प्रेम के विषय में मां को बताया। वह और नीरज विवाह करना चाहते थे। दीपाली तो चौंक गई। उसकी नज़र में रूपाली अभी बच्ची थी। ससुराल में कैसे एडजस्ट करेगी? कौन उसका इतना ख्याल रखेगा? नीरज के माता पिता व भाई-बहन भी थे। वह कैसे संबंधों को संभालेगी? दीपाली के दृष्टि में परिवार बड़ा था। उसे रूपाली की चिंता होने लगी पर रूपाली अपनी ज़िद पर अड़ी रही। यूँ तो नीरज का परिवार भी सम्पन्न था पर माँ का दिल तो माँ का होता है। आखिर रूपाली और नीरज का रिश्ता तय हो गया। सगाई भी हो गई और चार महीने बाद विवाह की तिथि भी निकल आई। इस बीच वे दोनों कई बार मिले। रूपाली खुश तो थी पर नीरज एक मल्टीनेशनल कंपनी में अच्छे पद पर होने के कारण अधिक समय नहीं निकाल पाते थे जो दीपाली की एक और चिंता का सबब था। रूपाली इस विषय में चुप थी।

आखिर शादी का दिन आ गया। पंजाबी परिवार में चूड़ा रस्म बहुत महत्वपूर्ण होती है। चूड़ा वधु का मामा लाता है। चूड़े में लाल व सफेद रंग की 21 चूड़ियां होती हैं। जूड़े की रस्म की सभी तैयारियां हो गई थीं। पंजाबी लोकसंगीत बज रहा था। सज संवर कर

डायमंड नेकलेस डिजाइनर लहंगा पहने रूपाली जब सबके बीच आई तो ऐसे लग रही थी कि जैसे आकाश से कोई अप्सरा उतर आई हो।

सब की निगाहें उस पर टिक गईं। रूपाली को एक मूढ़े पर बैठाया गया और उसे आँखें बंद करने को कहा। यही रीत है। चूड़ा रस्म पूरी होने से पहले दुल्हन चूड़ा नहीं देखती। चूड़े को दूध में धोया गया और मामा मामी ने उसके दोनों हाथों में चूड़ा पहना दिया। दीपाली यह सब देख भावुक हो रही थी और हतप्रभ भी। अब रूपाली को आँखें खोलने को कहा। रूपाली ने चूड़ा देखा तो उसके चेहरे पर कई रंग आए कई गए ठीक जैसा दीपाली महसूस कर रही थी। तभी मामा ने पूछा -रूप चूड़ा कैसा लगा? रूपाली ने चहक कर कहा; *ऑसम* बहुत सुंदर है लव यू मामू। फिर दोनों हाथ उठा कर मुस्कराते हुए कई पोज दिए पर दीपाली उसका मन पढ़ चुकी थी।

जैसे ही एकांत मिला दीपाली ने कहा- बेटा न तो चूड़ा लहंगे के रंग से मेल खाता है न ही कुछ खास है, सस्ता सा लगता है। मुझे तो पसंद नहीं आया अगर कहो तो दूसरा मंगवा दूँ? रूपाली कुछ देर चुप रही फिर बोली- मम्मा चूड़ा तो मुझे भी पसंद नहीं आया पर अगर दूसरा पहनूंगी तो मामा को कितना बुरा लगेगा। मैं उनका दिल नहीं दुखा सकती। अपनी तरफ से तो वे बेस्ट ही लाए होंगे। मैं एडजस्ट कर लूंगी, फिर लहंगा ज्यूलरी सब तो हैवी है न। सुनकर दीपाली का मन भर आया और बेटी को कस कर गले से लगा लिया। मन ही मन ढेरों आशीर्वाद दिए। आज उसे लगा कि सच में उसकी बेटी बड़ी व समझदार हो गई है। जो अपनी खुशी के लिए किसी का दिल नहीं दुखा सकती तो कोई उसे क्यों न प्यार करेगा! वह आश्चर्य व चिन्तामुक्त हो गई। उसे अपनी बेटी पर गर्व हो आया कि सभी प्रकार की सुख सुविधाओं के बीच अच्छे संस्कारों को भी ग्रहण किया है। उसने मन ही मन ईश्वर का धन्यवाद किया और एक लम्बी सांस ली।

—अहमदाबाद, मो. 9909155211

## एक पाती कीवी के नाम



प्रिय,

प्यारी, छोटू,

किविया.. क्या नाम दूँ तुम्हें? किंतु बिना नाम के मैं तुमसे कैसे बात करूँगी, तुम्हें क्या बतलाऊँगी। तो चलो, कीवी, जो तुम्हें जन्म से पुकारती हूँ, इसी नाम से आज दिल की बातें करेंगे। आज का दिन विशेष हो जाता है क्योंकि तुम हमारे पास जो आई थी। ये जन्मदिन मुझे खुशी और ऊर्जा की अनुभूति करवाता है।

माँ, पत्र लिखने का ये दस्तूर हमेशा की तरह आज भी पूरा कर रही है। कीवी, समय बीतता जा रहा है और मेरे मन में यादों का बक्सा भरता जा रहा है। तुम्हारे रोज के काम, बातें, शैतानियाँ सब मेरे मन में अंकित रहती हैं, फिर भी ये पत्र लिखकर उनको मैं सहेजना चाहती हूँ। गया साल बहुत अच्छा रहा तुम्हारे लिये, और ये साल भी बहुत अच्छा गुजरेगा, यही दुआएँ देती हूँ।

उम्र का बढ़ना हमें मानसिक रूप से भी परिपक्व बनाता है। तुम्हारा पहले से ज़्यादा समझदार होना यही बताता है। स्कूल में साथी और गुरुओं का प्यार तुम्हें खूब ही मिलता है, साथ ही साथ घर का ..पर एक शिकायत कि “कीवी को कोई कुछ नहीं कहता”, दादा की हमेशा रहती है। कभी -कभी लगता है कि वो बेचारा सही तो कह रहा है।

कीवी, इस बार तुमने मेरे साथ और अकेले भी कई साहित्यिक मंचों पर भीगीदारी की। open mic में भी भाग लिया। माँ को बड़ा गर्व होता है जब तुम बड़े ही आत्मविश्वास के साथ बोलती हो। बड़े-बड़े प्रबुद्ध जनों का आशीर्वाद भी तुमको भर-भरकर मिलता है। सभी तुम्हारे बोलने की, कला इत्यादि की तारीफ़ करते हैं पर पढ़ाई भी यदि बिना मेरे बोले कर लिया करो तो सोने पे सुहागा हो जाये। कीवी, दादा के साथ तुम्हारे लड़ाई-झगड़े बढ़ने लगे हैं, बराबर की टक्कर देने लगी हो। और भई बेचारा.. छोटी बहन के चक्कर में फँस जाता है। अपने पापा की भी तो तुमने खूब क्लास लगा रखी है। अब मुझे एक मुहावरा याद आ रहा है कि, “अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे” ये मज़ाक़ भर है।

कीवी, तुम अभी नहीं समझ पाओगी कि तुम हम सभी के लिए क्या हो। बस ये कह सकती हूँ कि बेटियाँ घर का सौभाग्य होती हैं। नानू-नानी, दादी और सभी के लिये तुम प्यारा बच्चा हो और बाक़ी परिचितों के लिये कीवी Instagram queen हैं, जो जबरदस्त reels बनाती हैं, एक्टिंग करती हैं, मस्ती करती हैं। किविया, 22-1-2016 की वो कोहरे में लिपटी सर्द सुबह, जब ओस चारों ओर चमचमा रही थी और बदन को सुन्न किये जा रही थी। तभी मेरे कानों में @dr sudarshna जी की वो फुसफुसाहट.. “तुम्हें बेटी चाहिये थी ना, बेटी आई है”, मेरे निश्चेतन शरीर में एक उत्तेजना सी भर गई। अधखुली की नज़रें, सूखे पपड़े होंठ हल्का सा हिले और ओस की दो बूँदें आँखों के कोर से निकल गालों पर लुढ़क गई। कुछ समय बाद तुमको नानी की गोद में पाया।

कीवी, आज तुमने खुद अपने जन्मदिन की पार्टी का कार्ड बनाया है, अपने दोस्तों को बुलाया है। सब कुछ तैयारी हमने भी कर ली है। तुम खूब मस्ती और धमाल करना। छोटू, आज के इस विशेष दिन पर माँ का यही आशीर्वाद है कि तुम हमेशा भोर किरण की तरह चमकती रहो, फूलों की तरह महकती रहो। प्रेम का सागर बन सभी अपनों और परायों के बीच मुस्कराहट बाँटती रहो।

हाँ, इस बार ये पत्र मैं तुमको पढ़ने को भी देने वाली हूँ। मुझे पता है कि तुम अब हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं को बखूबी पढ़ लेती हो, सो तुम्हारी प्रतिक्रिया और भाव जानने की कोशिश करूँगी। रात बहुत गहरी हो चली है, मेरे बगल में तुम अपनी सपनीली दुनिया में खोई हुई हो। न जाने इन पलकों के भीतर कितने ख्वाब सजा रही हो, किंतु माँ की ये ही दुआ है कि हर एक ख्वाब तुम्हारा पूरा होवें।

देर सारा प्यार तुमको,



तुम्हारी माँ,  
दीपमाला

कविता



रश्मि रमानी  
इंदौर, मो. 9827261567

**कृष्ण कहाँ हैं ?**

कोई नहीं जानता  
कृष्ण कहाँ हैं ?  
मथुरा, द्वारिका, हस्तिनापुर  
सब सुनसान हैं  
शंख, चक्र, पीताम्बर, मोरपंख  
फैले बिखरे पड़े हैं  
गायब है तो बस  
बांसुरी !  
जेठ की कड़ी दोपहरी में  
हवा के झोंकों में

अचानक समा जाती है  
चंदन की सुगंध  
दूर किसी पेड़ पर कूकती है कोयल  
फरफराने लगते हैं पत्ते  
महकते हैं आमों के बौर  
उधेड़बुन में गुम राधा  
सोचती है बीते दिनों के बारे में  
जादू, माया, तिलिस्म, इंद्रजाल, सपना, सत्य  
क्या था ?  
अब कहाँ होंगे कृष्ण ?

एकाएक  
हवा की लहरों पर तैरता आता है  
बांसुरी का स्वर  
भूला - भूला - सा  
जैसे पिछले जनम में सुना  
बौराई राधा  
कृष्ण को अपने अंदर अनुभव कर रही है।  
सिंधु नदी और सभ्यता का तर्पण  
नदी की सतह पर खामोशी थी  
जैसे  
नदी का दूसरा नाम शान्ति हो सकता था !  
पर  
नदी के भीतर गूँज थी

सुर सागर की  
जिस साफ़ पानी के आईने में  
अपने आपको निहार कर  
मोअन जो दड़ो की नर्तकी  
मुग्ध होती थी अपने आप पर  
वह धुँधला गया था।  
अतीत की स्मृतियों में डूबी नदी  
इतनी चुप थी कि  
इतिहास  
समय की चादर ओढ़ कर  
उसके करीब आराम से सोया था।  
नदी की तलहटी में  
न सीपियाँ, न मोती  
सभ्यता और संस्कृति के  
अस्थि - पिंजर पड़े हुए थे  
मनुष्य की मृत्यु पर तो  
पुत्र तर्पण करते हैं  
नदी में अस्थियाँ प्रवाहित करते हैं  
पर  
सिंधु-सभ्यता और हड़प्पा - संस्कृति का  
भयावह तर्पण  
सिंधु मां ने स्वयं किया था!

## रेड सिग्नल की हथेली



सेवा सदन प्रसाद

आज बोल्ट मैडम बड़ी धीमी गति से कार चला रही थी। ऑफिस जाने की जल्दबाजी नहीं थी। सिग्नल तक पहुँचते-पहुँचते लाल बत्ती जल उठी। मैडम ने अपनी कार रोक दी। कार रुकते ही चारों ओर दिखलाई पड़ी—हथेलियाँ, भीख मांगती हथेलियाँ। कुछ बुर्जुग पर ज्यादातर औरतें एवं बच्चों। मैडम वर्षों से यह दृश्य देखती आ रही है। वैसे मैडम इसके सक्त खिलाफ़ है। मैडम निडर अनुशासनप्रिय एवं गलत के खिलाफ़ आवाज़ उठाने में अग्रणी है। ऑफिस में इस ऑफिस सुपरिटेण्डेंट से सब डरते हैं। तभी तो वह 'बोल्ट मैडम' के नाम से मशहूर हो गई।

सिग्नल लाल हो जाने से गाड़ी रूक जाने की चिंता नहीं होती पर क्रोध अवश्य आता। प्रथम तो बाधा, दूसरा चारों ओर दिखती भीख मांगती हथेलियाँ। भिखारियों का झुँड। उसी झुँड में से एक मासूम सी बच्ची कार के करीब आ कर खड़ी हो गई। वहीं गंदा सा नीला फ़ाक, बिखरे-बिखरे बाल। वह हमेशा कार के शीशे के पास खड़ी हो जाती, हाथ भी नहीं फैलाती पर उसकी आंखों में नज़र आता बस याचना ही याचना। बोल्ट मैडम जब तक उसे गौर से निहारती, सिग्नल हरा हो गया और कार चल पड़ी। मैडम कभी-कभी सोचती सारे रईसों के पैसे छीन इन हथेलियों पे रख दिए जाएँ ताकि इनकी मजबूरी खत्म हो जाए। लोग मात्र दो-चार रूपये या कुछ खाने की चीजें देकर अपने कर्तव्य की इति श्री कर लेते हैं। लोगों को मालूम नहीं कि समय रहते इस समस्या का समाधान नहीं ढूँढा गया तो भविष्य में यही हथेलियाँ लूट-पाट, खून-खराबा एवं जिस्मों का सौदा करने लगेंगी। तब कुछ बेकसूर एवं शरीफ़ लोग भी इनके शिकार हो जाएंगे। यह सच है कि कुछ समाजसेवी संस्थाएं एवं एन.जी.ओ. इनके हित हेतु प्रयत्नशील हैं पर इस बहुसंख्यक देश में ऊँट के मुँह में जीरे जैसा है। हर संपन्न व्यक्ति को इस ओर ध्यान देना होगा। सिर्फ़ सरकार के सहारे हर समस्या का समाधान संभव नहीं।

बोल्ट मैडम जब ऑफिस से वापस लौट रही थी तो पुनः रेड सिग्नल की वजह से कार रोकनी पड़ी। सिग्नल पे खड़ी नीली फ़ाँक वाली लड़की फिर दिखी। पर इस बार वह कार के निकट नहीं आई। शायद बार-बार की उपेक्षा से मायूस हो चुकी थी इसीलिए मैडम को हिकारत भरी नज़र से देखने लगी। तभी मैडम ने इशारे से बुलाई तो लड़की दौड़ कर कार के करीब आ गई। मैडम ने जल्दी से दरवाज़ा खोलकर बोली— "अंदर आ जाओ"।

लड़की भौंचक हो मैडम को निहारने लगी। पुनः अनुरोध ठुकरा न सकी और अंदर बैठ गई। कार चल पड़ी क्योंकि सिग्नल हरा हो गया।

बातचीत से पता चला कि उस लड़की की मां नहीं है और पिता शराबी है। माँ ही चौका-बर्तन कर घर चलाती थी पर 'कोरोना' की शिकार हो गई। पेट की खातिर कमरे में कैद होकर नहीं रह सकती थी। तब बाप और भी शराब पीने लगा। कभी-कभी तो उसकी भीख के पैसे भी छीनकर शराब पी जाता। उसे सुबह-सुबह नींद से जगा कर सिग्नल के चौराहे पे छोड़ जाता। गर बापू नशे के कारण जल्दी नहीं उठ पाता तो वह स्वयं सिग्नल पे पहुँच जाती क्योंकि यहीं से तो शहर के सारे रईस गुजरते हैं वर्ना अपनी गली में तो नज़र आता सिर्फ़ दूधवाला, ठेलेवाला या मज़दूर। कार के हार्न बजते ही लड़की की तंद्रा भंग हो गई।

गाड़ी से उतरते ही बोल्ट मैडम ने उस लड़की को नहाने के लिए बाथरूम में भेजा। जब वह बाथरूम से बाहर आई तो देखी-टेबल पे उसके लिए नये ड्रेस, बर्थ डे केक और कई तरह के पकवान। लड़की आश्चर्यचकित हो मैडम को निहारने लगी। वह लोगों से ऑन लाईन डिलीवरी की बातें सिर्फ़ सुनती थी पर आज सब प्रत्यक्ष देख ली।

उसे खामोश देख कर मैडम बोली— "आज तेरा 'बर्थ डे' मनाऊँगी हम दोनो सेलेब्रेट करेंगे अब तू सिग्नल पे हाथ नहीं फैलाएगी आज मैंने 'सहारा फाउंडेशन' से बात कर लिया है उसकी संचालिका मेरी सहेली है। वहीं रहकर तू पढाई करेगी और अपने भविष्य का निर्माण... कल मैं वहाँ पहुँचा दूँगी।"

लड़की यह सब सुनकर निहाल हो उठी। पढ़ना तो वह चाहती ही रही, लगता है, अब सपना साकार होगा। मैडम उसे सिर्फ मैडम ही नहीं एक मां, एक संरक्षिका, एक देवी सी लगी। उसी के सहारे सुबह पहुँच गई – एक नई उड़ान भरने।

मैडम अब बहुत प्रसन्न रहने लगी। धीरे-धीरे अपने कई मित्रों एवं समाजसेवी संस्थाओं को रिक्वेस्ट कर सिग्नल पे फैलती कई हथेलियों से कटोरे छीन कर पेन एवं पेंसिल थमा दीं। लोग मैडम की भावनाओं, संवेदनाओं के कायल होने लगे। अब लोग उन्हें 'कड़क मैडम' नहीं 'करेक्ट मैडम' कहने लगे।

मैडम को भी अपने करेक्ट निर्णय पे सदा गर्व महसूस होता। वह हर पर्व-त्योहार पे जाकर उससे मिल लेती। जितना भी संभव हो पाता आर्थिक सहयोग भी करती रहती। उसकी प्रगति से उसे काफी खुशी होती। अब तो अपने शराबी पिता की भी खोज खबर रखने लगी। मैडम भी तब निश्चिंतता की सांस ली।

कई वर्षों बाद मैडम जब ऑफिस से वापस लौट रही थी तो रेड सिग्नल पे वैसी ही लड़की दिखी मासूम और मायूस। वह लड़की कार के करीब आ पाती तभी सिग्नल हरा हो गया। कार रूकी नहीं पर उस लड़की को बचाने के चक्कर में मैडम अपना

संतुलन खो बैठी और लड़की कार से टकरा गई। मैडम भी जोरदार ब्रेक लगाई पर उनका सर कार स्टीयरिंग से टकराकर लहलुहान हो गया। भीड़ जमा हो गई। आनन फानन में कुछ नौजवान मैडम एवं लड़की को नजदीक के अस्पताल में ले गए। लड़की को तो मामूली चोट आई थी पर मैडम बेहोश हो गई थी।

होश आने पे मैडम ने सबसे पहले दुर्घटनाग्रस्त लड़की की खैरियत पूछी। उसकी कुशलता जानकर राहत महसूसी। तभी सामने से एक नर्स दवा लेकर आती दिखी नीली फ्रॉक वाली लड़की आज सफेद ड्रेस में काफी अच्छी लगी। मैडम की आंखों में एक नई चमक आ गई। वह अपना दर्द भूलकर उठ बैठी। नर्स मैडम से लिपट गई। आज भगवान ने उस देवी की सेवा करने का अवसर प्रदान कर दिया, जिसने उसकी जिंदगी को संवारा। मैडम जब बगल के बेड पे पड़ी मासूम लड़की की ओर निहारी तब एक नर्स, एक दत्तक बेटी ने देवी जैसी मां को यह वचन दिया "अब आप इसकी चिंता न करें.....उसकी परवरिश की जिम्मेदारी अब मेरी है..... आपने इतना सक्षम जो बना दिया।"

मैडम खुश हो कर अपना सारा दर्द भूल बैठी। मन ही मन विनती करने लग गई - काश! यह सिलसिला ऐसे ही जारी रहे।

नवीं मुम्बई, मो. 9619025094

## रिपोर्ट

### नीलम कुलश्रेष्ठ अपने उपन्यास 'अवनी, सूरज और वे' के लिए पुरस्कृत

अंतर्राष्ट्रीय विश्व मैत्री मंच व हेमंत स्मृति सम्मान के भोपाल में 16 फ़रवरी को संपन्न हुए राष्ट्रीय सम्मेलन में कैलाश पंत, बुद्धिनाथ मिश्र, विजय बहादुर सिंह, मध्य प्रदेश के साहित्य अकादमी के अध्यक्ष व अन्य विद्वानों द द्वारा अहमदाबाद की लेखिका नीलम कुलश्रेष्ठ को उनके गुजरात की महिला किसानों पर आधारित उपन्यास 'अवनी, सूरज और वे' [डॉ. नीरज शर्मा के वनिका प्रकाशन से प्रकाशित] के लिए नंदन नंदिनी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। ये उपन्यास किसी भी भाषा का प्रथम उपन्यास है जो कि महिला किसानों पर लिखा गया है। इस मंच की संस्थापक संतोष श्रीवास्तव हैं। इस मंच के सशक्त स्तम्भ हैं मुजफ़्फ़र सिद्दीकी व जया केतकी। इस कार्यक्रम में युवा कवि अरुणाभ सौरभ को हेमंत स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया, जो संतोष अपने कवि बेटे हेमंत की स्मृति में प्रदान करतीं हैं जिनकी मृत्यु मात्र 23 वर्ष की अवस्था में हो गई थी। देल्ही के उपेन्द्रनाथ रैणा जी को साहित्य शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया। कुल मिलाकर 13 साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। इस सम्मलेन की उपलब्धि थी कहानी सत्र व लघुकथा सत्र। कहानी सत्र के अध्यक्ष थे डॉ. संजीव कुमार व लघुकथा सत्र की अध्यक्ष थीं कांता रॉय।



## शोलीदा



डॉ. सविता चड्ढा

"साहब कोई मेम साहब आपको मिलने आई है" विषाद ग्रस्त राघव को उसके सहायक बहादुर ने सूचित किया।

"क्यों आई है... कोई चंदा लेने आई होगी.... तुम दे दो " राघव ने करवट बदलते हुए रुक-रुक कर बहादुर को जवाब दिया।

"जी वह कुछ लेने नहीं कुछ देने आई है" बहादुर ने राघव के पास आते हुए कहा।

राघव के चेहरे पर उसकी निगाह अटक गई, वह सोचने लगा "क्या जीवन है इसका, सब कुछ है इसके पास परंतु जाने कौन सी बीमारी ने इसका जीवन इस कमरे में बंद कर दिया है। पिछले 5 वर्षों से वह राघव के घर, उसके पास काम कर रहा है परंतु उसे राघव साहब की बीमारी का पता नहीं लगा। समय पर खा लेते हैं, सब समझते हैं, बुरे- भले, दुख -सुख में शामिल होते हैं पर कोई ऐसी कील है जो इनके भीतर फांस की तरह चुभ रही है, तभी वह बेचैन होते हैं। मुझे तो लगता है राघव साहब को परेशान रहने की बीमारी है।" बहादुर ने मन ही मन सोचा।

तभी राघव ने आंखें खोली और कहा "अच्छा कुछ नाम पता पूछा है उनका, कौन है, कहां से आई हैं।"

"कह रही थी जब आप पहाड़गंज के मकान में रहते थे, वहीं की है। आपके पुराने पड़ोसी की बेटी है।"

बहादुर ने जवाब दिया।

"अरे तुमने पहले क्यों नहीं बताया", कहकर राघव उछलकर बिस्तर पर बैठ गए और बहादुर को उन्हें लाने के लिए कहा।

बहादुर कमरे से चला गया। दो पल में मानो राघव संजीवनी बूटी सूंघ गए थे। चिकन का मैरून लंबा कुर्ता और कड़क सफेद पायजामा पहनकर उन्होंने अपना चेहरा दर्पण में देखा। पैरों में लेदर की काली बढ़िया चप्पल पहनी और झटपट बाहर की ओर लपके। बड़े कमरे के आरामदायक सोफे पर कोई महिला आसमानी रंग की साड़ी पहने बैठी थी। राघव एक पल को रुका, उसने आने वाली महिला को पीछे से पहचानने की कोशिश की। राघव का

ध्यान आगंतुक के कानों में सफेद मोतियों के गोल टॉप्स, गले में भी सफेद मोतियों की माला थी। ब्लाउज का गला पीछे से काफी गहरा था।

राघव से अब रुका नहीं गया तो वह नमस्कार करते हुए आगे बढ़ा। आवाज सुनकर आई महिला भी उठ खड़ी हुई। राघव सामने वाले सोफे पर बैठ गया और बहादुर से शीतल पेय लाने को कहा। बहादुर आज्ञा का पालन करने के लिए रसोई घर की ओर चला गया। राघव महिला का चेहरा देखता रहा।

बालों को सुंदरता से गुंथा हुआ था। माथे पर लाल बड़ी सी बिंदिया चमक रही थी और होठों पर हल्के गुलाबी रंग की लिपस्टिक थी। महिला के हाथ में सफेद पर्स और उसके कान के बूंदों और गले की सफेद मोतियों की माला के साथ मेल खा रहा था। राघव ने बात शुरू की "माफ कीजिए मैंने आपको पहचाना नहीं।"

महिला मुस्कराती रही। राघव ने फिर कहा "आप अपना परिचय तो दीजिए।"

महिला की मुस्कराहट राघव के चेहरे को देख और गहरी हो गई। राघव दो पल को चुप हुआ फिर अपनी अधीरता को छिपाने का प्रयत्न करते हुए बोला "बहादुर कह रहा था आप कुछ लौटाने आई हैं।"

महिला इस बार भी चुप रही। अब मुस्कराहट में दबी हँसी का स्वर भी था। अपने सामने एक अपरिचित खूबसूरत महिला को देख राघव तत्काल परिचय जानना चाहता था। वह अपनी तरफ से कुछ भी अनुमान लगाकर कोई मुसीबत मोल नहीं लेना चाहता था। पता नहीं यह कौन है। मैं बेकार बोलता जा रहा हूँ। अब जब तक यह नहीं बताएगी मैं भी चुप रहूँगा।

कमरे में कुछ क्षण चुप्पी रही, राघव ने एक दो बार महिला के चेहरे की ओर देखा, उसकी आंखों की शरारत और होठों की हँसी उसे बेचैन किए जा रही थी। तब ही बहादुर ताजे जूस के दो गिलास ट्रे में रखकर ले आया। उसने पहली बार राघव को इतना प्रसन्न देखा था। बहादुर ने एक गिलास उस महिला की ओर बढ़ाया तो वह बोली "पहले साहब को दे दो" वह राघव की ओर मुड़ा तो उसने ट्रे पकड़कर उसे महिला की ओर बढ़ा दिया।

राघव परेशान था और वह महिला अब भी होंठ दबाए मुस्कुरा रही थी। अब उस महिला ने ट्रे पकड़ ली और राघव की और ग्लास बढ़ाते हुए कहा "आप लीजिए, " आखिर हारकर राघव को ही गिलास पहले उठाना पड़ा।

दोनों ने जूस का गिलास लिया राघव ने झटपट से गिलास खत्म करके मेज़ पर रख दिया। महिला चुपचाप चुस्कियां लेकर जूस पीती रही। राघव ने कहा "देखिए आप काम बताइए, मेरी तबीयत वैसे ही ठीक नहीं है। मैं और प्रतीक्षा नहीं कर सकता। " कहकर वह उठने को हुआ।

"धीरज रखिए

रघु जी इतना गुस्सा ठीक नहीं, थोड़ी सी कोशिश करिए तो आप मुझे पहचान जाएंगे। ऐसा करते हैं हम बातचीत शुरू करते हैं। परिचय अपने आप हो जाएगा महिला की मिठास भरी आवाज़ ने राघव को प्रभावित किया। परंतु रघु के संबोधन से वह तिलमिला उठा "बहादुर कह रहा था आप कुछ देने आई है मुझे, जल्दी कहिए मेरे पास समय नहीं है। "राघव अब परेशान लग रहा था।

"आपकी कोई बहुत प्यारी चीजें, जो कभी खो गई हों, याद करिए। "महिला ने बातचीत शुरू की।

"बहुत कुछ खोया है मैंने, अपने बड़े बिगडेल बेटे के गम में घुल घुल कर मरते हुए खोया है मैंने अपने मां-बाप को। पति द्वारा ठगे जाने पर अपनी परित्यक्ता बहन की बड़ी बेटे द्वारा अपने पिता से तंग होकर आत्महत्या और फिर उनकी खुशियों को खोया है मैंने। मेरा परिवार मुझे अकेला छोड़कर विदेश में बस गया है, उन सबको मैं खो चुका हूँ। आप क्या लौटाने आई हैं मुझे। " राघव के ऊंचे स्वर में इस तरह गंभीर बातचीत नहीं चाहती थी महिला।

अब उस महिला की मुस्कुराहट भाग चुकी थी। आंखें हल्की नम हो आई थी।

"अपनी शादी से पहले, आपका बचपन, उसकी कोई बात याद नहीं आपको। " महिला की बात सुनकर राघव के जैसे होश उड़ गए। वह अचानक होश में आया। उसे लगा उसने कोई गलती कर दी है।

उसे अपने दुखों को इतनी जल्दी भावुकता में नहीं व्यक्त करना चाहिए था।

"बचपन की बातें... बहुत कुछ याद है ....मीठी, सुनहरी इंद्रधनुषी यादों का खजाना है मेरे पास। " राघव ने अतीत में लौटते हुए कहा।

महिला ने देखा अब राघव के चेहरे पर संतुष्टि है। कुछ देर पहले की असंतुष्टि की छाया अब अचानक गायब हो चुकी थी।

मीठी और सुनहरी यादों ने राघव को कुछ पल के लिए प्रसन्न कर दिया था।

"मैं आपको आपकी कई वर्ष पुरानी कुछ चीजें लौटाने आई हूँ। आप जरा बहादुर को कहिए बाहर गाड़ी में से वह पार्सल ले आए। " महिला ने कहा तो राघव उठ खड़ा हुआ "चलिए मैं चलता हूँ बाहर, अपना खोया तलाशने और उसे वापस पाने के लिए हमें बहादुरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। "

राघव और महिला बाहर आ गए। बाहर आसमानी रंग की लंबी कार में ड्राइवर बैठा हुआ था।

मेम साहब को देखते ही उसने बाहर आकर एक पैकेट मालकिन की ओर बढ़ा दिया। राघव ने पैकेट पकड़ना चाहा तो महिला ने आंखें तरेर कर मुस्कुराते हुए कहा "पहले आप अंदर चलिए। "

राघव अंदर आकर सोफे पर बैठ गया। उसे लगा यह महिला बेवजह उसे परेशान कर रही है पता नहीं अब तक अपना नाम भी नहीं बताया, कहां से आई है यह भी नहीं बताया। राघव के मन को विचारों को शायद वह महिला भाँप गई थी। कमरे में प्रवेश करते ही वह बोली "माफ कीजिए राघव जी, आपको मैंने अपना नाम भी नहीं बताया, मेरा नाम गीता है। "

राघव ने मन ही मन सोचा "गीता हो या सीता, मुझे क्या फर्क पड़ता है। "

राघव की निगाह उस पार्सल पर थी। उसने गीता की ओर देखते हुए कहा "गीताजी बहुत हो गया, अब तो मेरी बेचैनी दूर कर दीजिए। "

"आप अब तक वैसे ही हैं, बचपन में भी आप ऐसे ही परेशान और बेचैन थे, शोलीदा कहीं के। " महिला ने मुस्कान बनाए रखी।

"देखिए आप साफ-साफ कहिए, आप मुझे कैसे जानती हैं और उस पैकेट में क्या है। राघव ने उस पैकेट की ओर हाथ बढ़ाया तो गीता ने पैकेट को अपनी ओर खींच लिया। राघव का मन हुआ इस महिला को बाहर भगा दे परंतु उसके चेहरे की भाव भंगिमा ऐसी थी कि राघव अब तक उसके आकर्षण में बंध गया था और अब चुभन और बेचैनी और ज़्यादा हो गई।

"आपने मुझे शोलीदा क्यों कहा और इसका मतलब क्या हुआ, जरा बताएंगी " राघव ने अपनी आवाज में थोड़ा क्रोध लाने का प्रयास किया।

"आप नहीं जानते, शोलीदा, शोलीदा अर्थात् परेशान, बेचैन और..." गीता आगे कहते-कहते चुप हो गई।

"आपको याद है बचपन में भी आप ऐसे ही गुस्सैल होकर बेचैन हो जाते थे और आपने मेरे पिता जी को भी उसी बेचैनी में कितना बुरा भला कहा था । "

गीता के चेहरे पर मुस्कान लापता हो चुकी थी, गंभीर हो गई वह और राघव के पास वाले सोफे पर जाकर बैठ गई । गीता राघव का चेहरा देखने लगी और उसने कहना शुरू किया " मैं सोचती थी कि आप मुझे पहचान जाएंगे परंतु मुझे दुख हुआ कि आपने मुझे तो क्या मेरे परिवार को भी नहीं पहचाना ।

मैं गीता तो बाद में बनी मेरे बचपन का नाम गिन्नी था और हम आपके सामने वाले घर में..... ।

राघव ने गिन्नी का नाम सुनते उसका हाथ पकड़ लिया और कहा" तुम बनिया अंकल की छोटी बेटी हो ।

जब तुम लोगों ने वहां से घर छोड़ा तब तुम दस या बारह साल की रही होगी । .... परंतु तुम्हें मेरा पता कैसे मिला और तुम्हारे पिताजी कैसे हैं । अभी भी वैसे ही गुस्सैल हैं क्या, या थोड़ा ठीक हुए हैं । मुझे याद है मैंने उनके कितने उपनाम रखे थे और...." राघव ने बेचैनी से गीता के चेहरे पर नज़रें जमा दीं ।

गीता उदास हो गई " पिताजी तो अब नहीं रहे । भाई फौज में चला गया है । बड़ी दीदी की शादी हो गई हो गई है । माँ ने तुम्हारी कुछ चीजें संभाल कर रखी हुई थीं । तुम तो भूल चुके होंगे शायद । गीता ने पैकेट राघव की ओर बढ़ा दिया । राघव ने कुछ ही पलों में पैकेट खोल लिया.... उसमें सफेद, गुलाबी, नीली गेंदे थी । राघव की आंखों में खुशी के आंसू आ गए । "ओ गिन्नी मैं सारी उम्र तुम्हारा एहसानमंद रहूँगा ।

तुम नहीं जानती इनके लिए मैंने अपने जीवन के कितने वर्ष बेचैनी में बिताए हैं । " राघव ने सारी गेंदों को सोफे पर बिखेर दिया और उन्हें प्यार से सहलाने लगा । खुशी के मारे उसके होंठ फड़फड़ा रहे थे और हाथ काँप रहे थे ।

गीता ने राघव की ओर देखा पानी की लकीर उसकी आँखों में चमक रही थी । गीता ने राघव को कहा क्या तुम मुझे चाय नहीं पिलाओगे कितनी दूर से मैं तुम्हारी बेचैनी की दवा लौटाने आई हूँ । "

"हां हां, क्यों नहीं " कह कर राघव ने बहादुर को आवाज़ दी और चाय लाने को कहा ।

गिन्नी मुझे आज बहुत दुख हुआ तुम्हारे पिताजी का सुनकर परंतु मैं एक बात कहना चाहता हूँ, तुम्हारे पापा को मैंने कभी माफ़ नहीं किया इतने वर्ष । "राघव ने कहा तो गीता उदास हो गई" मैं जानती हूँ राघव तुम पापा से नाराज़ थे क्योंकि तुम जब भी दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलते तुम्हारी गेंद हमारे घर आ जाती थी और

पापा सोचते तुम लोग जानबूझकर दीदी के लिए गेंद हमारे घर फेंकते हो । इसलिए वह हमेशा तुम्हारी आई गेंद छिपा लेते और कह देते कि यहाँ नहीं है । "

तुम नई गेंद ले आते और फिर कभी ना कभी जब वह गेंद हमारे घर आ जाती और पापा वह तुम्हें लौटाते नहीं थे ।

सारी गेंद छिपाई हुई जगह से माँ ने उठा ली थी कि एक दिन तुम्हें लौटा देगी, पर इस बीच पापा ने वह मकान बेच दिया । उन दिनों तुम लोग पंजाब गए हुए थे । माँ तुम्हारी अमानत अपने साथ ले आई " गीता ने धीरे-धीरे अपनी बात को विराम दिया ।

"सच मानो गीता, जीवन में मुझे अपनी किसी भी मूल्यवान वस्तु के खो जाने का इतना दुख नहीं हुआ जितना बचपन की इन गेंदों के वापस ना मिलने का हुआ था । कारोबार में कितने घाटे, जीवन में कितनी चीजें खोईं फिर भी .... । जब हम पंजाब से शादी के बाद लौटे तो पता चला कि तुम लोग अपना घर ही बेच गए हो तो मेरा जीवन कांटों की सेज पर रहा । रह-रह कर मुझे तुम्हारे पापा पर गुस्सा आता, आस पड़ोस में किसी को तुम अपना पता बता कर नहीं गए । बस अब तक मेरा जीवन इसी चुभन के कारण कभी सकून नहीं पा सका था । राघव ने अपने दिल की बात कम शब्दों में गीता को कह दी ।

"सिर्फ इन गेंदों के कारण तुम परेशान रहे, हद है और हां .... तुमने बताया तक नहीं कि तुम्हारे माँ पिता सब लोग कहाँ हैं । " गीता ने पूछा ।

बहादुर ने चाय टेबल पर रख दी और साथ ही सैंडविच और बर्फी की प्लेट भी । गीता ने बिना किसी आमंत्रण के स्वयं ही सैंडविच उठाया और खाने लगी ।

राघव ने कहा "भई हमें भी तो पूछो" तो गीता की पुरानी मुस्कुराहट लौट आई ।

"खाओ-खाओ अपना ही घर समझो " राघव ने हँसने में गीता का साथ दिया । दोनों चाय पीने लगे ।

राघव ने गीता को बताया" भाई की शादी हो गई तो वह माँ बाबूजी को साथ लेकर यहां से दूसरे घर चला गया । मेरी शादी के बाद हम यहां रहने लगे । मेरी धर्मपत्नी का स्वभाव ज्यादा ही तीखा था ।

मुझसे एक गलती यह हो गई कि मैंने अपने पहले प्रेम की बात उसे बता दी थी । बस उसके बाद तो उसका रूप ही बदल गया । इसलिए हमारे दो बच्चे भी उसके तीखेपन को खत्म न कर सके ।

उसके स्वभाव के कारण हमारे परिवार में किसी के साथ भी उसकी नहीं बनी । मेरी शादी के 3 वर्ष बाद माँ बाबूजी बड़े भाई



के साथ हमेशा-हमेशा के लिए रहने चले गए थे। माँ पिता के साथ रहते हुए तो वह उसके कुछ खौफ़ खाती भी थी बाद में तो वह बिल्कुल निरंकुश हो गई। क्या क्या बताऊँ, सीधी सच्ची बात तो यह है कि मैं उसे बाँध ही नहीं सका। शायद मेरे बाँधने की कला तो तुम्हारे परिवार के जाते ही ढीली पड़ गई थी। एक दिन वह बच्चों को लेकर ना जाने कहां चली गई। आज तक उसका पता नहीं, मर गई, भाग गई, डूब गई.... और साथ ही मेरा वर्तमान और भविष्य भी डूबा गई, समाज में कुछ ना रहा मेरा। सब कुछ खो गया था। आज तक मुझे उसका कोई पता नहीं लगा। मैंने अपना पुराना घर भी बेच दिया। जो भी मेरा था वह सब खो चुका था। मैंने अपना पुराना घर बेचकर फिर से कारोबार किया तो वह चल निकला। रुपए पैसे की कमी तो नहीं रही लेकिन बचपन की गुम हुई गेंदे, गिन्नी और फिर बच्चे मेरे भीतर इन तीनों ने मुझे तुम्हारी भाषा में शौलीदा बना दिया।

आज मैं बहुत खुश हूँ मेरा अंतर्मन दो कीलों से आज मुक्त हो गया। जब मेरी पत्नी घर छोड़कर गई तब मेरा बेटा दो वर्ष का था और बेटी उस समय छ महीने की थी। अब तो पता नहीं कहां होंगे सब।

बहुत तलाशा भी उन लोगों को... फिर मैं बीमार रहने लगा। डॉक्टर कहते हैं डिप्रेशन है। मैं जानता था रोग का निदान...

राघव ने देखा गीता बहुत ध्यान पूर्वक राघव की बातों को सुन रही है।

"गिन्नी तुम कहो एक-एक बात कहो, तुम्हारी इस बीच की जिंदगी कैसी रही।"

"राघव, मैंने तो शादी ही नहीं की। यूपीएससी की परीक्षा देकर सीधे डायरेक्टर बन गई थी बहुत रिश्ते आए परंतु मैं हाँ नहीं कह सकी।" गीता ने गर्दन झुका ली। "तुमने शादी क्यों नहीं की, लड़कियों को अपना घर बना लेना चाहिए।" राघव ने कहा।

"घर तो है मेरे पास, सब कुछ है अपना, बस शादी नहीं की। मेरे प्रेम की नदी तो बचपन में ही मानो सूख गई थी। गीता ने गंभीर होकर कहा तो राघव की आवाज़ में शोखी आ गई" अरे वाह, गिन्नी तुम भी .....किससे ...क्या मैं उसे जान सकता हूँ.. बताओ ना कौन है ..?" राघव मानो अधीर हो गया "मैं तो तुम्हारी दीदी से ...."वह अचानक चुप हो गया "कौन है, कौन था, पर तुम उसे जानते हो।" गीता ने उदास होकर कहा।

शायद उसे राघव का अपनी दीदी के लिए कहना अच्छा नहीं लगा था। "

"तुम्हारी दीदी मुझे अच्छी लगती थी, अगर तुम लोग कुछ वर्ष और वही रहते तो मैं उससे प्रेम निवेदन कर देता ..." राघव हँसने लगा।

"जानती हो, यही बचपन की बात मैंने अपनी पत्नी को बता दी थी तुम्हारी दीदी वाली, बस उसे बर्दाश्त नहीं हुआ और जैसे एक बूँद ज़हर सारी मिठास नष्ट कर देती है और उसे खाने वाला भी नष्ट हो जाता है।

उसी तरह अश्रद्धा या घृणा भी अन्य व्यक्ति के प्रति ज़हर का काम करती हैं। वह मुझे प्रताड़ित करने लगी और बाद में बस धीरे-धीरे सब खत्म होता गया। " राघव ने आँखें मूँद ली। गीता समझ गई। आँखों में आए पानी को छिपाने के दो ही रास्ते हैं या तो फौरन कुछ पल आँखें मूँद ली जाएँ या फिर खुली आँखों में से आए पानी को तर्जनी के पोर से चिपका दिया जाए।

"क्या तुम कभी शादी नहीं करोगी " राघव ने पूछा।

"क्या तुम करोगे मुझसे शादी, गीता की पुरानी मुस्कराहट और गहरी हो गई थी।

"क्या, क्या कहा तुमने, तुम मुझसे मज़ाक कर रही हो" राघव की आँखों में चमक आ गई थी।

"मैं गंभीर हूँ शायद तुम औरतों के अंतर्मन को नहीं जानते, वह पुरुषों की तरह नहीं सोचती" गीता भावुक हो गई।

"मैं समझा नहीं " राघव ने गीता को कुरेदना चाहा।

"जब तुम बचपन में दीदी के लिए सब काम करते थे और मुझे छोटी समझ कर डाँट देते थे तो मुझे बहुत बुरा लगता था। मैं भगवान के साथ लड़ती थी कि मैं बड़ी बहन क्यों नहीं बनी, जैसे राम और लक्ष्मण के संवाद में एक बार लक्ष्मण ने कहा था इस जन्म में तो मैं छोटा भाई हूँ ना इसलिए ....और कहते हैं पुनर्जन्म के बाद जब राम जी कृष्ण के रूप में अवतरित हुए तब बलराम जो कि पहले लक्ष्मण थे, बड़े भाई के रूप में उन्हें मिले थे। फिर भी कृष्ण छोटे होकर भी बलराम से अड़ जाते थे और मैं छोटी होकर अड़ नहीं सकी। शादी के बाद वह अपने पति के साथ परिवार के साथ संतुष्ट है फिर भी तुम अपनी स्मृति में उसे अभी तक बसाए हुए हो। " गीता बात करते-करते अब रुक गई।

राघव समझ गया गीता को चोट लगी है। उसने उसे समझाना चाहा " तुमने कहा, तुम भगवान के साथ लड़ती हो। जानती हो भगवान की परिभाषा" भगवान एक रस है, परम आनंद की अनुभूति का रस, जिसे जीभ से चखा नहीं जा सकता। इस आनंद को आत्मा से महसूस किया जा सकता है और आज मैं तुम्हें उस आत्मा की अनुभूति से एक बात बता देना चाहता हूँ, " मैं तुम्हें ही

याद करता था, तुम ही मेरा पहला प्रेम थी, तुम्हारी दीदी से प्रेम की बात तुम्हें जानने के लिए ही की थी मैंने ...

और सोचो यदि तुम्हें मेरे प्रेम का पता नहीं होता या मेरे प्यार पर भरोसा नहीं होता तो क्या इतने वर्षों के बाद तुम मुझे ढूँढते हुए मेरे घर आती और मुझसे विवाह के लिए प्रश्न करती .....सोचो सोचो जरा । " राघव ने अपनी निगाहें गीता के चेहरे पर टिका दी ।

" शायद तुम सही कहते हो । " गीता ने जल्दी स्वीकार कर लिया ।

"जानती हो गीता, अपने आप को प्रकट करना, अपनी आत्मा को प्रकट करना है । मैंने तुम्हें आज वास्तविकता बता दी है । एक बात और कह दूँ अगर तुम मुझसे शादी करोगी तो विश्वास रखो मैंने कभी किसी और के साथ प्यार नहीं किया । जब मेरी पत्नी गई उसके जाने का मुझे जरा भी दुख नहीं हुआ, हां बच्चों के लिए पहले काफी व्याकुल रहा । अब तुम्हारे मिलने के बाद आज के बाद मैं शोलीदा नहीं रहूँगा । " राघव ने हँसकर गीता की ओर देखा और अपनी बाईं आँख दबा दी । बहादुर पर्दे के पीछे से सारी बातों को छिपा हुआ देख रहा था । बहादुर ने भगवान से मन ही मन प्रार्थना की "राघव साहब और मेम साहब एक साथ रहें तो कितना अच्छा हो । "

गीता ने राघव की ओर देखकर पूछा " इन गेंदों का क्या करोगे । "

" तुम चाहोगी, तो मेरे होने वाले बच्चे इनसे खेलेंगे । "राघव अब अचानक शरारत के मूड में आ गया था ।

बहादुर सोचने लगा, दीन दुनिया से बेखबर, हमेशा दुखी रहने वाले राघव साहब को विषाद की अचानक एक अचूक दवा मिल गई है । भगवान करे यह दवा उनके पास हमेशा रहे । भगवान सबको सुख दे, खुशी दे । " बहादुर ने आंखें मूंदकर भगवान से प्रार्थना की । "अब मैं चलती हूँ, माँ को मिलना है ।

उन्हें तुम्हारे बारे में बताना है और...." गीता उठ कर खड़ी हो गई ।

"तुम ऐसे कैसे जा सकती हो, थोड़ा रुको, कहकर राघव अंदर कमरे में चला गया । बहादुर गीता के पास जाकर उन्हें स्नेह से देखने लगा ।

राघव गीता के पास आया तो उसके हाथ में अब एक लंबी सोने की जंजीर थी जिसमें भगवान शिव की सुंदर प्रतिमा थी । उसने बिना रुके वह जंजीर गीता के गले में डाल दी और कहा मैंने तो तुमसे शादी कर ली अब तुम जानो । "गीता ने शिव की मूर्ति को माथे से लगाया फिर चूमा और कहा" मैं चलती हूँ, जल्दी माँ को लेकर आऊँगी । "

राघव से रहा न गया और वह भावुक हो गया "मैं भी तुम्हारे साथ ही चल रहा हूँ, अब मैं एक पल भी अकेला नहीं रहूँगा । निर्णय लेने में देरी और अभिव्यक्ति की कमी के कारण मैं पहले ही बहुत पछता चुका हूँ। यह कहकर राघव ने बहादुर को कहा- "घर का ध्यान रखना ।"

राघव और गीता दोनों कार की पीछे की सीट पर बैठ गए । बैठते ही गीता ने ड्राइवर को कहा" वसंत कुंज चलो" । राघव ने अपने बाएँ हाथ में गीता का दाया हाथ जकड़ लिया । गीता ने अपना सर राघव के कंधे पर टिका दिया । गाड़ी हवा से बातें करती खुशियों की ओर भाग रही थी ।

संपर्क : ई - 51, दीप विहार, रोहिणी, सेक्टर 24,  
दिल्ली -110042, मो. 93133 01370

राजल



सागर सियालकोटी, लुधियाना, मो. 98768 65957



पुराने लोग रिश्तों को निभाना जानते थे  
बहन भाई वो रूठों को मनाना जानते थे

गुजारा आजकल करना बड़ा मुश्किल हुआ है  
वो अनपढ़ थे मगर कुनबा चलाना जानते थे

कभी तकरार रिश्तों में कभी शिकवे शिकायत  
वो दानिश लोग रंजिश को मिटाना जानते थे।

सभी अंकल सभी इनलॉ ये अंग्रेजी है 'सागर'  
बहू बेटी की इज़्जत को बनाना जानते थे।





डॉ. एस. कश्मीरी

वो शाम, वो शहर, जिसे सजाने की सारी तैयारियाँ लगभग पूरी हो चुकी थीं। शहर के मेन चौराहों को रंग बिरंगी लाइटों से सजाया जा रहा था। सब कुछ बहुत अच्छा लग रहा था, पर मेरा दिल थोड़ा उदास था। न जाने क्यों ये उस जाने पहचाने किसी अपने को इस शहर में तलाश कर रहा था जिसने आज ही के दिन ठीक एक

साल पहले आज शाम ठीक सात बजे यहां आने का वादा किया था।

मेरा दिल बैठा जा रहा था क्योंकि रात के नौ बज चुके थे। सर्द हवा पूरे शरीर को चीरे जा रही थी। लोगों की भीड़ कम होती जा रही थी। दुकानें बंद होनी शुरू हो गई थीं। पर मैं अब भी इस विदेशी शहर के इस मेन चौराहे के एक कोने में खड़ा उसकी राह देखे जा रहा था। जब भी कोई कार या बस मेरे पास से गुजरती या रूकती, लगता वो उतरेगी। पर हर बार मैं गलत होता।

हार के मेरे कदमों ने अभी चलना शुरू ही किया था कि एक यंग मैन मेरी तरफ दौड़ता हुआ आया। आते ही उसने मेरा नाम पुकारा। मेरे हां में सिर हिलाते ही वह मुझे एक लिफाफा थमा आगे बढ़ गया।

मैंने उसे जाते हुए उसके दिए लिफाफे को खोला। उस में एक पत्र था। सबसे पहले मेरी नज़र पत्र के सबसे नीचे लिखे नाम पे गई। नाम उसी का था पर नाम के नीचे की डेट तीन महीने पहले की देख मैं थोड़ा घबराया।

मैंने मन ही मन पत्र पढ़ना शुरू किया "मैं जानती हूँ तुम मेरा इंतजार कर रहे होंगे, पर मैं तुम से मिल नहीं पाऊँगी। मैं यहाँ से दूर... बहुत दूर जा रही हूँ, जहाँ से आज तक लौट के कोई नहीं आया। हमारी मुलाकात कब प्रेम में तब्दील हुई, नहीं जानती पर तुम मेरी अंतिम सांस तक इस दिल के करीब रहोगे। तुम्हारा पता मेरे पास नहीं था पर मुझे ये पता था तुम मुझसे मिलने जरूर आओगे वो भी आज ही के दिन। पर मैं बदनसीब तुम से मिल नहीं पाऊँगी। हो सके तो अपना नया जीवन बसाना। मृत्यु फक्त मृत्यु नहीं जीवन का प्रारंभ है। इस क्रिसमस को पहले की तरह खुशियों से मनाना। तुम खुश होंगे तो मैं तुम्हें आसमां से देख रही हूँगी। तुम्हें मेरी कसम... हमेशा खुश रहना...। तुम्हारी...।

तेरे को कहा था ना, अँगूठों की छाप ठीक नहीं आ रही। दोबारा आधार बनवा। अगला... (कहते हुए शर्मा जी मशीन पर अगले व्यक्ति का अँगूठा लगवाने लगे)

वह बुढ़िया जिसके मन में अभी कुछ क्षण पूर्व तक सरकारी राशन, तेल, चीनी पाने की चाह थी, हाथों से रेत भांति फिसल खाक हो गई। वह सीधी बैंक जा पहुंची। सोचा पेंशन तो है उसी के दम से दीवाली निकल जायेगी। बूढ़े पति को दवाई दिलवानी है, खत्म हो गई चीजे लानी है। सोचती सोचती कब बैंक आ पहुंची। पता ही नहीं चला।

लाइन में लग अपनी बारी का इंतजार करने लगी। जैसे जैसे आगे से लोग हटते जाते, बुढ़िया की धड़कन बढ़ती जाती के किसी तरह मशीन पर अँगूठे की छाप आ जाए। उसने पाया के अब वो सबसे आगे थी। बैंक कर्मि ने उसके कागज ले कम्प्यूटर में कुछ खंगाला। बोला - अँगूठा लगाओ।

बुढ़िया ने अँगूठा अच्छे से अपने सर से रगड़ मशीन पर रख। कर्मि की सूत को निहारने लगी। मानो उसकी सूत के हाव भाव ही उसमें जान फूकेगें।

कर्मि ने कहा- थोड़ा दबाइए।

बुढ़िया ने अँगूठा दबाया। पर बात ना बनी।

बैंक कर्मि ने कहा - आधार कार्ड दोबारा बनवाइए।

बेटे मेरा फोटो, पहचान पत्र तो है।

नहीं... ऐसा नहीं होता। दोबारा आधार कार्ड बनवा के आइए।

मरा सा मन लिए बुढ़िया बैंक से बाहर चल दी।

आज छोटी दीवाली, जब में फूटी कौड़ी तक नहीं। घर में चारपाई पे पड़ा बूढ़ा उसकी राह देख रहा होगा। बे-औलद होने का दुःख क्या पहले ही कम था। बाहर जाते हुए लोगों की बातों के स्वर उसके कानों में जबरदस्ती घुसे जा रहे थे।

"कितनी अच्छी सरकार है। त्योहार पर पेंशन, राशन दे दिया। हम तो अबकी बार इसे ही वोट देंगे।"

दूसरे भी उसकी हां में हां मिलाए जा रहे थे। पर वो बुढ़िया यही सोचे जा रही थी के इतना कुछ होने पर भी ये शोषण, ये ख्वाम खा का दर्द चिंता क्यों है? क्या एक अँगूठे की छाप न आने से उसकी सारी पहचान मिट गई। क्या गाँव में राशन बाटने वाला उसे नहीं जानता। क्या बैंक कर्मि उसके अन्य कागजों से पहचान नहीं कर सकता।

ये सब सोचते-सोचते वो घर में हारी थकी लौट आई। घर में घुसते ही उसे देख बूढ़े का पहला वाक्य यही था... चलें दवाई लेने।

बुढ़िया चुप थी। बूढ़ा बार-बार खांसते हुए उससे यही पूछे जा रहा था पर बुढ़िया के पास उसके पूछे प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं था।

डॉ. एस. कश्मीरी, प्रवक्ता: हिंदी, दिल्ली शिक्षा विभाग  
म.स. 1911, सेक्टर 12, सोनीपत, हरियाणा, मो. 9015911691



धनसिंह खोबा 'सुधाकर'

## प्रेम

बात प्रेम की सब करें, किन्तु न करते प्रेम ।  
होता सच्चे प्रेम से, नित ही जीवन-क्षेम ॥

बिना प्रेम के लोक में, जीवन रहता रिक्त ।  
वही जीतता क्रोध जो, रहे प्रेम से सिक्त ॥

ईश नाम है प्रेम का, पूजा दूजा नाम ।  
कीजे पावन प्रेम से, सिद्ध सकल निज काम ॥

ढाई अक्षर 'प्रेम' की परिभाषा ना कोय ।  
मात्र समर्पण प्रेम में, अभिलाषा ना होय ॥

रूप रंग ना प्रेम का, ना कोई आयाम ।  
प्रेम है श्रद्धा भाव ही, आठों याम ललाम ॥

सत्य - साधना प्रेम है, और समर्पण - गीत ।  
वही मीत सबका बने, जिसके दिल में प्रीत ॥

प्रेम एक सौगात है, जिसका धर्म न जात ।  
कभी न होता प्रेम में, कोई भी उत्पात ॥

अद्भुत धन है प्रेम का, घटता नहीं घटाय ।  
जितना उसको बाँटते, और अधिक बढ़ जाय ॥

सच्चा सौदा प्रेम का, कभी न हो नुकसान ।  
लाभ मिले जो प्रेम से, उसका अप्रतिम मान ॥

जिसका होता तोल है, उसका होता मोल ।  
प्रेम न तुलता है कभी, इसीलिए अनमोल ॥

धागा सच्चे प्रेम का, चाहे हो कमजोर ।  
तोड़ न पाये वीर भी, भले लगाये जोर ॥

अपने मुख से प्यार के, जो बोले दो बोल ।  
ऐसे बोलों में रहे, खास मिठास अतोला ॥

जीवन के इस युद्ध में, उसकी होती जीत ।  
शत्रु-भाव जो त्यागकर, सबसे करता प्रीत ॥

प्रेम-रंग संसार में, एक अनूठा रंग ।  
एक बार चढ़ जाय फिर, हो न रंग में भंग ॥

जहाँ मिले सद्भाव ही, रहे वहाँ ही प्रीत ।  
प्रेम-भाव से शत्रु भी, लगता प्यारा मीत ॥

प्रेम-रूप हथियार से, काटो नफ़रत बैर ।  
करो सभी से प्रेम बस, सोचो सबकी खैर ॥

त्याग प्रेम का मूल है, जिससे होता क्षेम ।  
बुद्धि तर्क करती मगर, दिल करता है प्रेम ॥

ज्योति प्रखर है प्रेम की, हरदम करे सुदीप्त ।  
जीवन का पोषण करे, रखे सतत प्रदीप्त ॥

प्रेम सफल होता नहीं, अभिलाषा के साथ ।  
स्वार्थ पूर्ण यदि प्रेम हो, कुछ ना आवे हाथ ॥

हर कोई अपना लगे, प्रेम भाव से यार ।  
दुख में सुखदायक लगे, प्रेमी का व्यवहार ॥

प्रेम है जादू की छड़ी, जिसका प्रबल प्रभाव ।  
बढ़े निकटता प्रेम से घटता मगर दुराव ॥

करे मनीषा का दमन, जीवन में विद्वेष ।  
प्रेम हरे त्रय-ताप को, द्वेष रहे नहीं लेश ॥

प्रेम रहा है प्रेम का, एकमात्र प्रतिदान ।  
इसीलिए है प्रेम का, सबसे उच्च स्थान ॥

सीखो केवल शलभ से, सुलभ प्रेम की रीत ।  
त्याग समर्पण से सदा, सम्भव होती प्रीत ॥

प्रेमी को नैराश्य भी लगे प्रेम में आस ।  
पतझर भी लगता उसे, जैसे हो मधुमास ॥

कभी न होता प्रेम में, दूरी का एहसास ।  
प्रिय होवे यदि दूर भी, फिर भी लगता पास ॥

दूर चकोरी चाँद से, रहती प्रेम-विभोर ।  
डूब चन्द्र के प्रेम में, तकती नभ की ओर ॥

प्रेम अगन में जो तपे, हो कुन्दन-सा रूप ।  
प्रेम-गंग के नीर से, होता रूप अनूप ॥

सबको भाये प्रेम तो, होवे रंक कि भूप ।  
लगे छाँव सी प्रेम में, तपती भी हर धूप ॥

दुखिया को जब प्रेम का, मिलता है उपहार ।  
अपने दुख वह भूलता, पाता खुशी अपार ॥

प्रेम-भाव जिसमें रहे, उसमें हो अपनत्व ।  
उसके सद्‌व्यवहार में, रहें ईश का तत्व ॥

अनजाना भी प्रेम में, लगता मीत समान ।  
प्रेमी से मिलता उसे, यथा योग्य सम्मान ॥

लोग यदि संसार में, बने में, बने प्रेम-अवतार ।  
धरती पर बैकुंठ हो, विश्व बने परिवार ॥

जब हो श्रद्धा प्रेम में, उस पल हर इन्सान ।  
पत्थर में भी देखता, प्रेम-रूप भगवान ॥

प्रेम उसी दिल में रहे, जिसमें हो सद्भाव ।  
दुर्भावों से आपसी, बढ़ता बहुत तनाव ॥

शर्त न होती प्रेम में, कभी न हो प्रतिघात ।  
रहे प्रेम उन्मुक्त ही, बन्धन की ना बात ॥

प्रेम है निर्झर की तरह, झरता है दिन रात ।  
तन-मन को निर्मल करे, और करे उदात्त ॥

प्रेम- दीप दिल में जले रौशन होता गात ।  
दिल की लौ मन से मिले, अन्तर - मध्य प्रभात ॥

सभी प्रेम की नजर में, होते एक समान ।  
हो चाहे छोटा बड़ा, अनपढ़ या विद्वान ॥

होती कभी न प्रेम में, दुर्भाषा कीबात ।  
प्रेम करे प्रतिकूल भी, हितकर सब हालात ॥

सब जीवों में श्रेष्ठतम, मनुज- जीव को जान ।  
प्रेम-भाव को व्यक्ति के, समझ ईश-वरदान ॥

काव्य-कृति को करे सरस, जैसे कोई छन्दा  
जीवन को सुरभित करे, प्रेम-रूप मकरंद ॥

हर प्रेमी को प्रेम से मिले दिव्य आनन्द ।  
अन्तर में बढ़ती रहे, अनुपम सुखद सुगंध ॥

कोई भाषा प्रेम की, होती नहीं विशेष ।  
प्रेम मूक होता मगर, मुखर प्रेम संदेश ॥

शक्ति अलौकिक प्रेम की, करे व्यक्ति को वीर ।  
प्रेमी बनता साहसी, बने धीर गम्भीर ॥

कभी न होता प्रेम में, कोई भी व्यवधान ।  
प्रेमी के आनन्द का, हो न सके अनुमान ॥

प्रेमी अपने प्रेम का, नहीं करे उद्धोष ।  
हर प्रेमी को प्रेम में मिलता है संतोष ॥

मीरा भी विष पी गई, होकर प्रेम-विभोर ।  
राधा के चितचोर थे प्यारे नन्दकिशोर ॥

33-गंगोत्री एपार्टमेंट, विकासपुरी, नई दिल्ली 110018

मो. 9810765061

# बस काफ़ी है

नहीं है ज़रूरत  
वैलेंटाइन दिवस मनाने की  
क्योंकि  
बस काफ़ी है  
तुम्हारा वही रेशमी स्कार्फ  
जो भूल कर या जान बूझ कर  
तुम छोड़ गए थे कुर्सी पर  
आती है उसी में से  
तुम्हारी सुगंध  
जो मेरे अंदर बाहर समाई रहती है।

और वह किताब  
जिसमे तुम ने रखा था  
किसी और का  
किसी को लिखा  
प्रेम पत्र !  
क्या वही सब  
तुम कहना चाहते थे तुम  
और  
वह गीत  
" मैं तुमसे वह नहीं कह पाऊँगा  
जो कहना चाहता हूँ "  
जिसका जिक्र तुम ने किया था  
उस दिन  
बस काफ़ी है !



उमा त्रिलोक  
मोहाली, पंजाब, मो. 98111 56310



प्रभा कश्यप डोगरा  
पंचकूला, मो. 98725 77538

## आ गया वसंत

वसंत आया इस बरस  
बनाकर भेस इक मनियार का  
झोली भर कर लाया है  
लाल पीले रंगों की  
फूलों वाली चिमटियाँ  
सजाने धरा के  
हरित-श्यामल घनियारे केश  
हरियाई है धरा सुंदरी  
पहन घाघरा पीली

सरसों की छींटों का  
है महक उठी नीलाभ चूनर  
दमक रहा माथे  
पर सूरज का टीका  
अमराई में खनक उठी,  
पपीहे कोकिल की गूंज  
पग की झांझर सी  
चहुँओर हो रहा  
सरजन - नर्तन  
हैं चलते लास्य  
और तांडव में संग संग  
शिव शक्ति के पग चहुं दिसी  
लगता जीवन ज्यों हो उत्सव ।

# अभिनव इमरोज़ कहानी प्रतियोगिता – 2025

सृजन सर्जक की साधना है। इस साधना को प्रोत्साहित करने के लिए सन् 2025 से अभिनव इमरोज़ पत्रिका 'अभिनव इमरोज़ कहानी प्रतियोगिता – 2025' की शुरुआत करने जा रही है।

इस प्रतियोगिता का निर्णय सन् 2025 में जनवरी माह से दिसम्बर माह तक अभिनव इमरोज़ में प्रकाशित कहानियों में से चयन करके की जायेगी, जिसके लिए लेखक को पुरस्कार स्वरूप 11000/- ₹. की धनराशि तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किया जायेगा।

## आवश्यक निर्देश :

1. यह पुरस्कार अभिनव इमरोज़ के विशेषांकों को छोड़कर सामान्य अंक में प्रकाशित कहानियों में से किसी एक उत्कृष्ट कहानी को प्रदान किया जायेगा।
2. यह पुरस्कार अभिनव इमरोज़ में प्रकाशित पूर्णतः मौलिक एवं अप्रकाशित कहानी को ही प्रदान की जायेगी, जिसके लिए संपादक द्वारा प्रेषित फार्म में लेखक को स्वप्रमाण भी देना होगा।
3. प्रतियोगिता का परिणाम घोषित होने तक कहानीकार को कहानी अन्यत्र किसी पत्रिका, समाचार पत्र तथा डिजीटल प्लेटफार्म आदि पर प्रकाशित करने से बचना होगा।
4. कहानियों की शब्द-सीमा 2500 से 5000 तक होना चाहिए।
5. पुरस्कार के लिए उम्र की कोई तय सीमा नहीं है।
6. कहानियों का चयन निर्णायक-मंडल द्वारा किया जायेगा तथा वही मान्य होगा।
7. निर्णायक मंडल का नाम पुरस्कार वितरण तक गुप्त रखा जायेगा।
8. कहानियों के चयन के लिए संपादक पर किसी प्रकार का दबाव सर्वथा वर्जित रहेगा।
9. पुरस्कार वितरण साल के अंत में डाक द्वारा या भौतिक रूप से प्रदान किया जा सकता है, जिसका एकमात्र निर्णय संपादक पर रहेगा।

## 10. अपनी रचना के साथ स्वप्रमाण अवश्य भेजें।

प्रतियोगिता आयोजनकर्ता : देवेन्द्र कुमार बहल, एकता अमित व्यास, डॉ. रेनू यादव

संपादक – देवेन्द्र कुमार बहल, अभिनव इमरोज़, साहित्य नंदिनी

संपादकीय कार्यालय : बी 3/3223 वसंत कुंज, नई दिल्ली - 110070

ईमेल : abhinavimroz@gmail.com, मो. : 9910497972

## स्वप्रमाण पत्र

मैं \_\_\_\_\_, निवासी \_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_ शहर \_\_\_\_\_ पिन कोड \_\_\_\_\_

प्रमाणित करता/करती हूँ कि अभिनव इमरोज़ कहानी प्रतियोगिता - 2025 के लिए भेजी जा रही कहानी “ \_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_ ” मौलिक एवं अप्रकाशित है।

तिथि :

हस्ताक्षर

मो.